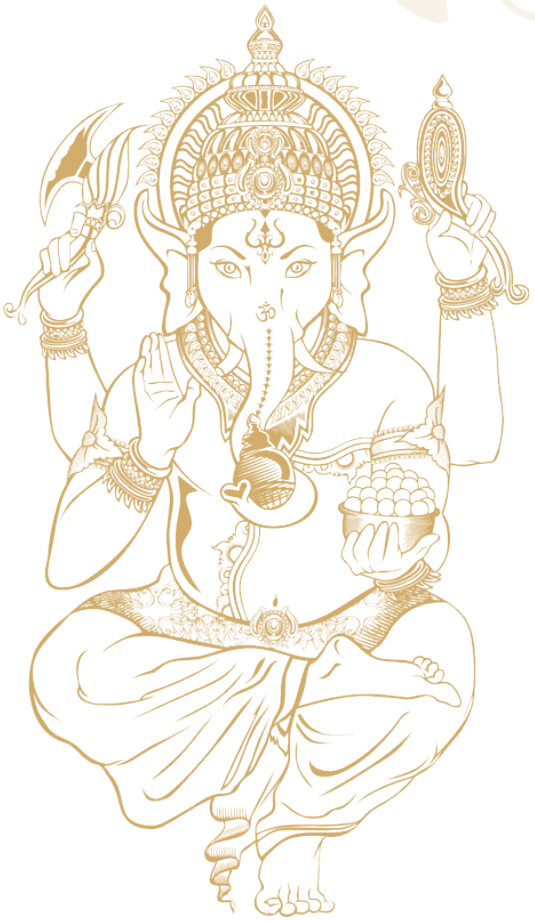

Sahil Sabnis

Model: Web-MatchAnalysisDetailed

Order No: 121285301

कुँडली मिलान का महत्व

वैवाहिक जीवन में अनुकूलता हेतु जन्मकुण्डली मिलान किया जाता है।

इसमें सर्वप्रथम अष्टकूट मिलान किया जाता है। जातक की राशि व नक्षत्र के अनुसार उसका वर्ण, वश्य, तारा, योनि, राशेश, गण, भकूट एवं नाडी का ज्ञान करके वर-वधू के जीवन की अनुकूलता अथवा प्रतिकूलता का निर्णय किया जाता है। वर्ण विचार से कर्म, वश्य विचार से स्वभाव, तारा विचार से भाग्य, योनि विचार व ग्रह मैत्री विचार से पारस्परिक संबध, गण से सामाजिकता, भकूट से जीवन में तालमेल एवं नाड़ी विचार से स्वास्थ्य व सतांन संबधी फल का विचार किया जाता है। इन सभी गुणों को क्रमशः 1 से 8 तक अंक दिये जाते है। इस प्रकार अष्टकूट विचार में कुल 36 गुणों का विचार किया जाता है। जिसमें कम से कम 18 गुणों का होना आवश्यक है। इससे कम गुण वाले विवाह ज्योतिषीय विधान के अनुसार अव्यवहारिक रहते हैं।

अष्टकूट मिलान के साथ मांगलिक दोष का विचार भी अति महत्वपूर्ण माना जाता है। यदि मंगल लग्न कुंडली में 1,4,7,8 एवं 12 वें भाव में स्थित हो तो मंगली दोष होता है। मंगली दोष निवारण के लिए आवश्यक है कि वर-वधू दोनों मंगली न हों या दोनों मंगली हों। शास्त्रों में इनके अलावा भी दोष निवारण के सूत्र दिए गए हैं। इस दोष के निवारण से किसी प्रकार के अमंगल की संभावनाएं कम हो जाती है और वैवाहिक जीवन सुख व शांतिपूर्ण गुजरता है।

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
02/09/1984	जन्म तिथि	27/01/1988
रविवार	दिन	बुधवार
घंटे 09:54:00	जन्म समय	22:20:00 घंटे
घटी 08:45:13	जन्म समय(घटी)	37:44:01 घटी
India	देश	India
Dadar	स्थान	Delhi
19:01:00 उत्तर	अक्षांश	28:39:00 उत्तर
72:51:00 पूर्व	रेखांश	77:13:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:38:36	स्थानिक संस्कार	-00:21:08 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:23:54	सूर्योदय	07:12:23
18:52:12	सूर्यास्त	17:55:21
23:38:20	चित्रपक्षीय अयनांश	23:41:28

तुला	लग्न	कन्या
शुक्र	लग्न लग्नाधिपति	बुध
वृश्चिक	राशि	वृष
मंगल	राशि-स्वामी	शुक्र
अनुराधा	नक्षत्र	कृतिका
शनि	नक्षत्र स्वामी	सूर्य
3	चरण	3
वैधृति	योग	शुक्ल
विष्टि	करण	तैतिल
नू-नूर	जन्म नामाक्षर	उ-उपासना
कन्या	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कुम्भ
विप्र	वर्ण	वैश्य
कीटक	वश्य	चतुष्पाद
मृग	योनि	मेष
देव	गण	राक्षस
मध्य	नाड़ी	अन्त्य
सर्प	वर्ग	गरूड़

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
शनि 5वर्ष 1मा 8दि		04:54:42	तुला	लग्न	कन्या	11:30:59	सूर्य 2वर्ष 5मा 1दि	
शुक्र		16:14:28	सिंह	सूर्य	मक	13:16:42	गुरु	
11/10/2013		13:05:00	वृश्चि	चंद्र	वृष	04:37:10	30/06/2025	
11/10/2033		15:00:09	वृश्चि	मंगल	वृश्चि	19:01:42	30/06/2041	
शुक्र	09/02/2017	08:05:34	सिंह व	बुध	कुंभ	01:43:18	गुरु	18/08/2027
सूर्य	10/02/2018	09:30:14	धनु	गुरु	मीन	29:07:42	शनि	28/02/2030
चन्द्र	11/10/2019	07:33:13	कन्या	शुक्र	कुंभ	20:55:27	बुध	05/06/2032
मंगल	11/12/2020	18:05:01	तुला	शनि	धनु	04:42:01	केतु	12/05/2033
राहु	11/12/2023	07:39:04	वृष	राहु व	मीन	00:39:34	शुक्र	11/01/2036
गुरु	11/08/2026	07:39:04	वृश्चि	केतु व	कन्या	00:39:34	सूर्य	29/10/2036
शनि	11/10/2029	15:59:25	वृश्चि	हर्ष	धनु	05:28:03	चन्द्र	28/02/2038
बुध	11/08/2032	05:01:54	धनु व	नेप	धनु	15:04:21	मंगल	04/02/2039
केतु	11/10/2033	06:29:55	तुला	प्लूटो	तुला	18:47:51	राहु	30/06/2041

व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:38:20 चित्रपक्षीय अयनांश 23:41:28

लग्न-चलित

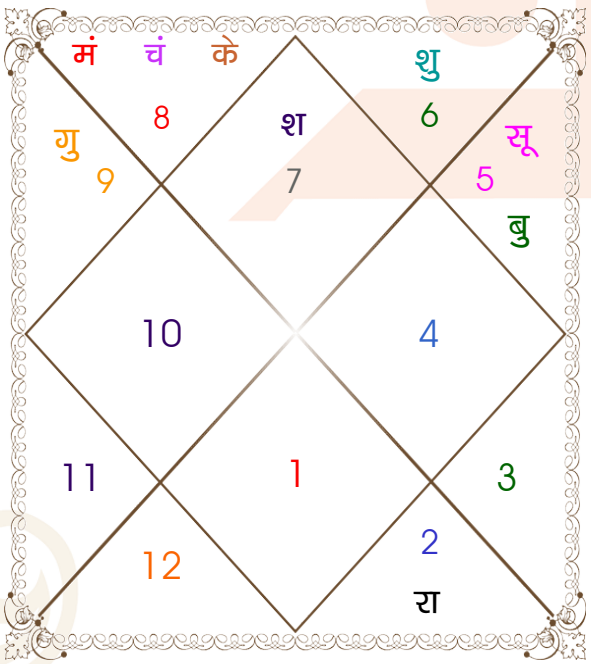

लग्न-चलित

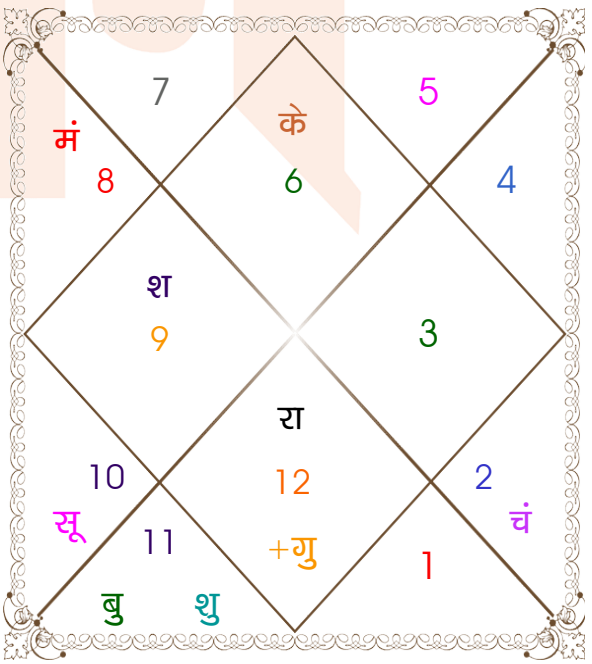

चन्द्र कुंडली

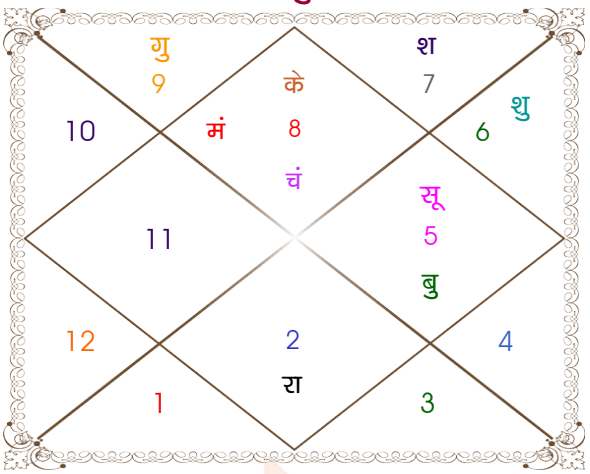

चन्द्र कुंडली

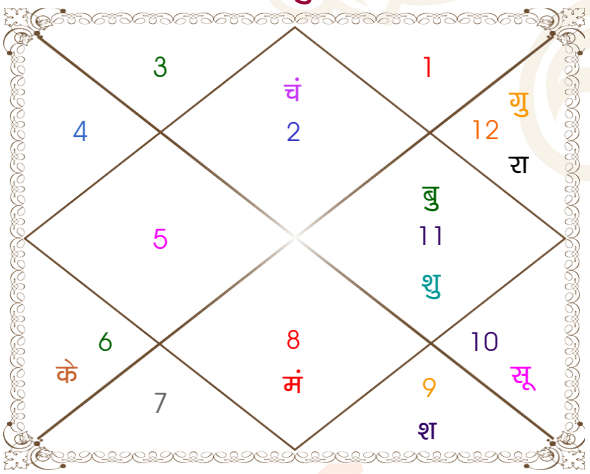

सूर्य कुंडली

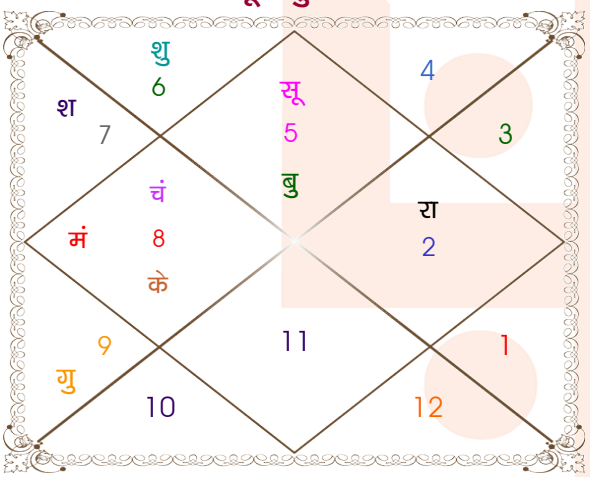

सूर्य कुंडली

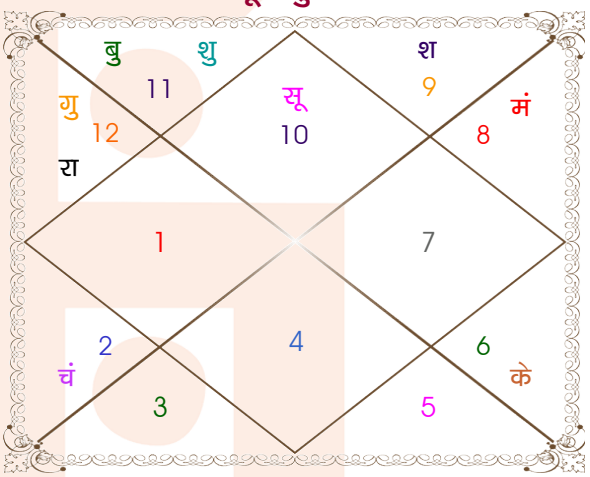

नवमांश कुंडली

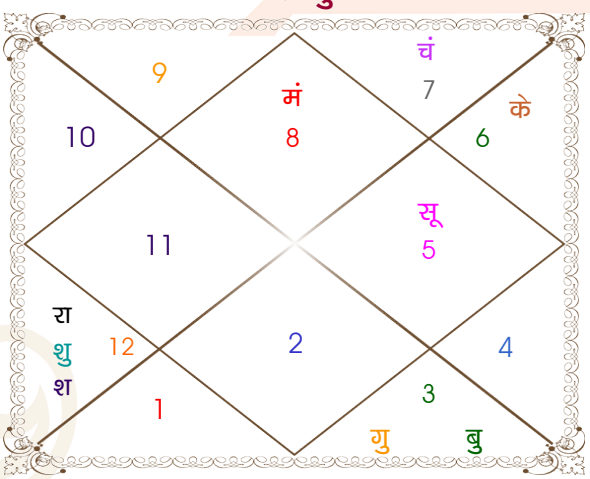

नवमांश कुंडली

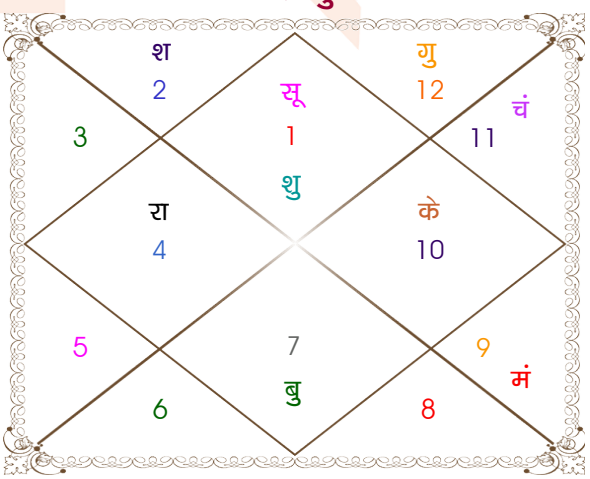

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : शनि 4 वर्ष 11 मास 17 दिन

के.पी. अयनांश : 23:32:24

फॉरच्युना : मकर 01:51:11

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		सिंह	16:20:24	सूर्य	शुक्र	चंद्र	मंगल
चंद्र		वृश्चि	13:10:57	मंगल	शनि	राहु	राहु
मंगल		वृश्चि	15:06:06	मंगल	शनि	गुरु	गुरु
बुध	व	सिंह	08:11:30	सूर्य	केतु	गुरु	बुध
गुरु		धनु	09:36:11	गुरु	केतु	शनि	शनि
शुक्र		कन्या	07:39:09	बुध	सूर्य	केतु	शनि
शनि		तुला	18:10:58	शुक्र	राहु	चंद्र	चंद्र
राहु		वृष	07:45:00	शुक्र	सूर्य	केतु	बुध
केतु		वृश्चि	07:45:00	मंगल	शनि	केतु	राहु
हर्ष		वृश्चि	16:05:21	मंगल	शनि	गुरु	सूर्य
नेप	व	धनु	05:07:50	गुरु	केतु	मंगल	शनि
प्लूटो		तुला	06:35:51	शुक्र	मंगल	चंद्र	शुक्र

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	तुला	05:00:39	शुक्र	मंगल	सूर्य	मंगल
2	वृश्चि	04:21:12	मंगल	शनि	शनि	शुक्र
3	धनु	04:09:35	गुरु	केतु	चंद्र	शनि
4	मक	04:42:33	शनि	सूर्य	शनि	राहु
5	कुंभ	06:03:40	शनि	मंगल	चंद्र	शनि
6	मीन	06:48:44	गुरु	शनि	बुध	गुरु
7	मेष	05:00:39	मंगल	केतु	मंगल	गुरु
8	वृष	04:21:12	शुक्र	सूर्य	शनि	चंद्र
9	मिथु	04:09:35	बुध	मंगल	शुक्र	शनि
10	कर्क	04:42:33	चंद्र	शनि	शनि	चंद्र
11	सिंह	06:03:40	सूर्य	केतु	राहु	गुरु
12	कन्या	06:48:44	बुध	सूर्य	बुध	शनि

भाव कुंडली

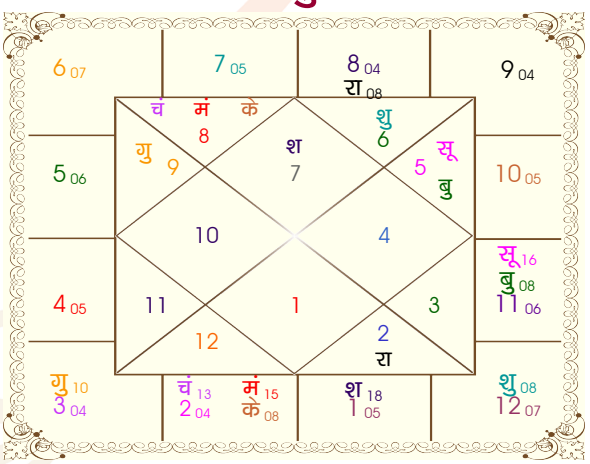

भोग्य दशा काल : सूर्य 2 वर्ष 4 मास 15 दिन

के.पी. अयनांश : 23:35:14

फॉरच्युना : मकर 02:57:41

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		मक	13:22:56	शनि	चंद्र	राहु	शुक्र
चंद्र		वृष	04:43:25	शुक्र	सूर्य	शनि	राहु
मंगल		वृश्चि	19:07:56	मंगल	बुध	केतु	शनि
बुध		कुंभ	01:49:32	शनि	मंगल	बुध	शनि
गुरु		मीन	29:13:56	गुरु	बुध	शनि	चंद्र
शुक्र		कुंभ	21:01:41	शनि	गुरु	गुरु	शुक्र
शनि		धनु	04:48:15	गुरु	केतु	मंगल	मंगल
राहु	व	मीन	00:45:48	गुरु	गुरु	मंगल	गुरु
केतु	व	कन्या	00:45:48	बुध	सूर्य	राहु	शुक्र
हर्ष		धनु	05:34:17	गुरु	केतु	राहु	राहु
नेप		धनु	15:10:35	गुरु	शुक्र	शुक्र	बुध
प्लूटो		तुला	18:54:05	शुक्र	राहु	चंद्र	बुध

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	कन्या	11:37:13	बुध	चंद्र	मंगल	केतु
2	तुला	09:51:07	शुक्र	राहु	गुरु	सूर्य
3	वृश्चि	10:18:16	मंगल	शनि	शुक्र	केतु
4	धनु	11:50:20	गुरु	केतु	बुध	शुक्र
5	मक	13:26:25	शनि	चंद्र	राहु	शुक्र
6	कुंभ	13:51:17	शनि	राहु	बुध	राहु
7	मीन	11:37:13	गुरु	शनि	चंद्र	शनि
8	मेष	09:51:07	मंगल	केतु	शनि	बुध
9	वृष	10:18:16	शुक्र	चंद्र	चंद्र	राहु
10	मिथु	11:50:20	बुध	राहु	शनि	मंगल
11	कर्क	13:26:25	चंद्र	शनि	राहु	गुरु
12	सिंह	13:51:17	सूर्य	शुक्र	शुक्र	चंद्र

भाव कुंडली

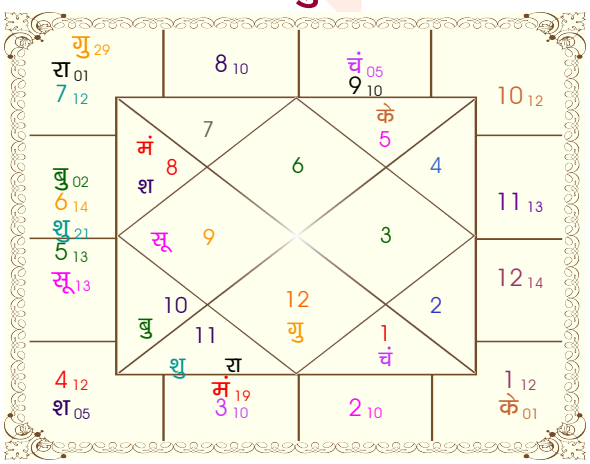

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	सूर्य- चंद्र, मंगल, शुक्र- शनि, केतु,
2	चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, केतु,
3	गुरु,
4	चंद्र- मंगल- शनि- केतु-
5	चंद्र- मंगल- शनि- केतु-
6	गुरु-
7	मंगल-
8	सूर्य- शुक्र- शनि, राहु,
9	बुध-
10	चंद्र-
11	सूर्य, बुध, शुक्र+ राहु+
12	सूर्य, बुध- शुक्र,

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	मंगल- बुध- गुरु-
2	शुक्र-
3	मंगल, बुध+ शनि,
4	सूर्य, चंद्र, गुरु- शुक्र- राहु- केतु,
5	मंगल, बुध, गुरु, शनि-
6	शुक्र, शनि- राहु,
7	गुरु, शुक्र+ राहु+
8	सूर्य, चंद्र, मंगल- बुध-
9	शुक्र-
10	मंगल- बुध- गुरु-
11	सूर्य- चंद्र-
12	सूर्य- चंद्र- शनि, केतु+

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	1- 8- 11, 12,
चंद्र	1, 2, 4- 5- 10-
मंगल	1, 2, 4- 5- 7-
बुध	2, 9- 11, 12-
गुरु	2, 3, 6-
शुक्र	1- 8- 11+ 12,
शनि	1, 4- 5- 8,
राहु	8, 11+
केतु	1, 2, 4- 5-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	4, 8, 11- 12-
चंद्र	4, 8, 11- 12-
मंगल	1- 3, 5, 8- 10-
बुध	1- 3+ 5, 8- 10-
गुरु	1- 4- 5, 7, 10-
शुक्र	2- 4- 6, 7+ 9-
शनि	3, 5- 6- 12,
राहु	4- 6, 7+
केतु	4, 12+

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	मंगल
लग्न राशि स्वामी	शुक्र
राशि नक्षत्र स्वामी	शनि
राशि स्वामी	मंगल
वार स्वामी	सूर्य
लग्न अन्तर स्वामी	सूर्य
राशि अन्तर स्वामी	राहु

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	चन्द्र
लग्न राशि स्वामी	बुध
राशि नक्षत्र स्वामी	सूर्य
राशि स्वामी	शुक्र
वार स्वामी	बुध
लग्न अन्तर स्वामी	मंगल
राशि अन्तर स्वामी	शनि

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

लग्न कुंडली

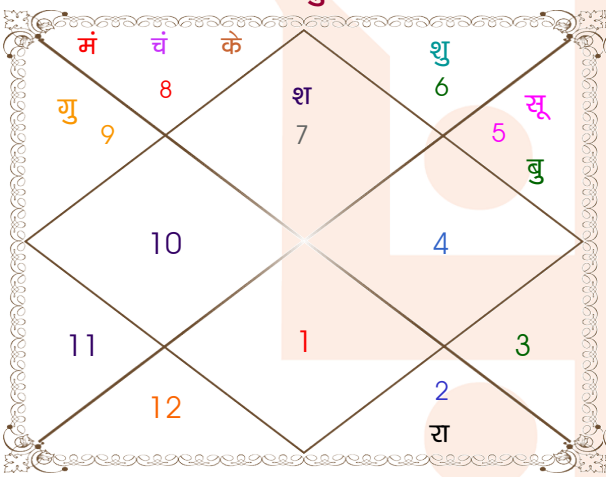

देह विचारः

लग्न कुंडली

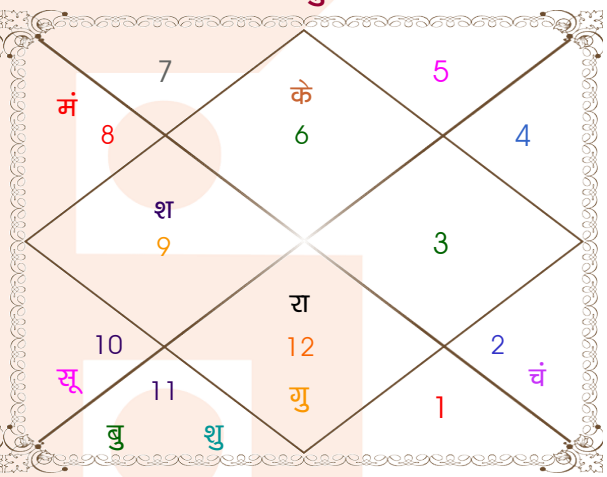

देह विचारः

होरा कुंडली

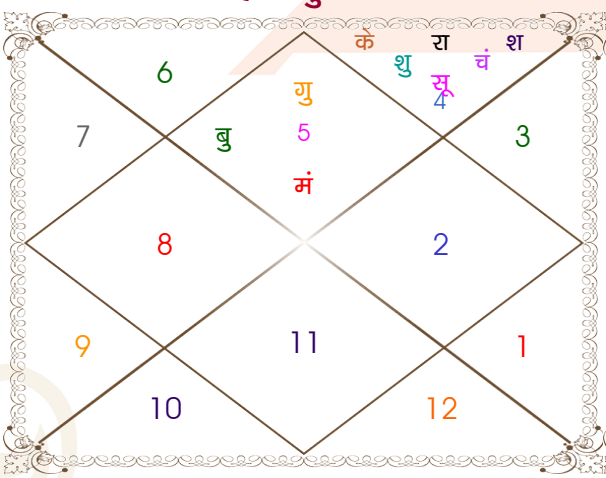

सम्पदाविचारः

होरा कुंडली

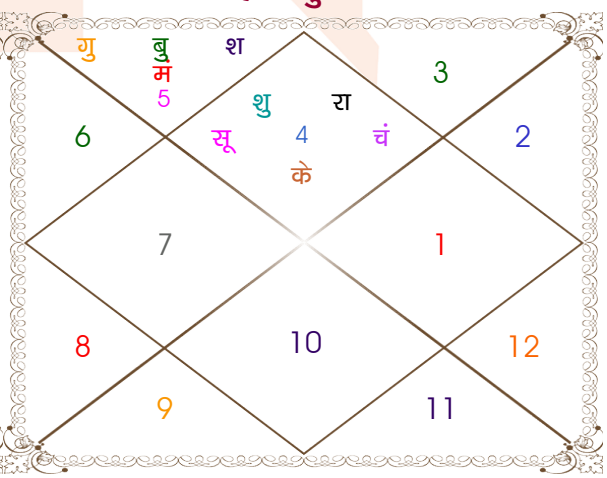

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

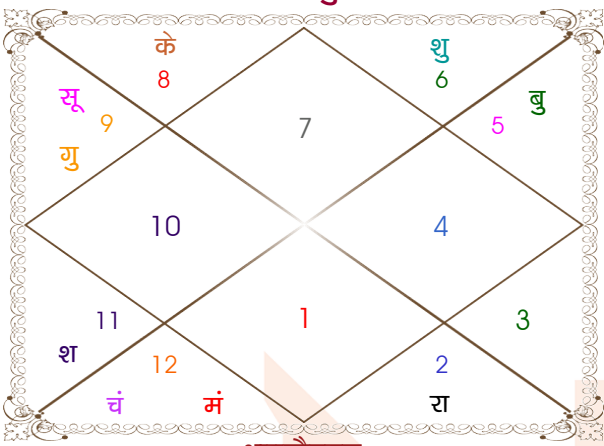

भ्रातृसौख्यम

द्रेष्काण कुंडली

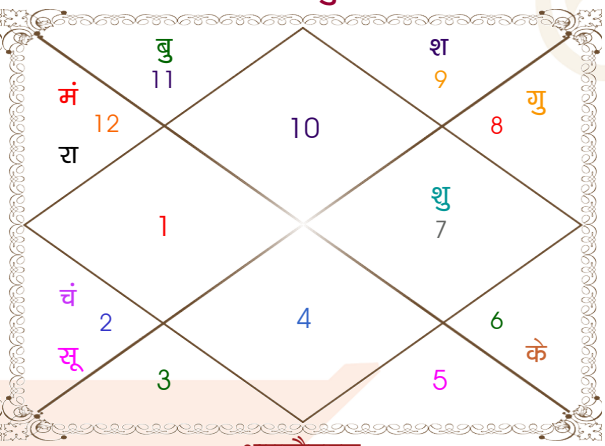

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

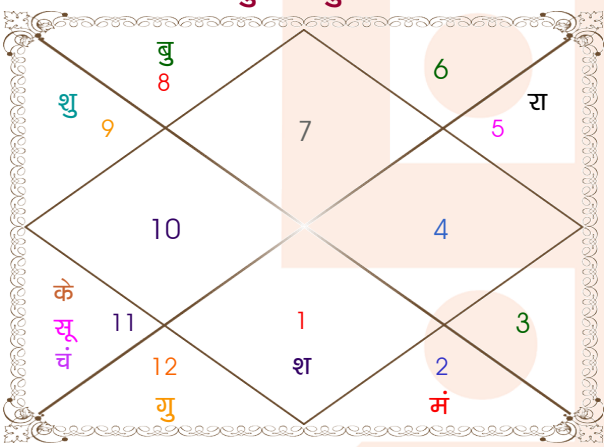

भाग्यविचारः

चतुर्थांश कुंडली

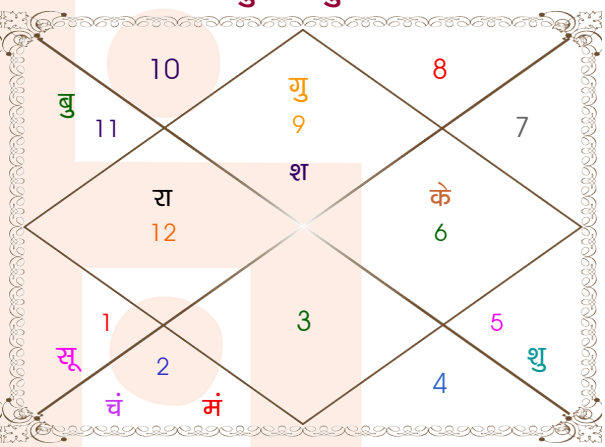

भाग्यविचारः

सप्तमांश कुंडली

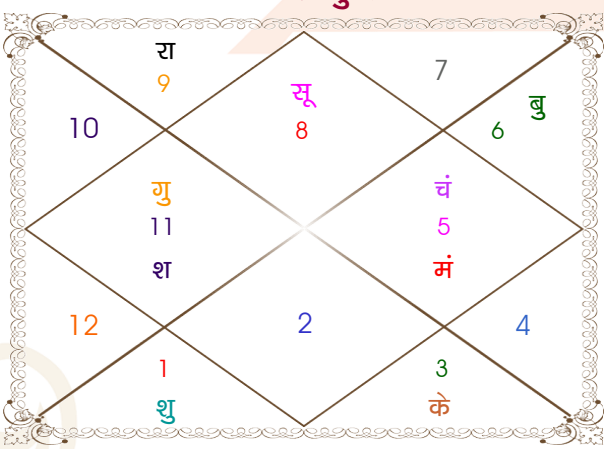

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

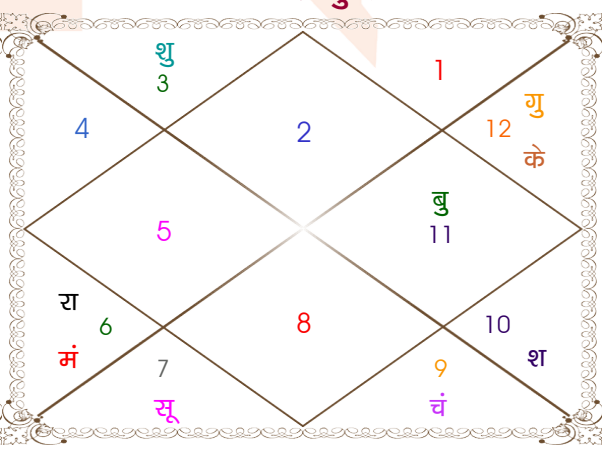

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

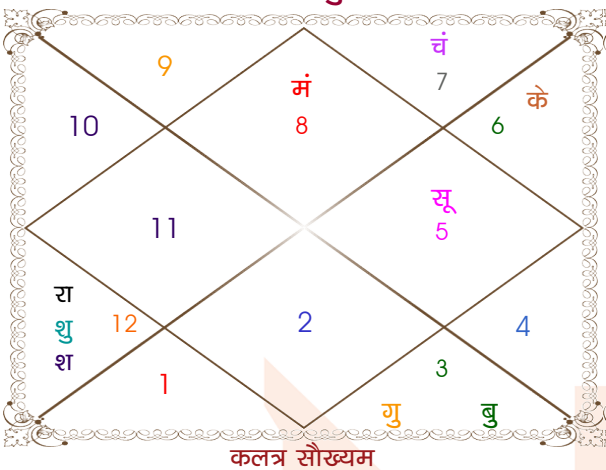

कलत्र सौख्यम

नवमांश कुंडली

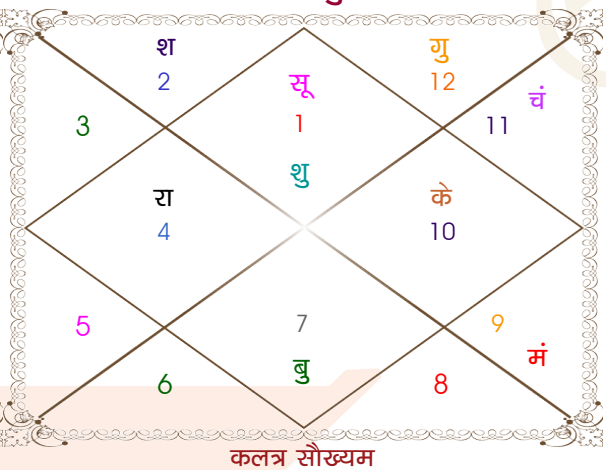

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

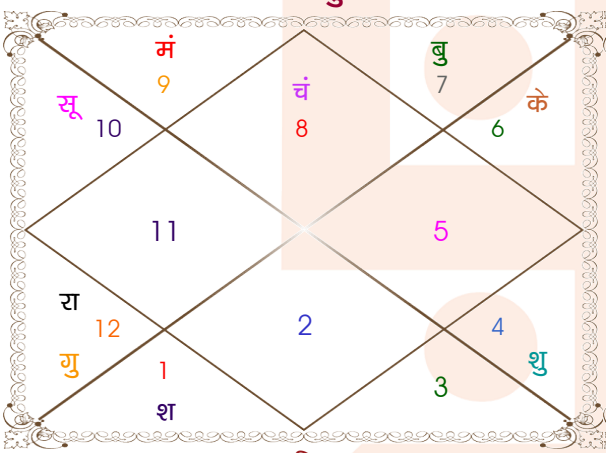

राज्यविचारः

दशमांश कुंडली

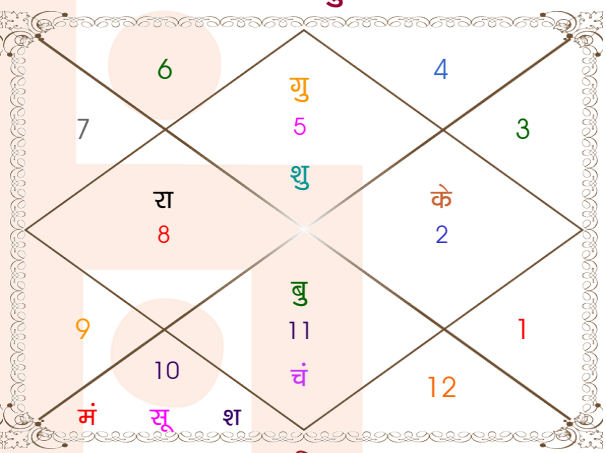

राज्यविचारः

द्वादशांश कुंडली

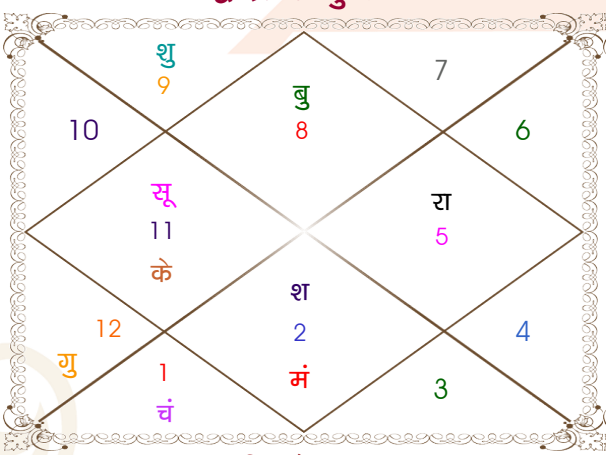

पितृसौख्यम

द्वादशांश कुंडली

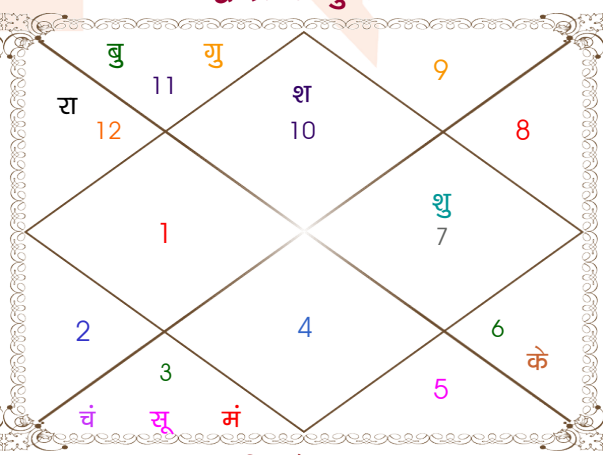

पितृसौख्यम

षोडशवर्ग चक्र

षोडशांश कुंडली

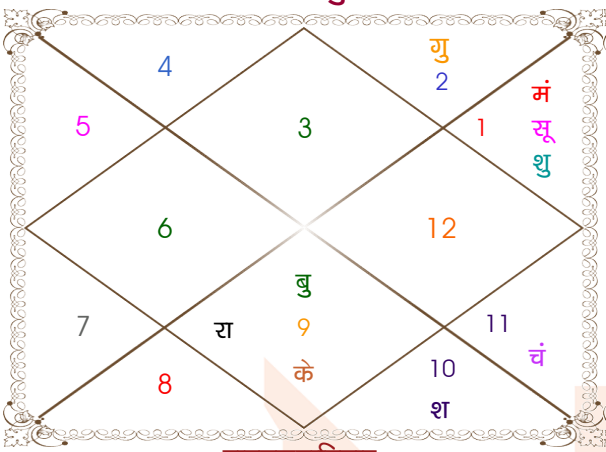

वाहनसुखविचारः

षोडशांश कुंडली

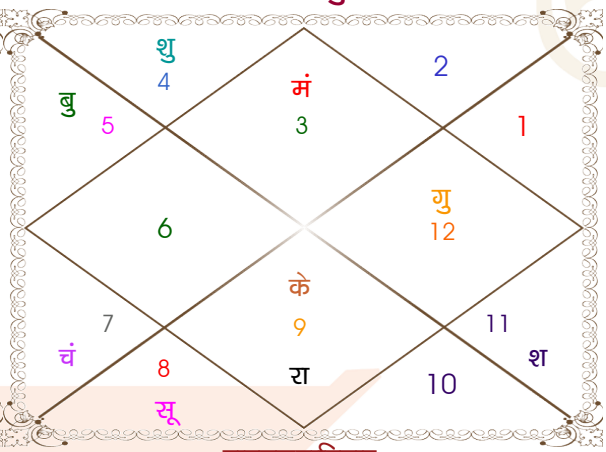

वाहनसुखविचारः

त्रिंशांश कुंडली

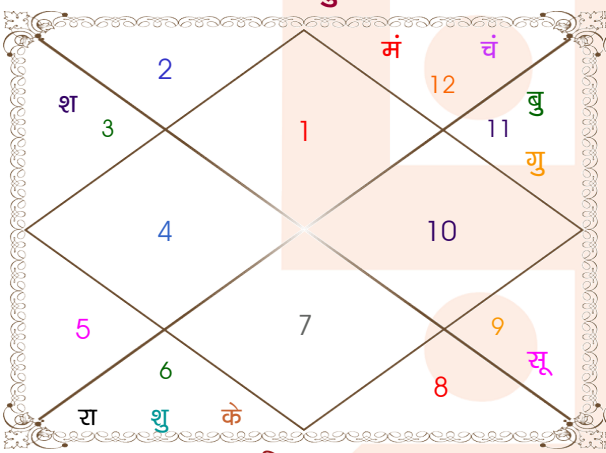

अरिष्टज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

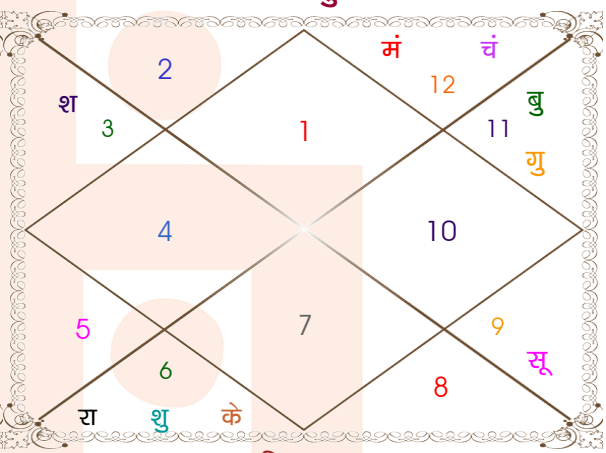

अरिष्टज्ञानम्

षष्ट्यंश कुंडली

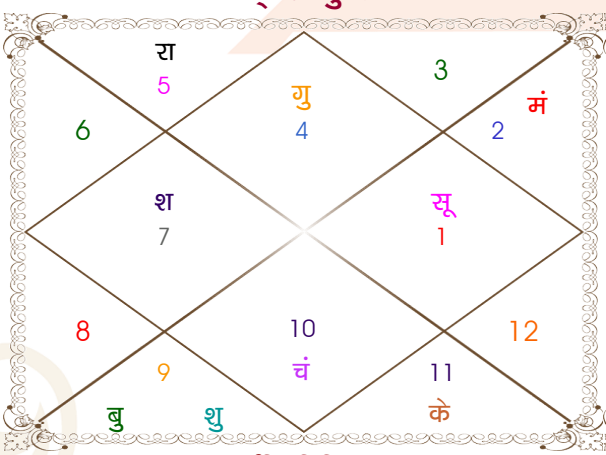

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

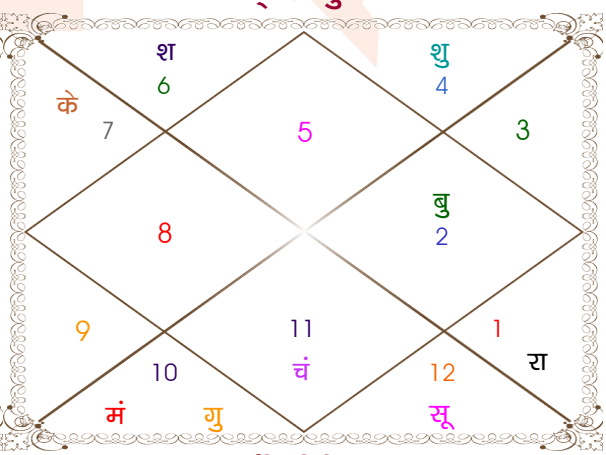

सर्वास्थितिविचारः

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री - Sahil Sabnis

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	अतिमित्र	शत्रु	सम	सम	सम	सम	सम
चंद्र	अतिमित्र	---	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	मित्र	मित्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु
मंगल	अतिमित्र	सम	---	सम	अतिमित्र	मित्र	मित्र	अधिशत्रु	सम
बुध	सम	सम	मित्र	---	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	मित्र	मित्र
गुरु	सम	अतिमित्र	अतिमित्र	अधिशत्रु	---	सम	मित्र	शत्रु	मित्र
शुक्र	सम	सम	मित्र	अतिमित्र	मित्र	---	अतिमित्र	सम	अतिमित्र
शनि	सम	सम	सम	अतिमित्र	मित्र	अतिमित्र	---	सम	सम
राहु	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	मित्र	शत्रु	सम	सम	---	अधिशत्रु
केतु	सम	अधिशत्रु	सम	मित्र	मित्र	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	---

पंचधा मैत्री -

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	सम	अतिमित्र	मित्र	अतिमित्र	सम	सम	सम	अधिशत्रु
चंद्र	सम	---	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	अधिशत्रु
मंगल	अतिमित्र	सम	---	सम	सम	मित्र	मित्र	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	अतिमित्र	सम	मित्र	---	मित्र	सम	मित्र	मित्र	शत्रु
गुरु	अतिमित्र	अतिमित्र	सम	सम	---	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु
शुक्र	सम	सम	मित्र	सम	मित्र	---	अतिमित्र	अतिमित्र	सम
शनि	सम	अधिशत्रु	सम	अतिमित्र	मित्र	अतिमित्र	---	अतिमित्र	सम
राहु	सम	सम	अधिशत्रु	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	अतिमित्र	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	सम	सम	अधिशत्रु	---

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	कुल
शनि	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
गुरु	1	0	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	7
चंद्र	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	4
लग्न	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
कुल	7	4	3	3	3	4	3	3	5	5	4	4	48

सूर्य का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	6
सूर्य	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	8
चंद्र	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	4
मंगल	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	8
बुध	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	0	0	7
गुरु	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	4
शुक्र	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	3
शनि	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	8
कुल	2	1	4	8	6	3	4	5	4	5	4	2	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	कुल
शनि	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	4
गुरु	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	7
मंगल	0	1	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	6
सूर्य	0	0	1	1	1	0	1	1	0	0	0	1	6
शुक्र	1	1	1	0	1	0	1	1	1	0	0	0	7
बुध	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	4
कुल	3	6	5	3	7	2	4	4	4	5	3	3	49

चंद्र का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	4
सूर्य	0	0	1	1	1	0	1	1	0	0	0	1	6
चंद्र	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	1	1	6
मंगल	1	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	7
बुध	1	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	8
गुरु	0	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	1	7
शुक्र	1	1	1	0	1	0	1	1	1	0	0	0	7
शनि	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	4
कुल	4	4	5	4	4	3	5	5	4	2	5	4	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	कुल
शनि	0	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	7
गुरु	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	1	1	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	5
शुक्र	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	4
बुध	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	4
चंद्र	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	3
लग्न	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	5
कुल	2	4	4	2	1	3	4	4	3	4	3	5	39

मंगल का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	5
सूर्य	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	5
चंद्र	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	3
मंगल	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	7
बुध	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	4
गुरु	0	0	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0	4
शुक्र	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	4
शनि	0	0	1	1	1	1	1	0	1	0	0	1	7
कुल	1	2	5	5	3	4	3	3	5	2	3	3	39

बुध का अष्टकवर्ग

	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	कुल
शनि	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
गुरु	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	4
मंगल	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	1	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	6
लग्न	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	7
कुल	5	3	5	5	5	5	2	1	5	6	5	7	54

बुध का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	7
सूर्य	0	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	5
चंद्र	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	6
मंगल	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	8
बुध	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
गुरु	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	4
शुक्र	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	8
शनि	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	8
कुल	3	3	7	4	4	5	6	3	7	3	6	3	54

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

गुरु का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृश्चि	कुल
शनि	1	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	7
सूर्य	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	1	1	9
शुक्र	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	1	0	6
बुध	1	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	1	8
चंद्र	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	0	5
लग्न	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	9
कुल	5	4	6	5	3	5	6	4	4	6	4	4	56

गुरु का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	9
सूर्य	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	1	9
चंद्र	0	0	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	5
मंगल	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	7
बुध	0	1	1	1	0	0	1	1	1	0	1	1	8
गुरु	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	8
शुक्र	0	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	1	6
शनि	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	0	4
कुल	3	5	6	4	2	5	5	6	5	4	5	6	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कुल
शनि	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	1	1	7
गुरु	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	5
मंगल	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	1	0	6
सूर्य	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	0	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	5
चंद्र	1	1	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	9
लग्न	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	8
कुल	4	6	3	5	6	4	2	4	3	6	6	3	52

शुक्र का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	1	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	8
सूर्य	0	0	0	0	1	0	0	1	1	0	0	0	3
चंद्र	1	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	9
मंगल	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	6
बुध	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	0	5
गुरु	0	0	0	1	0	0	1	1	1	1	0	0	5
शुक्र	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	0	1	9
शनि	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	1	1	7
कुल	6	3	3	6	3	5	6	4	6	4	2	4	52

शनि का अष्टकवर्ग

	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	4
मंगल	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	6
सूर्य	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	7
शुक्र	0	0	0	0	1	0	0	0	0	1	1	0	3
बुध	0	0	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	6
चंद्र	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	3
लग्न	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	6
कुल	3	2	2	4	3	5	4	3	2	3	5	3	39

शनि का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	6
सूर्य	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	7
चंद्र	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	3
मंगल	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0	1	6
बुध	0	0	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	6
गुरु	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	4
शुक्र	0	0	0	1	0	0	0	0	1	1	0	0	3
शनि	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	4
कुल	3	1	1	6	3	3	5	3	3	5	4	2	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	कुल
शनि	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	6
गुरु	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	9
मंगल	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	5
सूर्य	1	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	6
शुक्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	0	0	1	7
बुध	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	7
चंद्र	1	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	5	4	4	7	0	4	4	4	3	3	6	5	49

लग्न का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	4
सूर्य	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	6
चंद्र	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	4
मंगल	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	5
बुध	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	7
गुरु	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	9
शुक्र	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	8
शनि	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	1	6
कुल	4	3	4	4	2	5	4	5	5	2	5	6	49

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

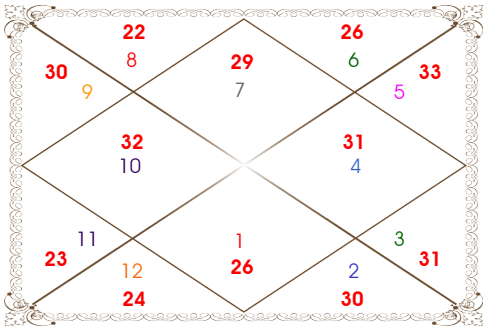

सर्वाष्टकवर्ग

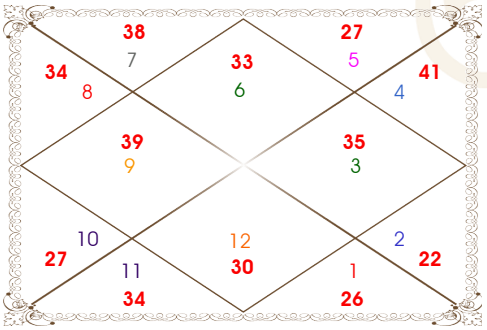

Sahil Sabnis

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	4	3	2	3	5	3	3	2	2	4	3	5	39
गुरु	3	5	6	4	4	6	4	4	5	4	6	5	56
मंगल	3	4	4	3	4	3	5	2	4	4	2	1	39
सूर्य	5	5	4	4	7	4	3	3	3	4	3	3	48
शुक्र	4	3	6	6	3	4	6	3	5	6	4	2	52
बुध	5	6	5	7	5	3	5	5	5	5	2	1	54
चंद्र	2	4	4	4	5	3	3	3	6	5	3	7	49
बिन्दु	26	30	31	31	33	26	29	22	30	32	23	24	337
रेखा	30	26	25	25	23	30	27	34	26	24	33	32	335

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
लग्न	4	3	4	4	2	5	4	5	5	2	5	6	49
सूर्य	2	1	4	8	6	3	4	5	4	5	4	2	48
चंद्र	4	4	5	4	4	3	5	5	4	2	5	4	49
मंगल	1	2	5	5	3	4	3	3	5	2	3	3	39
बुध	3	3	7	4	4	5	6	3	7	3	6	3	54
गुरु	3	5	6	4	2	5	5	6	5	4	5	6	56
शुक्र	6	3	3	6	3	5	6	4	6	4	2	4	52
शनि	3	1	1	6	3	3	5	3	3	5	4	2	39
बिन्दु	26	22	35	41	27	33	38	34	39	27	34	30	386
रेखा	38	42	29	23	37	31	26	30	25	37	30	34	382

शोध्य पिंड - Sahil Sabnis

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	76	98	77	111	70	84	91
ग्रह पिंड	40	70	48	67	44	50	35
शोध्य पिंड	116	168	125	178	114	134	126

शोध्य पिंड -

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	102	136	33	64	63	77	102	115
ग्रह पिंड	60	54	18	20	20	56	20	64
शोध्य पिंड	162	190	51	84	83	133	122	179

विंशोत्तरी दशा

शनि 5 वर्ष 1 मास 8 दिन

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष	
02/09/1984		11/10/1989		11/10/2006	
11/10/1989		11/10/2006		11/10/2013	
00/00/0000	बुध	09/03/1992	केतु	09/03/2007	
00/00/0000	केतु	06/03/1993	शुक्र	08/05/2008	
00/00/0000	शुक्र	05/01/1996	सूर्य	13/09/2008	
00/00/0000	सूर्य	10/11/1996	चंद्र	14/04/2009	
00/00/0000	चंद्र	12/04/1998	मंगल	10/09/2009	
00/00/0000	मंगल	09/04/1999	राहु	29/09/2010	
02/09/1984	राहु	26/10/2001	गुरु	05/09/2011	
राहु 31/03/1987	गुरु	01/02/2004	शनि	14/10/2012	
गुरु 11/10/1989	शनि	11/10/2006	बुध	11/10/2013	

सूर्य 2 वर्ष 5 मास 1 दिन

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष	
27/01/1988		30/06/1990		29/06/2000	
30/06/1990		29/06/2000		30/06/2007	
00/00/0000	चंद्र	30/04/1991	मंगल	25/11/2000	
00/00/0000	मंगल	29/11/1991	राहु	14/12/2001	
00/00/0000	राहु	30/05/1993	गुरु	20/11/2002	
00/00/0000	गुरु	29/09/1994	शनि	30/12/2003	
27/01/1988	शनि	29/04/1996	बुध	26/12/2004	
शनि 17/04/1988	बुध	29/09/1997	केतु	24/05/2005	
बुध 22/02/1989	केतु	30/04/1998	शुक्र	24/07/2006	
केतु 30/06/1989	शुक्र	30/12/1999	सूर्य	29/11/2006	
शुक्र 30/06/1990	सूर्य	29/06/2000	चंद्र	30/06/2007	

शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष	
11/10/2013		11/10/2033		11/10/2039	
11/10/2033		11/10/2039		11/10/2049	
शुक्र 09/02/2017	सूर्य	28/01/2034	चंद्र	11/08/2040	
सूर्य 10/02/2018	चंद्र	30/07/2034	मंगल	12/03/2041	
चंद्र 11/10/2019	मंगल	05/12/2034	राहु	11/09/2042	
मंगल 11/12/2020	राहु	30/10/2035	गुरु	11/01/2044	
राहु 11/12/2023	गुरु	17/08/2036	शनि	11/08/2045	
गुरु 11/08/2026	शनि	30/07/2037	बुध	10/01/2047	
शनि 11/10/2029	बुध	05/06/2038	केतु	12/08/2047	
बुध 11/08/2032	केतु	11/10/2038	शुक्र	11/04/2049	
केतु 11/10/2033	शुक्र	11/10/2039	सूर्य	11/10/2049	

राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष	
30/06/2007		30/06/2025		30/06/2041	
30/06/2025		30/06/2041		29/06/2060	
राहु 12/03/2010	गुरु	18/08/2027	शनि	02/07/2044	
गुरु 05/08/2012	शनि	28/02/2030	बुध	12/03/2047	
शनि 12/06/2015	बुध	05/06/2032	केतु	20/04/2048	
बुध 29/12/2017	केतु	12/05/2033	शुक्र	21/06/2051	
केतु 17/01/2019	शुक्र	11/01/2036	सूर्य	02/06/2052	
शुक्र 16/01/2022	सूर्य	29/10/2036	चंद्र	01/01/2054	
सूर्य 11/12/2022	चंद्र	28/02/2038	मंगल	10/02/2055	
चंद्र 11/06/2024	मंगल	04/02/2039	राहु	17/12/2057	
मंगल 30/06/2025	राहु	30/06/2041	गुरु	29/06/2060	

मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष	
11/10/2049		11/10/2056		11/10/2074	
11/10/2056		11/10/2074		11/10/2090	
मंगल 09/03/2050	राहु	24/06/2059	गुरु	28/11/2076	
राहु 28/03/2051	गुरु	16/11/2061	शनि	12/06/2079	
गुरु 02/03/2052	शनि	22/09/2064	बुध	17/09/2081	
शनि 11/04/2053	बुध	12/04/2067	केतु	23/08/2082	
बुध 08/04/2054	केतु	29/04/2068	शुक्र	23/04/2085	
केतु 05/09/2054	शुक्र	30/04/2071	सूर्य	10/02/2086	
शुक्र 05/11/2055	सूर्य	24/03/2072	चंद्र	12/06/2087	
सूर्य 12/03/2056	चंद्र	23/09/2073	मंगल	18/05/2088	
चंद्र 11/10/2056	मंगल	11/10/2074	राहु	11/10/2090	

बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष	
29/06/2060		30/06/2077		29/06/2084	
30/06/2077		29/06/2084		30/06/2104	
बुध 26/11/2062	केतु	26/11/2077	शुक्र	30/10/2087	
केतु 23/11/2063	शुक्र	26/01/2079	सूर्य	29/10/2088	
शुक्र 23/09/2066	सूर्य	03/06/2079	चंद्र	30/06/2090	
सूर्य 30/07/2067	चंद्र	02/01/2080	मंगल	30/08/2091	
चंद्र 29/12/2068	मंगल	30/05/2080	राहु	30/08/2094	
मंगल 26/12/2069	राहु	17/06/2081	गुरु	30/04/2097	
राहु 14/07/2072	गुरु	24/05/2082	शनि	30/06/2100	
गुरु 20/10/2074	शनि	03/07/2083	बुध	01/05/2103	
शनि 30/06/2077	बुध	29/06/2084	केतु	30/06/2104	

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध	
11/12/2023		11/08/2026		11/10/2029	
11/08/2026		11/10/2029		11/08/2032	
गुरु	19/04/2024	शनि	10/02/2027	बुध	07/03/2030
शनि	20/09/2024	बुध	24/07/2027	केतु	06/05/2030
बुध	05/02/2025	केतु	30/09/2027	शुक्र	25/10/2030
केतु	03/04/2025	शुक्र	10/04/2028	सूर्य	16/12/2030
शुक्र	12/09/2025	सूर्य	06/06/2028	चंद्र	12/03/2031
सूर्य	31/10/2025	चंद्र	11/09/2028	मंगल	12/05/2031
चंद्र	20/01/2026	मंगल	17/11/2028	राहु	14/10/2031
मंगल	18/03/2026	राहु	10/05/2029	गुरु	29/02/2032
राहु	11/08/2026	गुरु	11/10/2029	शनि	11/08/2032

गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध	
30/06/2025		18/08/2027		28/02/2030	
18/08/2027		28/02/2030		05/06/2032	
गुरु	11/10/2025	शनि	11/01/2028	बुध	25/06/2030
शनि	12/02/2026	बुध	21/05/2028	केतु	13/08/2030
बुध	02/06/2026	केतु	14/07/2028	शुक्र	29/12/2030
केतु	18/07/2026	शुक्र	16/12/2028	सूर्य	08/02/2031
शुक्र	24/11/2026	सूर्य	31/01/2029	चंद्र	18/04/2031
सूर्य	02/01/2027	चंद्र	18/04/2029	मंगल	05/06/2031
चंद्र	08/03/2027	मंगल	11/06/2029	राहु	07/10/2031
मंगल	23/04/2027	राहु	28/10/2029	गुरु	26/01/2032
राहु	18/08/2027	गुरु	28/02/2030	शनि	05/06/2032

शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र	
11/08/2032		11/10/2033		28/01/2034	
11/10/2033		28/01/2034		30/07/2034	
केतु	05/09/2032	सूर्य	16/10/2033	चंद्र	13/02/2034
शुक्र	15/11/2032	चंद्र	26/10/2033	मंगल	23/02/2034
सूर्य	06/12/2032	मंगल	01/11/2033	राहु	23/03/2034
चंद्र	10/01/2033	राहु	17/11/2033	गुरु	16/04/2034
मंगल	04/02/2033	गुरु	02/12/2033	शनि	15/05/2034
राहु	09/04/2033	शनि	19/12/2033	बुध	10/06/2034
गुरु	05/06/2033	बुध	04/01/2034	केतु	21/06/2034
शनि	12/08/2033	केतु	10/01/2034	शुक्र	21/07/2034
बुध	11/10/2033	शुक्र	28/01/2034	सूर्य	30/07/2034

गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य	
05/06/2032		12/05/2033		11/01/2036	
12/05/2033		11/01/2036		29/10/2036	
केतु	25/06/2032	शुक्र	21/10/2033	सूर्य	25/01/2036
शुक्र	21/08/2032	सूर्य	09/12/2033	चंद्र	19/02/2036
सूर्य	07/09/2032	चंद्र	28/02/2034	मंगल	07/03/2036
चंद्र	05/10/2032	मंगल	26/04/2034	राहु	20/04/2036
मंगल	25/10/2032	राहु	19/09/2034	गुरु	29/05/2036
राहु	15/12/2032	गुरु	27/01/2035	शनि	14/07/2036
गुरु	30/01/2033	शनि	30/06/2035	बुध	24/08/2036
शनि	25/03/2033	बुध	15/11/2035	केतु	10/09/2036
बुध	12/05/2033	केतु	11/01/2036	शुक्र	29/10/2036

सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु	
30/07/2034		05/12/2034		30/10/2035	
05/12/2034		30/10/2035		17/08/2036	
मंगल	07/08/2034	राहु	23/01/2035	गुरु	08/12/2035
राहु	26/08/2034	गुरु	08/03/2035	शनि	23/01/2036
गुरु	12/09/2034	शनि	29/04/2035	बुध	04/03/2036
शनि	02/10/2034	बुध	15/06/2035	केतु	21/03/2036
बुध	20/10/2034	केतु	04/07/2035	शुक्र	09/05/2036
केतु	28/10/2034	शुक्र	28/08/2035	सूर्य	24/05/2036
शुक्र	18/11/2034	सूर्य	13/09/2035	चंद्र	17/06/2036
सूर्य	24/11/2034	चंद्र	10/10/2035	मंगल	04/07/2036
चंद्र	05/12/2034	मंगल	30/10/2035	राहु	17/08/2036

गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु	
29/10/2036		28/02/2038		04/02/2039	
28/02/2038		04/02/2039		30/06/2041	
चंद्र	09/12/2036	मंगल	20/03/2038	राहु	15/06/2039
मंगल	06/01/2037	राहु	10/05/2038	गुरु	10/10/2039
राहु	20/03/2037	गुरु	24/06/2038	शनि	26/02/2040
गुरु	24/05/2037	शनि	17/08/2038	बुध	29/06/2040
शनि	09/08/2037	बुध	05/10/2038	केतु	19/08/2040
बुध	17/10/2037	केतु	25/10/2038	शुक्र	13/01/2041
केतु	15/11/2037	शुक्र	20/12/2038	सूर्य	25/02/2041
शुक्र	04/02/2038	सूर्य	07/01/2039	चंद्र	09/05/2041
सूर्य	28/02/2038	चंद्र	04/02/2039	मंगल	30/06/2041

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु	
17/08/2036		30/07/2037		05/06/2038	
30/07/2037		05/06/2038		11/10/2038	
शनि	11/10/2036	बुध	12/09/2037	केतु	13/06/2038
बुध	29/11/2036	केतु	30/09/2037	शुक्र	04/07/2038
केतु	19/12/2036	शुक्र	21/11/2037	सूर्य	10/07/2038
शुक्र	15/02/2037	सूर्य	06/12/2037	चंद्र	21/07/2038
सूर्य	04/03/2037	चंद्र	01/01/2038	मंगल	29/07/2038
चंद्र	02/04/2037	मंगल	19/01/2038	राहु	17/08/2038
मंगल	23/04/2037	राहु	07/03/2038	गुरु	03/09/2038
राहु	14/06/2037	गुरु	17/04/2038	शनि	23/09/2038
गुरु	30/07/2037	शनि	05/06/2038	बुध	11/10/2038

शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु	
30/06/2041		02/07/2044		12/03/2047	
02/07/2044		12/03/2047		20/04/2048	
शनि	20/12/2041	बुध	19/11/2044	केतु	05/04/2047
बुध	25/05/2042	केतु	15/01/2045	शुक्र	12/06/2047
केतु	28/07/2042	शुक्र	28/06/2045	सूर्य	02/07/2047
शुक्र	27/01/2043	सूर्य	16/08/2045	चंद्र	05/08/2047
सूर्य	23/03/2043	चंद्र	06/11/2045	मंगल	28/08/2047
चंद्र	23/06/2043	मंगल	02/01/2046	राहु	28/10/2047
मंगल	26/08/2043	राहु	30/05/2046	गुरु	21/12/2047
राहु	07/02/2044	गुरु	08/10/2046	शनि	23/02/2048
गुरु	02/07/2044	शनि	12/03/2047	बुध	20/04/2048

सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल	
11/10/2038		11/10/2039		11/08/2040	
11/10/2039		11/08/2040		12/03/2041	
शुक्र	11/12/2038	चंद्र	06/11/2039	मंगल	23/08/2040
सूर्य	29/12/2038	मंगल	24/11/2039	राहु	24/09/2040
चंद्र	29/01/2039	राहु	08/01/2040	गुरु	23/10/2040
मंगल	19/02/2039	गुरु	18/02/2040	शनि	25/11/2040
राहु	15/04/2039	शनि	06/04/2040	बुध	25/12/2040
गुरु	03/06/2039	बुध	19/05/2040	केतु	07/01/2041
शनि	30/07/2039	केतु	06/06/2040	शुक्र	11/02/2041
बुध	20/09/2039	शुक्र	27/07/2040	सूर्य	22/02/2041
केतु	11/10/2039	सूर्य	11/08/2040	चंद्र	12/03/2041

शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र	
20/04/2048		21/06/2051		02/06/2052	
21/06/2051		02/06/2052		01/01/2054	
शुक्र	30/10/2048	सूर्य	08/07/2051	चंद्र	20/07/2052
सूर्य	27/12/2048	चंद्र	06/08/2051	मंगल	23/08/2052
चंद्र	02/04/2049	मंगल	26/08/2051	राहु	18/11/2052
मंगल	09/06/2049	राहु	17/10/2051	गुरु	03/02/2053
राहु	29/11/2049	गुरु	03/12/2051	शनि	05/05/2053
गुरु	02/05/2050	शनि	27/01/2052	बुध	26/07/2053
शनि	02/11/2050	बुध	16/03/2052	केतु	29/08/2053
बुध	14/04/2051	केतु	05/04/2052	शुक्र	03/12/2053
केतु	21/06/2051	शुक्र	02/06/2052	सूर्य	01/01/2054

चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि	
12/03/2041		11/09/2042		11/01/2044	
11/09/2042		11/01/2044		11/08/2045	
राहु	02/06/2041	गुरु	15/11/2042	शनि	11/04/2044
गुरु	14/08/2041	शनि	31/01/2043	बुध	02/07/2044
शनि	09/11/2041	बुध	10/04/2043	केतु	05/08/2044
बुध	25/01/2042	केतु	08/05/2043	शुक्र	09/11/2044
केतु	26/02/2042	शुक्र	28/07/2043	सूर्य	08/12/2044
शुक्र	29/05/2042	सूर्य	22/08/2043	चंद्र	25/01/2045
सूर्य	25/06/2042	चंद्र	01/10/2043	मंगल	28/02/2045
चंद्र	10/08/2042	मंगल	30/10/2043	राहु	26/05/2045
मंगल	11/09/2042	राहु	11/01/2044	गुरु	11/08/2045

शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु	
01/01/2054		10/02/2055		17/12/2057	
10/02/2055		17/12/2057		29/06/2060	
मंगल	25/01/2054	राहु	16/07/2055	गुरु	19/04/2058
राहु	27/03/2054	गुरु	02/12/2055	शनि	13/09/2058
गुरु	20/05/2054	शनि	15/05/2056	बुध	22/01/2059
शनि	23/07/2054	बुध	09/10/2056	केतु	17/03/2059
बुध	18/09/2054	केतु	09/12/2056	शुक्र	18/08/2059
केतु	12/10/2054	शुक्र	31/05/2057	सूर्य	03/10/2059
शुक्र	18/12/2054	सूर्य	23/07/2057	चंद्र	20/12/2059
सूर्य	07/01/2055	चंद्र	17/10/2057	मंगल	11/02/2060
चंद्र	10/02/2055	मंगल	17/12/2057	राहु	29/06/2060

योगिनी दशा

भ्रामरी 1 वर्ष 0 मास 27 दिन

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
02/09/1984		30/09/1985		30/09/1990	
30/09/1985		30/09/1990		29/09/1996	
	00/00/0000	भद्रि	10/06/1986	उल्क	30/09/1991
	00/00/0000	उल्क	11/04/1987	सिद्ध	29/11/1992
	00/00/0000	सिद्ध	31/03/1988	संक	31/03/1994
	02/09/1984	संक	11/05/1989	मंग	31/05/1994
संक	29/01/1985	मंग	30/06/1989	पिंग	30/09/1994
मंग	11/03/1985	पिंग	10/10/1989	धांय	31/03/1995
पिंग	31/05/1985	धांय	11/03/1990	भ्राम	30/11/1995
धांय	30/09/1985	भ्राम	30/09/1990	भद्रि	29/09/1996

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष	
29/09/1996		30/09/2003		30/09/2011	
30/09/2003		30/09/2011		29/09/2012	
सिद्ध	08/02/1998	संक	10/07/2005	मंग	10/10/2011
संक	31/08/1999	मंग	30/09/2005	पिंग	30/10/2011
मंग	10/11/1999	पिंग	11/03/2006	धांय	30/11/2011
पिंग	31/03/2000	धांय	09/11/2006	भ्राम	10/01/2012
धांय	30/10/2000	भ्राम	30/09/2007	भद्रि	29/02/2012
भ्राम	10/08/2001	भद्रि	09/11/2008	उल्क	30/04/2012
भद्रि	31/07/2002	उल्क	11/03/2010	सिद्ध	10/07/2012
उल्क	30/09/2003	सिद्ध	30/09/2011	संक	29/09/2012

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष	
29/09/2012		30/09/2014		30/09/2017	
30/09/2014		30/09/2017		30/09/2021	
पिंग	09/11/2012	धांय	30/12/2014	भ्राम	11/03/2018
धांय	09/01/2013	भ्राम	01/05/2015	भद्रि	30/09/2018
भ्राम	31/03/2013	भद्रि	30/09/2015	उल्क	31/05/2019
भद्रि	10/07/2013	उल्क	31/03/2016	सिद्ध	10/03/2020
उल्क	09/11/2013	सिद्ध	30/10/2016	संक	29/01/2021
सिद्ध	31/03/2014	संक	30/06/2017	मंग	11/03/2021
संक	10/09/2014	मंग	31/07/2017	पिंग	31/05/2021
मंग	30/09/2014	पिंग	30/09/2017	धांय	30/09/2021

उल्का 2 वर्ष 5 मास 1 दिन

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
27/01/1988		30/06/1990		30/06/1997	
30/06/1990		30/06/1997		30/06/2005	
	00/00/0000	सिद्ध	09/11/1991	संक	10/04/1999
	00/00/0000	संक	30/05/1993	मंग	30/06/1999
	27/01/1988	मंग	09/08/1993	पिंग	09/12/1999
मंग	29/02/1988	पिंग	29/12/1993	धांय	09/08/2000
पिंग	29/06/1988	धांय	30/07/1994	भ्राम	30/06/2001
धांय	29/12/1988	भ्राम	10/05/1995	भद्रि	09/08/2002
भ्राम	29/08/1989	भद्रि	29/04/1996	उल्क	09/12/2003
भद्रि	30/06/1990	उल्क	30/06/1997	सिद्ध	30/06/2005

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
30/06/2005		30/06/2006		29/06/2008	
30/06/2006		29/06/2008		30/06/2011	
मंग	10/07/2005	पिंग	09/08/2006	धांय	29/09/2008
पिंग	30/07/2005	धांय	09/10/2006	भ्राम	28/01/2009
धांय	29/08/2005	भ्राम	29/12/2006	भद्रि	30/06/2009
भ्राम	09/10/2005	भद्रि	10/04/2007	उल्क	29/12/2009
भद्रि	29/11/2005	उल्क	10/08/2007	सिद्ध	30/07/2010
उल्क	29/01/2006	सिद्ध	30/12/2007	संक	31/03/2011
सिद्ध	10/04/2006	संक	09/06/2008	मंग	30/04/2011
संक	30/06/2006	मंग	29/06/2008	पिंग	30/06/2011

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
30/06/2011		30/06/2015		29/06/2020	
30/06/2015		29/06/2020		30/06/2026	
भ्राम	09/12/2011	भद्रि	10/03/2016	उल्क	30/06/2021
भद्रि	29/06/2012	उल्क	08/01/2017	सिद्ध	30/08/2022
उल्क	28/02/2013	सिद्ध	29/12/2017	संक	30/12/2023
सिद्ध	09/12/2013	संक	08/02/2019	मंग	29/02/2024
संक	30/10/2014	मंग	31/03/2019	पिंग	29/06/2024
मंग	09/12/2014	पिंग	10/07/2019	धांय	29/12/2024
पिंग	28/02/2015	धांय	09/12/2019	भ्राम	29/08/2025
धांय	30/06/2015	भ्राम	29/06/2020	भद्रि	30/06/2026

योगिनी दशा

भ्रामरी 1 वर्ष 0 मास 27 दिन

भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
30/09/2021		30/09/2026		29/09/2032	
30/09/2026		29/09/2032		30/09/2039	
भद्रि	10/06/2022	उल्क	30/09/2027	सिद्ध	08/02/2034
उल्क	11/04/2023	सिद्ध	29/11/2028	संक	31/08/2035
सिद्ध	31/03/2024	संक	31/03/2030	मंग	10/11/2035
संक	11/05/2025	मंग	31/05/2030	पिंग	31/03/2036
मंग	30/06/2025	पिंग	30/09/2030	धांय	30/10/2036
पिंग	10/10/2025	धांय	31/03/2031	भ्राम	10/08/2037
धांय	11/03/2026	भ्राम	30/11/2031	भद्रि	31/07/2038
भ्राम	30/09/2026	भद्रि	29/09/2032	उल्क	30/09/2039

संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
30/09/2039		30/09/2047		29/09/2048	
30/09/2047		29/09/2048		30/09/2050	
संक	10/07/2041	मंग	10/10/2047	पिंग	09/11/2048
मंग	30/09/2041	पिंग	30/10/2047	धांय	09/01/2049
पिंग	11/03/2042	धांय	30/11/2047	भ्राम	31/03/2049
धांय	09/11/2042	भ्राम	10/01/2048	भद्रि	10/07/2049
भ्राम	30/09/2043	भद्रि	29/02/2048	उल्क	09/11/2049
भद्रि	09/11/2044	उल्क	30/04/2048	सिद्ध	31/03/2050
उल्क	11/03/2046	सिद्ध	10/07/2048	संक	10/09/2050
सिद्ध	30/09/2047	संक	29/09/2048	मंग	30/09/2050

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
30/09/2050		30/09/2053		30/09/2057	
30/09/2053		30/09/2057		30/09/2062	
धांय	30/12/2050	भ्राम	11/03/2054	भद्रि	10/06/2058
भ्राम	01/05/2051	भद्रि	30/09/2054	उल्क	11/04/2059
भद्रि	30/09/2051	उल्क	31/05/2055	सिद्ध	31/03/2060
उल्क	31/03/2052	सिद्ध	10/03/2056	संक	11/05/2061
सिद्ध	30/10/2052	संक	29/01/2057	मंग	30/06/2061
संक	30/06/2053	मंग	11/03/2057	पिंग	10/10/2061
मंग	31/07/2053	पिंग	31/05/2057	धांय	11/03/2062
पिंग	30/09/2053	धांय	30/09/2057	भ्राम	30/09/2062

उल्का 2 वर्ष 5 मास 1 दिन

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष	
30/06/2026		30/06/2033		30/06/2041	
30/06/2033		30/06/2041		30/06/2042	
सिद्ध	09/11/2027	संक	10/04/2035	मंग	10/07/2041
संक	30/05/2029	मंग	30/06/2035	पिंग	30/07/2041
मंग	09/08/2029	पिंग	09/12/2035	धांय	29/08/2041
पिंग	29/12/2029	धांय	09/08/2036	भ्राम	09/10/2041
धांय	30/07/2030	भ्राम	30/06/2037	भद्रि	29/11/2041
भ्राम	10/05/2031	भद्रि	09/08/2038	उल्क	29/01/2042
भद्रि	29/04/2032	उल्क	09/12/2039	सिद्ध	10/04/2042
उल्क	30/06/2033	सिद्ध	30/06/2041	संक	30/06/2042

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष	
30/06/2042		29/06/2044		30/06/2047	
29/06/2044		30/06/2047		30/06/2051	
पिंग	09/08/2042	धांय	29/09/2044	भ्राम	09/12/2047
धांय	09/10/2042	भ्राम	28/01/2045	भद्रि	29/06/2048
भ्राम	29/12/2042	भद्रि	30/06/2045	उल्क	28/02/2049
भद्रि	10/04/2043	उल्क	29/12/2045	सिद्ध	09/12/2049
उल्क	10/08/2043	सिद्ध	30/07/2046	संक	30/10/2050
सिद्ध	30/12/2043	संक	31/03/2047	मंग	09/12/2050
संक	09/06/2044	मंग	30/04/2047	पिंग	28/02/2051
मंग	29/06/2044	पिंग	30/06/2047	धांय	30/06/2051

भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
30/06/2051		29/06/2056		30/06/2062	
29/06/2056		30/06/2062		30/06/2069	
भद्रि	10/03/2052	उल्क	30/06/2057	सिद्ध	09/11/2063
उल्क	08/01/2053	सिद्ध	30/08/2058	संक	30/05/2065
सिद्ध	29/12/2053	संक	30/12/2059	मंग	09/08/2065
संक	08/02/2055	मंग	29/02/2060	पिंग	29/12/2065
मंग	31/03/2055	पिंग	29/06/2060	धांय	30/07/2066
पिंग	10/07/2055	धांय	29/12/2060	भ्राम	10/05/2067
धांय	09/12/2055	भ्राम	29/08/2061	भद्रि	29/04/2068
भ्राम	29/06/2056	भद्रि	30/06/2062	उल्क	30/06/2069

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

2	मूलांक	9
6	भाग्यांक	9
2, 7, 8, 6	मित्र अंक	1, 3, 6, 9
4, 5,	शत्रु अंक	4, 5, 8
20,29,38,47,56	शुभ वर्ष	27,36,45,54,63
शनि, बुध, शुक्र	शुभ दिन	बुध, शुक्र
शनि, बुध, शुक्र	शुभ ग्रह	बुध, शुक्र
कर्क, सिंह	मित्र राशि	मकर, कुम्भ
मकर, मिथुन, सिंह	मित्र लग्न	धनु, वृष, कर्क
शिव	अनुकूल देवता	विष्णु
हीरा	शुभ रत्न	पन्ना
जरकिन, ओपल	शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
पन्ना	भाग्य रत्न	हीरा
रजत	शुभ धातु	कांसा
रजत	शुभ रंग	हरित
दक्षिणपूर्व	शुभ दिशा	उत्तर
सूर्योदय	शुभ समय	सूर्योदय के बाद
मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन	दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
चावल	दान अन्न	मूँग
दूध	दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

किसी भी कुंडली में दशानुसार ग्रह का उपाय एवं रत्न धारण करने से शुभत्व में वृद्धि होती है। वैज्ञानिक रूप से विशिष्ट ग्रह का मंत्रोच्चारण करने से उस ग्रह की रश्मियों की मानव शरीर के चारों ओर सुरक्षा श्रृंखला बन जाती है एवं रत्न रश्मियों को सोखकर मानव शरीर में प्रवाहित कर शुभत्व में वृद्धि करता है। अतः रत्न का बेदाग होना एवं शरीर से स्पर्श करना अत्यंत आवश्यक माना गया है।

सामान्यतया उपाय ग्रह दशा के फल की वृद्धि के लिए महादशा स्वामी का किया जाता है। उपाय में मंत्रोच्चारण, दान एवं व्रत ही प्रमुख हैं। रत्न निर्बल परंतु लग्नेश, भाग्येश या योगकारक ग्रहों का पहना जाता है। आपको कब कौन सा उपाय या रत्न धारण करना चाहिए नीचे तालिका में उसके कार्यसिद्धि क्षेत्र सहित दिया गया है। महादशाओं में रत्नों के तीन-तीन विकल्प दिए गए हैं। आपको कोई भी विकल्प उसकी कार्यसिद्धि क्षेत्र एवं क्षमता देखकर अपनी आवश्यकतानुसार पहन सकते हैं तथा अतिरिक्त उपाय भी अपनी क्षमतानुसार कर सकते हैं।

Sahil Sabnis

जीवन रत्नः	हीरा	कम खर्च, दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य
भाग्य रत्नः	पन्ना	धनार्जन, भाग्योदय, कम खर्च
कारक रत्नः	नीलम	स्वास्थ्य, सुख, सन्तति सुख

जीवन रत्नः	पन्ना	शत्रु व रोग मुक्ति, व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
भाग्य रत्नः	हीरा	शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय, धन
कारक रत्नः	नीलम	सुख, सन्तति सुख, शत्रु व रोग मुक्ति
शुभ उपरत्नः	मोती	भाग्योदय, धनार्जन

रत्न	ग्रह	रत्ती	धातु	अंगुली	दिन	समय	नक्षत्र
माणिक्य	सूर्य	4	सोना	अना	रविवार	सुबह	कृतिका, उ०फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा
मोती	चन्द्र	4	चांदी	कनि	सोमवार	सुबह	रोहिणी, हस्त, श्रवण
मूंगा	मंगल	6	चांदी	अना	मंगलवार	सुबह	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा
पन्ना	बुध	4	सोना	कनि	बुधवार	सुबह	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
पुखराज	गुरु	4	सोना	तर्जन	गुरुवार	सुबह	पुनर्वसु, विशाखा, पू०भाद्रपद
हीरा	शुक्र	1	प्लेटि	कनि	शुक्रवार	सुबह	भरणी, पू०फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा
नीलम	शनि	4	पंचधातु	मध्य	शनिवार	शाम	पुष्य, अनुराधा, उ०भाद्रपद
गोमेद	राहु	5	अष्टधातु	मध्य	शनिवार	रात्रि	आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा
लहसुनिया	केतु	6	चांदी	अना	गुरुवार	रात्रि	अश्विनी, मघा, मूल

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	01/09/1984-21/12/1984
साढेसाती द्वितीय ढैया	21/12/1984-16/12/1987
साढेसाती तृतीय ढैया	16/12/1987-20/03/1990
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/03/1993-10/08/1995
अष्टम स्थानस्थ ढैया	22/07/2002-05/09/2004

द्वितीय चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	15/11/2011-02/11/2014
साढेसाती द्वितीय ढैया	02/11/2014-19/01/2017
साढेसाती तृतीय ढैया	19/01/2017-18/01/2020
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	21/07/2022-24/03/2025
अष्टम स्थानस्थ ढैया	25/05/2032-06/07/2034

तृतीय चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	06/03/2041-02/12/2043
साढेसाती द्वितीय ढैया	02/12/2043-29/11/2046
साढेसाती तृतीय ढैया	29/11/2046-20/07/2049
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	17/02/2052-09/09/2054
अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/07/2061-15/02/2064

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	स्वास्थ्य
साढेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	धन
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	पराक्रम
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	सन्तति सुख
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	भाग्योदय

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	27/01/1988-20/03/1990
साढेसाती प्रथम ढैया	16/04/1998-05/06/2000
साढेसाती द्वितीय ढैया	05/06/2000-22/07/2002
साढेसाती तृतीय ढैया	22/07/2002-05/09/2004
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	01/11/2006-09/09/2009

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	19/01/2017-18/01/2020
साढेसाती प्रथम ढैया	26/10/2027-11/04/2030
साढेसाती द्वितीय ढैया	11/04/2030-25/05/2032
साढेसाती तृतीय ढैया	25/05/2032-06/07/2034
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	20/08/2036-29/06/2039

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/11/2046-20/07/2049
साढेसाती प्रथम ढैया	01/04/2057-22/05/2059
साढेसाती द्वितीय ढैया	22/05/2059-05/07/2061
साढेसाती तृतीय ढैया	05/07/2061-15/02/2064
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	03/10/2065-21/08/2068

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	सुख
साढेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	दुर्घटना
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	भाग्योदय
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	व्यावसाय
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	व्यय

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त

किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

Sahil Sabnis

आपकी जन्मकुण्डली में कर्कोटक नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्य मान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। फलस्वरूप जातक को भाग्योदय होने में आंशिक रूप से व्यवधान उपस्थित हो जाता है। नौकरी में थोड़ा बहुत रुकावट आती है या कभी पदावनति होने का भय होता है। प्रायः जातक को पैतृक सम्पत्ति का मनोवांछित लाभ नहीं मिलता है। व्यापारादि कार्यों में थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है और विशेष परिश्रम करने के बावजूद भी उसका सही फल प्राप्त नहीं होता है। कामों में स्थिरता प्रायः नहीं आ पाती।

इस योग के प्रभाव से जातक अपने मित्रों के द्वारा कभी थोड़ा बहुत छले जाते हैं। जिस कारण जातक को नुकसान उठाना पड़ता है। कभी जातक के शरीर में रोग व्याधि ग्रसित कर लेती है तथा आंशिक रूप में मानसिक परेशानी घेरे रहती है। जातक को कुटुम्ब से अपयश मिलता है एवं आत्मीय परिजनों से सम्मान नहीं मिलता है।

इस योग के कारण जातक को अपनी वाणी पर नियन्त्रण नहीं रहता एवं वाणी कभी-कभी दूषित हो जाती है। परिणामस्वरूप जातक का स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है। बात-बात पर लड़ाई-झगड़े करने को भी तैयार हो जाता है और जातक को आंशिक रूप से आर्थिक नुकसान होता है तथा उधार में दिया हुआ पैसा प्रायः डूब ही जाता है। जातक को कभी शस्त्राघात का भय होता है। जातक के अनेक शत्रु होते हैं। वे षड्यन्त्र रचते रहते हैं, परन्तु अपने षड्यन्त्र में वे कभी सफल नहीं होते। जातक को अकाल मृत्यु का भय बना रहता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त्त में रात्रि को दान करें।

9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

आपकी जन्मकुण्डली में तक्षक नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप साझेदारी के कामों में जातक को थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है। बनते कार्यों में आंशिक रूप से रूकावटें आती हैं। पर कालान्तर में अपने आप व्यवधान हट जाता है। बड़े पद मिलने में भी थोड़ा बहुत कठिनाई आती है, पर जातक कुछ समय बाद अपने बौद्धिक बल से उस व्यवधान को समाप्त करने में सक्षम हो जाता है।

इस योग के प्रभाव से जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी आंशिक रूप में कष्टमय हो जाता है। प्रेम प्रसंग में जातक को सफलता प्राप्त करने में आंशिक व्यवधान आ जाता है और गुप्त प्रसंग से धोखा होने की संभावना रहती है। घर में सुख शान्ति का अभाव रहता है।

इस योग के कारण जातक शत्रुओं से घिरा रहता है। शत्रु लोग जातक के ऊपर षड्यन्त्र रचते रहते हैं पर उस षड्यन्त्र में कोई विशेष सफलता उनको नहीं मिलती है। जातक समय-समय पर गुप्त रोग से परेशान रहता है और रोग व्याधि में थोड़ा बहुत अधिक खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति असामान्य हो जाती है। पैतृक धन सम्पत्ति का मनोभिलाषित फल प्रायः जातक को नहीं मिलता है। जातक अपनी पैतृक सम्पत्ति को या तो दान कर देता है या नष्ट हो जाती है। यदि जातक किसी दूसरे को थोड़ा बहुत धन देता है तो वह धन प्रायः वापस नहीं आता। जिस कारण जातक को मानसिक परेशानी व चिन्ता थोड़ा बहुत घेरे रहती है।

इस योग के प्रभाव से जातक को सन्तान सुख का प्रायः अभाव रहता है। जातक को अपने जीवन साथी के साथ सदैव समझौते का रुख अपनाना चाहिये तभी गृहस्थ जीवन विशेष रूप से सुखी रह सकता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ऊँ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ऊँ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	वैश्य	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	कीटक	चतुष्पाद	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	साधक	प्रत्यारि	3	1.50	--	भाग्य
योनि	मृग	मेष	4	3.00	--	यौन विचार
मैत्री	मंगल	शुक्र	5	3.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	राक्षस	6	1.00	--	सामाजिकता
भकूट	वृश्चिक	वृष	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	अन्त्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	25.50		

कुल : **25.5 / 36**

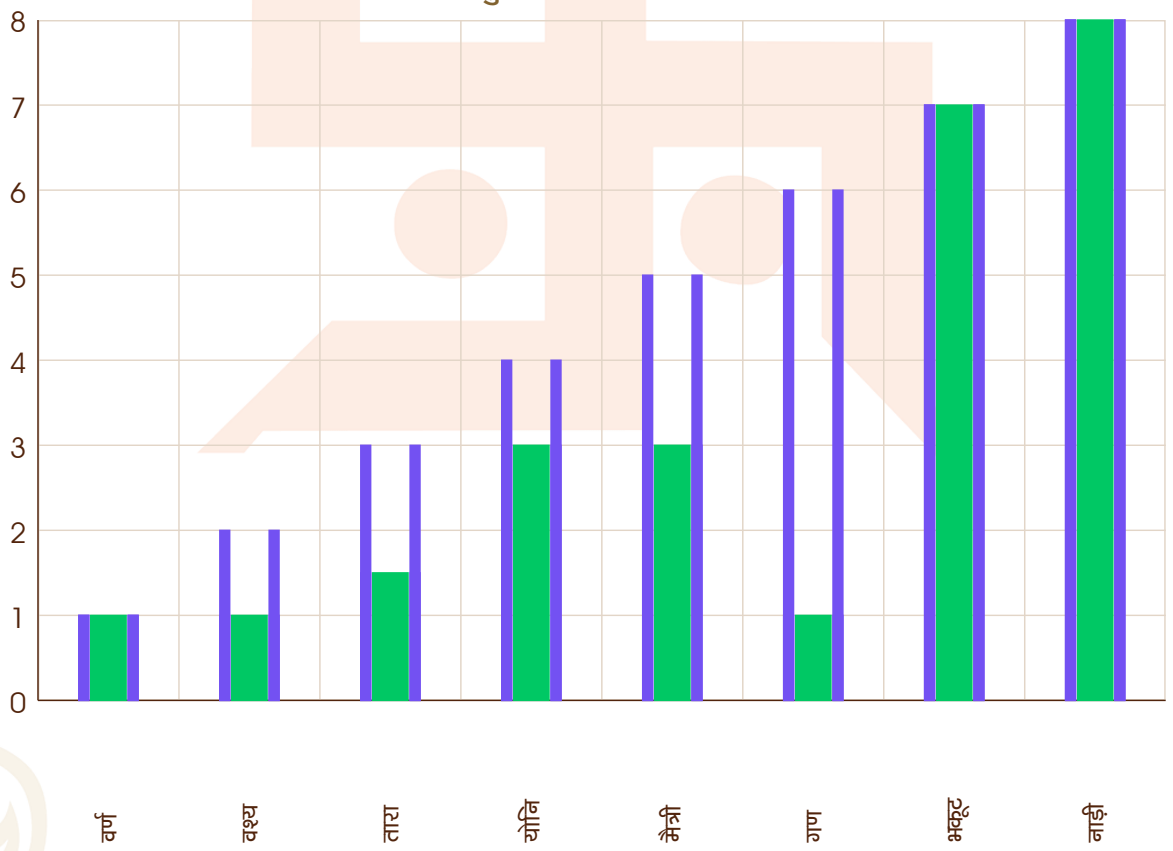

अष्टकूट मिलान

Sahil Sabnis का वर्ग सर्प है तथा Ms. का वर्ग गरूड़ है। इन दोनों वर्गों में परस्पर शत्रुता है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Sahil Sabnis और Ms. का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

Sahil Sabnis मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वितीय भाव में स्थित है।

Ms. मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है।

Sahil Sabnis तथा Ms. में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

Sahil Sabnis का वर्ण ब्राह्मण तथा Ms. का वर्ण वैश्य है। अतः यह मिलान अति उत्तम है। Ms. सदैव अपने पति तथा घर में बड़ों का सम्मान करेगी तथा उनकी आज्ञा का पालन करती रहेंगी। Ms. मितव्ययी होंगी तथा बचत करके पैसे को लाभदायक उपादानों में निवेश करती रहेंगी।

वश्य

Sahil Sabnis का वश्य कीट है एवं Ms. का वश्य चतुष्पद है। जिसके कारण यह मिलान औसत मिलान है। चतुष्पद एवं कीट दो भिन्न प्राणी हैं। किंतु दोनों का प्रकृति में सह-अस्तित्व है। दोनों के स्वभाव, गुण, पसंद/नापसंद अलग होते हुए भी दोनों एक-दूसरे के लिए घातक नहीं होंगे। इसी प्रकार, Sahil Sabnis चतुष्पद अर्थात् पशु एवं Ms. कीट वश्य की होने के कारण दोनों के स्वभाव, व्यवहार, गुण, पसंद/नापसंद में अंतर होते हुए भी दोनों के बीच वैवाहिक संबंध सामान्य ही रहने की प्रबल संभावना है। दोनों का स्वभाव गंभीर एवं संकोची रहेगा तथा दोनों सौहार्दता एवं प्रेम से अपना जीवन यापन करते रहेंगे।साथ ही अपने-अपने कर्त्तव्यों एवं दायित्वों का निर्वहन करते रहेंगे।

तारा

Sahil Sabnis की तारा साधक तथा Ms. की तारा प्रत्यरि है। Ms. की तारा प्रत्यरि होने के कारण यह मिलान औसत मिलान ही है। संभाव है कि यह विवाह Sahil Sabnis एवं उसके परिवार के लिए हानिकारक साबित हो। Ms. का स्वभाव बिल्कुल लापरवाह, स्वार्थी एवं असहयोग की भावना वाली हो सकती है तथा भविष्य मे अपने स्वार्थ की पूर्ति करने में ही लगी रह सकती है। साथ ही Ms. के अवैध संबंध तक भी हो सकते हैं जिसके फलस्वरूप पति, बच्चों एवं संपूर्ण परिवार को काफी कष्ट एवं पीड़ा का सामना कर पड़ सकता है। Sahil Sabnis अत्यधिक आध्यात्मिक हो सकता है तथा अपना अधिकांश समय आध्यात्मिक गतिविधियों में ही व्यतीत करता रहेगा।

योनि

Sahil Sabnis की योनि मृग है तथा Ms. की योनि मेष है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं है। परन्तु इन दोनों योनि के बीच मित्रता का संबंध है अतः यह मिलान उत्तम मिलान रहेगा। जिसके कारण दोनों के बीच परस्पर प्रेम का भाव रहेगा। वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन में सौहार्द्रपूर्ण वातावरण रहेगा। दोनों एक दूसरे को सहयोग करेंगे। आपसी समझ एवं विश्वास की भावना रहेगी। जिससे अपने पारिवारिक व वैवाहिक जीवन में सभी कार्य आपसी सहमति से करेंगे एवं उनमें सफलता भी प्राप्त करेंगे। जीवन में अक्सर धन प्राप्ति के सुअवसर मिलते रहेंगे। आय के नये-नये स्रोत बनेंगे तथा अच्छी आय के साथ-साथ अच्छी जमापूंजी होगी तथा परिवार में सुख समृद्धि बढ़ेगी। परस्पर प्रेम एवं सौहार्द्र की भावना के कारण दोनों एकदूसरे

के प्रति अपनापन महसूस करेंगे। परिवार में शांति का वातावरण बना रहेगा। साथ ही सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होती रहेगी। वर और कन्या का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। इन दोनों से उत्पन्न संतानें योग्य होंगी तथा वे भी अपने जीवन में सफलता प्राप्त करेंगे। इनके जीवन में सफलता इनके कदम चूमेगी। इस प्रकार इनका वैवाहिक जीवन सुखमय जीवन ही रहेगा।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में Sahil Sabnis एवं Ms. दोनों के राशि स्वामी परस्पर सम हैं। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से औसत मिलान है। ज्योतिष की दृष्टि से यह मिलान औसत माना जायेगा। इसके कारण जीवन एवं करियर में हमेशा उतार-चढ़ाव बने रहेंगे। दोनों के बीच प्रेम एवं सहयोग का माहौल रहेगा किंतु यदा-कदा आपस में ये लड़ाई-झगड़ा भी कर सकते हैं। हालांकि ये जल्दी ही अपने झगड़े को भुलाकर समझौता भी कर लेंगे तथा जीवन पथ पर आगे बढते रहेंगे। सफलता पाने के लिए इनको अथक परिश्रम एवं उद्यम करना पड़ सकता है।

गण

Sahil Sabnis का गण देव तथा Ms. का गण राक्षस है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। ऐसी परिस्थिति में Ms. निर्दयी, निष्ठुर एवं क्रूर स्वभाव की हो सकती हैं जो वर, उसके बच्चों तथा परिवार के सदस्यों के लिए बुरा एवं घातक साबित हो सकता है। ऐसी पत्नी से अपेक्षा नहीं की जा सकती कि वह अपने पति, परिवार अथवा सामाजिक दायित्वों का अच्छी प्रकार से निर्वहन करेंगी। Ms. की अक्सर दूसरों से लड़ाई-झगड़ा करना एवं लोगों को उकसाना इसी प्रकार की आदत होगी।

भकूट

Sahil Sabnis एवं Ms. की राशियां एक दूसरे से सम सप्तक (1/7) हैं। जिसके कारण इस मिलान को अति उत्तम मिलान माना जाता है। ज्योतिष की दृष्टि से यह मिलान अति शुभ है तथा Sahil Sabnis व Ms. को शांति, सुख, सौभाग्य, समृद्धि, योग्य संतान एवं चतुर्दिक विकास के अवसरसमय-समय पर मिलते रहेंगे। साथ ही दोनों के बीच असीम प्यार बना रहेगा तथा दोनों हर कार्य में एक-दूसरे की मदद करते रहेंगे।

नाड़ी

Sahil Sabnis की नाड़ी मध्य है तथा Ms. की नाड़ी अन्त्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान नहीं है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोष मुक्त है। अर्थात यह मिलान अति उत्तम मिलान है। यह जीवन के लिए आवश्यक दो महत्वपूर्ण अवयवों का समन्वय है। अच्छे स्वास्थ्य, स्वस्थ काया एवं अच्छे यौन जीवन के लिए वात, पित्त एवं कफ का शरीर में संतुलन आवश्यक है। जिसके कारण Sahil Sabnis एवं Ms. के बीच साहचर्य, सुख एवं समृद्धि की वृद्धि तथा उन्हें अच्छे, स्वस्थ एवं आज्ञाकारी संतान प्रदान होगी।

मेलापक फलित

स्वभाव

Sahil Sabnis की जन्म राशि जलतत्व युक्त वृश्चिक तथा Ms. की पृथ्वी तत्व युक्त वृष राशि है। जल एवं पृथ्वी तत्व में नैसर्गिक समता होने के कारण Sahil Sabnis और Ms. में स्वभावगत समानताएं होंगी जिससे दाम्पत्य संबंधों में प्रगाढ़ता होगी तथा वैवाहिक जीवन सुखी रहेगा। अतः मिलान अच्छा रहेगा।

Sahil Sabnis की जन्म राशि का स्वामी मंगल तथा Ms. की राशि का स्वामी शुक्र परस्पर समराशियों में स्थित है। अतः इसके प्रभाव से Sahil Sabnis और Ms. के आपसी संबंध अच्छे रहेंगे तथा परस्पर स्नेह सहयोग एवं सहानुभूति का भाव रहेगा। वे सुख दुख में एक दूसरे को अपनी ओर से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करेंगे जिससे दाम्पत्य जीवन की मधुरता बनी रहेगी तथा पारिवारिक सुख शांति तथा समृद्धि में भी वृद्धि होगी।

Sahil Sabnis तथा Ms. की राशियां परस्पर सप्तम भाव में पड़ती है। शास्त्रानुसार यह शुभ भकूट माना जाता है। इसके प्रभाव से Sahil Sabnis और Ms. का दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा तथा परस्पर सम्मान पूर्वक समर्पण की भावना रहेगी तथा एक दूसरे के अस्तित्व को पूर्ण स्वीकार करते हुए सुख दुख में पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। अतः Sahil Sabnis और Ms. का वैवाहिक जीवन उत्तम रहेगा।

Sahil Sabnis का वश्य कीट एवं Ms. का वश्य चतुष्पद है। कीट एवं चतुष्पद में समानता होने के कारण इनकी अभिरूचियों में समानता रहेगी तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर आवश्यकताएं समान होंगी। अतः दाम्पत्य संबंधों में भी एक दूसरे को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में समर्थ होंगे।

Sahil Sabnis का वर्ण ब्राह्मण तथा Ms. का वर्ण वैश्य है। अतः Sahil Sabnis क्षीणक शास्त्रीय तथा धार्मिक कार्य कलापों में रूचि रखेंगे जबकि Ms. धनार्जन संबधी कार्यो में तत्पर रहेंगी। इससे कार्य क्षेत्र में सुदृढ़ता रहेगी तथा आर्थिक स्थिति भी अच्छी रहेगी।

धन

Sahil Sabnis और Ms. दोनों की तारा परस्पर सम है। अतः आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा तथा सामान्य गति से धन एवं लाभ अर्जित करने में दोनों तत्पर रहेंगे। भकूट भी सम ही रहेगा जिससे उनके लाभमार्ग स्वबुद्धिमता एवं परिश्रम से प्रशस्त रहेंगे। मंगल का भी उनकी आर्थिक स्थिति पर कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। इस प्रकार उनके अर्थिक स्तर पर कोई विशेष नाटकीय परिवर्तन की संभावना नहीं होगी परन्तु सामान्य जीवन धनऐश्वर्य से युक्त होकर व्यतीत होगा।

इसके साथ ही कोई विशेष या अचानक लाभ के योगों में भी न्यूनता होगी तथा आर्थिक स्तर अपने ही अनुकूल रहेगा जिससे वे आर्थिक रूप से सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

स्वास्थ्य

Sahil Sabnis की नाड़ी मध्य तथा Ms. की नाड़ी अंत्य है। अतः दोनों की अलग अलग नाड़ियां होने के कारण ये नाड़ी दोष से मुक्त रहेंगे। इसके प्रभाव से Sahil Sabnis और Ms. दोनों का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा परिश्रम एवं पराक्रम से वे अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को यथा समय सम्पन्न करने में समर्थ रहेंगे। इससे दाम्पत्य जीवन में खुशहाली तथा सन्तुष्टि बनी रहेगी। साथ ही मंगल का भी किसी के स्वास्थ्य पर कोई दुष्प्रभाव नहीं रहेगा। अतः उत्तम दाम्पत्य जीवन को व्यतीत करने की दृष्टि से यह मिलान अनुकूल रहेगा तथा Sahil Sabnis और Ms. सुख एवं आनंद पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से Sahil Sabnis और Ms. का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त Sahil Sabnis और Ms. के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में Ms. के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन Ms. को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में Ms. को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से Sahil Sabnis और Ms. सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरूद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार Sahil Sabnis और Ms. का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

Ms. के अपने ससुराल पक्ष के लोगों से अच्छे संबध रहेंगे साथ ही अन्य जनों की अपेक्षा सास से संबधों में अधिक मधुरता रहेगी। विवाह के बाद Ms. अत्यंत ही धैर्य एवं परस्पर सामजंस्यता के भाव का पालन करेंगी। उनका यह धैर्य एवं सामंजस्यता का भाव भविष्य में उनके लिए अनुकूल सिद्ध होगा।

साथ ही ससुर के साथ भी सामंजस्य स्थापित करने में उन्हें कोई परेशानी नहीं होगी। अपनी मधुर वाणी एवं विनम्र व्यवहार से उनके हृदय को जीतने में समर्थ रहेंगी। इसी प्रकार अपनी मुक्त मित्रता की प्रवृति के कारण देवर एवं ननदों से भी संबध अनुकूल रहेंगे तथा उनकी ओर से Ms. पूर्ण सहयोग अर्जित करने में समर्थ रहेंगी।

यद्यपि Ms. अपनी ओर से समस्त ससुराल पक्ष के लोगों को सन्तुष्ट एवं प्रसन्न करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी परन्तु इन लोगों से इन्हें कोई विशिष्ट सहयोग नहीं मिलेगा तथा संबधो में औपचारिकता अधिक रहेगी।

ससुराल-श्री

Sahil Sabnis तथा सास के संबधों में विशेष मधुरता का भाव नहीं रहेगा तथा आयु में काफी अंतर होने के कारण दोनों के मध्य वैचारिक मतभेद रहेंगे लेकिन इनमें अधिक गंभीरता नहीं रहेगी। यदि Sahil Sabnis तथा इनकी सास आपसी सामंजस्य तथा बुद्धिमता से व्यवहार करें तो संबधों की मधुरता में वृद्धि हो सकती है।

लेकिन ससुर के साथ में Sahil Sabnis के संबध मधुर रहेंगे तथा उनके प्रति मान सम्मान तथा श्रद्धा का भाव रहेगा। साथ ही उनसे पिता के समान ही व्यवहार करेंगे। साथ ही वे भी Sahil Sabnis को पुत्रवत स्नेह तथा वात्सल्य प्रदान करेंगे। Sahil Sabnis समय समय पर अपने ससुर से आवश्यक तथा बहुमूल्य सलाह तथा निर्देश भी प्राप्त करते रहेंगे परन्तु साले तथा सालियों के साथ में संबधों में तनाव तथा मतभेद रहेंगे तथा एक दूसरे के प्रति आलोचना तथा प्रतिद्वन्दिता का भाव रहेगा जिससे आपस में स्नेह सहयोग तथा सहानुभूति के भाव में न्यूनता रहेगी।

इस प्रकार सामान्य रूप से ससुरालवालों का दृष्टिकोण Sahil Sabnis के प्रति अनुकूल ही रहेगा।

अंक ज्योतिष फल

Sahil Sabnis

आपका जन्म दिनांक दो होने से अंक ज्योतिष के आधार पर आपका मूलांक दो होता है। मूलांक दो का स्वामी चन्द्र ग्रह को माना गया है। जिसके प्रभाववश आप एक कल्पनाशील, कलाप्रिय एवं स्नेहशील स्वभाव के व्यक्ति रहेंगे। आपकी कल्पनाशक्ति उच्च कोटि की रहेगी, लेकिन शारीरिक शक्ति आपकी बहुत अच्छी नहीं रहेगी। आपका बुद्धि चातुर्य काफी अच्छा होगा एवं बुद्धि विवेक के कार्यों में आप दूसरों से बाजी मार ले जायेंगे। जिस प्रकार से आपके मूलांक स्वामी चन्द्रमा का रूप एकसा नहीं रहता समयानुसार घटता-बढ़ता रहता है, उसी तरह आप भी अपने जीवन में एक विचार या योजना पर दृढ़ नहीं रहेंगे।

आपकी योजनाओं में बदलाव होता रहेगा एवं एक योजना को छोड़कर दूसरी को प्रारम्भ करने की प्रवृत्ति आपके अन्दर पाई जायेगी। धीरज एवं अध्यवसाय की आप में कमी रहेगी। इससे आपके कई कार्य समय पर पूर्ण नहीं होंगे। आत्म विश्वास की मात्रा आप के अन्दर कम रहेगी एवं स्वयं अपने ऊपर पूर्ण भरोसा नहीं रख पायेंगे, जिससे कभी-कभी आपको निराशा का सामना करना पड़ेगा।

आपकी सामाजिक स्थिति उत्तम दर्जे की रहेगी एवं मानसिक रूप से जिसे आप अपना लेंगे वैसे ही लाभ आपको प्राप्त होंगे। जनता के मध्य आप एक लोकप्रिय व्यक्ति रहेंगे, तथा स्वयं की मेहनत से अपनी सामाजिक स्थिति निर्मित करेंगे।

आपको अवस्थानुसार नेत्र, उदर, एवं मूत्र संबंधी रोगों का सामना करना पड़ेगा, मानसिक तनाव तथा शीतरोग भी परेशान करेंगे। जल से उत्पन्न रोग कफ, सर्दी-जुकाम, सिरदर्द की शिकायतें भी यदाकदा होंगी।

Ms.

आपका जन्म दिनांक 27 होने से दो और सात के योग द्वारा नौ आपका मूलांक होगा। जिसका अधिष्ठाता ग्रह मंगल है। अंक दो का चन्द्र तथा अंक सात का भारतीय मतानुसार केतु एवं पाश्चात्य मतानुसार नेपच्यून ग्रह है।

मूलांक नौ का स्वामी मंगल एवं उनके ग्रहमण्डल का सेनापति होने से आपके अन्दर सेनापतित्व की भावना अधिक रहेगी। आप बचपन से अन्तिम अवस्था तक मुखिया के रूप में रहना पसन्द करेंगी। ऐसा ही रोजगार का क्षेत्र चुनेंगी, जिसमें आप स्वतंत्र रूप से कार्य कर सकें। साहस आपके अन्दर कूट-कूट कर भरा होगा तथा साहसिक कार्यों को करने में आपको विशेष आनन्द की अनुभूति होगी। स्वभाव से आप तेज गति वाली, शीघ्रातिशीघ्र कार्य को अंजाम देने वाली तथा जल्दी एवं फुर्ती से सभी कार्यों को संपादित करने वाली महिला के रूप मे ख्याति अर्जित करेंगी।

साहस आपका मुख्य गुण रहेगा और दुःसाहस अवगुण। कभी-कभी दुःसाहस वश आप अपने जीवन में गहरी चोट भी खायेंगी। अनुशासन पालन करना एवं कराना आपके स्वभाव में रहेगा। इससे आप कठोर हृदय की महिला कहलायेंगी। लेकिन कोई भी व्यक्ति आपकी खुशामद, चापलूसी करके आपसे वांछित कार्य करा सकता है। अतः इस अवगुण के कारण खुशामदी, चापलूस व्यक्तियों से आप जीवन में कई बार हानि भी उठायेंगी। क्रोध की मात्रा आपके स्वभाव में ज्यादा ही रहेगी। इससे आपको हानियों की संभावनाएं प्रायः बनी रहेंगी एवं आपके शत्रुओं, विरोधियों की वृद्धि का कारण आपका क्रोध बनेगा।

अंक दो का स्वामी चद्र एवं सात का नेपच्यून आपकी कल्पना शक्ति, अन्वेषण कार्यों में वृद्धि करेगा। आपको बाग-बगीचे, हरियाली, जंगल, पहाड़ों की सैर करना अच्छा लगेगा।

Sahil Sabnis

भाग्यांक 6 के स्वामी शुक्र ग्रह के प्रभाव से आपका भाग्योदय चौंसठ कलाओ के अन्दर ही होगा। शुक्र कला का दाता है। अतः आपके अन्दर ललित कलाओं में से कुछ कलाओं का समावेश होगा। आप कला के क्षेत्र में, कला के द्वारा जीवन यापन करेंगे। कलात्मक वस्तुएं आपको लाभ प्रदान करेंगी। आप विपरीत योनि के प्रति सहज आकर्षण के अवगुण वश तन-मन एवं धन का व्यय करेंगे। सौन्दर्य की ओर आकर्षण आपकी कमजोरी रहेगा।

आपके कार्य करने के स्थान तथा रहने के स्थान की साज-सजावट बनाये रखने में आपको हमेशा धन व्यय करते रहना होगा। क्योंकि सुसज्जित परिवेश में रहना आपके मनोनुकूल है। आप वस्त्र आभूषण के शौकीन रहेंगे। धन स्थिति आपकी ठीक रहेगी। शान-शौकत बनी रहेगी। सामने वाले व्यक्ति आपको हमेशा धनी समझते रहेंगे, भले ही आप यदा-कदा कड़की के दिनों में चल रहे हों। किसी भी कला के क्षेत्र को आप अपना रोजगार का क्षेत्र चुनते हैं, तो आपकी उन्नति निश्चित ही होगी।

Ms.

भाग्यांक नो का स्वामी मंगल ग्रह को माना गया है। यह ग्रह मण्डल का सेनापति है। रक्त वर्ण का क्षत्रियोचित गुणों का है। इसके प्रभाव से आप स्वतंत्ररूप से रोजगार- व्यापार के क्षेत्र में तरक्की करेंगी। साहस भरे कार्यों से आपका भाग्योदय होगा। आप ऐसे क्षेत्र में अपना रोजगार प्राप्त करेंगी, जहाँ आपकी हुकूमत चलती रहे। मुखिया, नायक, अगुआ के रूप में कार्य करना आपको हमेशा अच्छा लगेगा।

रोजगार के क्षेत्र में आप अपनी स्वतंत्र विचारधारा के द्वारा महत्वपूर्ण उन्नति को प्राप्त करेंगी। यांत्रिक कार्यों में आपकी रुचि रहेगी। एकाधिकार पूर्ण कार्य क्षेत्र आपकी प्रथम पसन्द रहेंगे और आपकी कोशिश रहेगी कि आपने जो कार्यक्षेत्र अपने जीवन यापन हेतु चुना है उसमें किसी का भी हस्तक्षेप न हो । विरोध, बिना वजह का हस्तक्षेप आप बर्दास्त नहीं कर पायेंगी। यांत्रिकी कार्य, चिकित्सा, सेना, संगठन, सामाजिक क्रिया कलापों में आप गहरी रुचि प्रदर्शित करेंगी।

Sahil Sabnis

आपका जन्म चित्रा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में तुला लग्नोदय काल हुआ था। उस क्षण मेदिनीय क्षितिज पर तुला लग्न के साथ-साथ वृश्चिक नवमांश एवं तुला द्रेष्काण भी उदित था। जो यह संकेत देता है कि आप सदैव मात्र विलासिता संबंधी विषयों के प्रति रुचिवान रहेंगे। मुख्यतः वासनात्मक विलास प्रियता आप में विद्यमान रहेगा। आप अपनी पत्नी के साथ आनंद प्राप्ति में अभिभूत रहेंगे। यह संभाव्य है कि आप काम कला की उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अथवा प्रसार हेतु प्रयत्नशील रहेंगे। यह संभाव्य है कि आप कामसूत्र के विशेषज्ञ हो जाएं।

संप्रति यदि आपके लिए कार्य है तो वह कार्य घर से संबंधित है। आप अपने शयन कक्ष को अति आकर्षक बनाने के संबंध में सदैव चिंतित रहेंगे। आप अपनी पत्नी की प्रीति में पूर्ण समर्पित रहकर, पत्नी के आकर्षक के कारण एवं विलासिता संबंधी प्रसन्नता हेतु कुछ भी संभव उपाय करने के लिए सीमोलंघन भी कर सकते हैं। संप्रति आप अपनी संगिनी के प्रति अत्यन्त समर्पित हैं।

आप पूर्णरूपेण अश्वस्त होंगे कि आपको एक अच्छी जीवन संगिनी प्राप्त हुई है। आप अपनी पसंद तथा इच्छानुरूप मिथुन अथवा कुंभ राशि की जीवन संगिनी का चयन करें तथा कर्क, मकर एवं मीन जल तत्व राशि की संगिनी का त्याग करें। आपके लिए यह अनिवार्य है कि आपका घरेलू जीवन सुव्यवस्थित हो। यदि संयोगवश आप अपनी जीवन संगिनी के साथ समान तारतम्य नहीं रहा तो अप्रियता एवं दुःखद अनुभव करेंगे। इस प्रकार आपका पारिवारिक जीवन किसी संभावित घटना के कारण असंतुलित हो जाय तथा आपका संपर्क का परित्याग हो जाए। पुनः आप किस प्रकार गृह व्यवस्था सुनिश्चित करेंगे।

आपके जीवन का अन्य रूचिकर विषय आपके मित्र से संबंध स्थापित करने का है। आपकी इच्छा रहती है कि आपके अच्छी मित्र मण्डली हो। जिसके सहयोग के लिए आप सतत कुछ भी करने के तत्पर रहेंगे। आपका अन्य पक्ष यह है कि आप अपने स्तर से अपने मित्रों को प्रस्तुत करेंगे। वास्तविकता तो यह है कि आपके दृष्टिकोण में ऐसा है कि ये मित्र आपके लिए पीठ की हड्डी अर्थात् रीढ़ की भांति प्रमाणित होंगे।

आपके जन्म संयोजन में चित्रा नक्षत्र एवं तुला जन्म लग्न के प्रभाव से आप अत्यंत ही लाभ एवं जीवन की सभी सुविधाओं से युक्त रहेंगे, परंतु वृश्चिक नवमांश के कुप्रभाव से जहां तक हो अड़चन बाधाओं से युक्त परिस्थिति भी हो सकती है। इस प्रकार की परिस्थिति अन्त में आपकी बाधाओं से मुठभेड़ करा सकती है जो आपके शारीरिक अंगों में रोग उत्पन्न करा कर आपकी समृद्धि में बाधक बन जाएं। अतएव आपके लिए अति अनिवार्य है आप गुप्त रोग जनित कार्य से विक्षिप्त प्रभाव के कारण यह संभाव्य है कि आपको मुंह छिपाना पड़े। अतः आप मंगलवार के दिन उपवास रहने का प्रयास करें-यह आपके स्वास्थ्य के लिए सहायक होगा।

आप व्यक्तिगत रूप से सक्रियता पूर्वक आप में यह क्षमता विद्यमान है कि आप

अपनी शक्ति सम्पन्नता का अच्छा प्रभाव अपने गुणों के अनुसार किसी भी क्षेत्र में अनिवार्य रूप से सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आप कठिन श्रम करने के लिए सुनिश्चित कर सम्पन्नता का लाभांश यथा धन प्राप्ति के अतिरिक्त भूमि भवन का लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

आपको इस प्रकार की आदतों का परित्याग कर सुख आराम की प्राप्ति हेतु व्यवसायिक प्रवृति से पृथक करना चाहिए। आपको प्रेम-प्रसंग हेतु आपने समय का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए।

आपको अपनी उन्नति हेतु सही तरीके से किस प्रकार सरकारी अधिकारी को प्रभावित करने के लिए किस प्रकार का प्रभावशाली बातचीत कर सके। यह जानते हैं। आप अपने लिए कार्य व्यवसाय में ट्रांसपोर्टर का कार्य, औषधि का व्यवसाय एवं कांट्रेक्टर का कार्य कर सकते हैं।

आप किसी भी व्यक्ति के साथ संगठित हो कर अच्छी प्रकार मिलजुल कर साथियों के मध्य प्रख्यात हो जाते हैं। आप धैर्य पूर्वक विनोद प्रिय एवं आनंददायक बाते करके प्रसन्नता प्रदान करते हैं। इस प्रकार आप अपने स्वभाव को क्षति कर सकते हैं तथा जब किसी प्रकार की घटना क्रम में आप हिंसात्मक प्रवृति के हो जाते है। आप इस प्रकार की प्रवृति के प्रति शिक्षा ग्रहण कर विपरीत स्थिति के प्रति अपने में बदलाव करें। इस प्रकार की मनोवृति को रोकना उत्तम होगा। क्योंकि आपकी यह आदत हानिकारक है। आप अपने जीवन के इन तथ्यों पर विचार नहीं कर सके तो आपकी बहुत बड़ी क्षति होकर आपकी वृद्धावस्था आर्थिक रूप से प्रभावित हो जाएगा। आप इस प्रकार की समर्पित भावनाओं को नियंत्रित कर लें। इसलिए कि आप को अपना संपूर्ण जीवन आरामदायक ढंग से बिताना है।

आपके लिए साप्ताहिक वारों में भाग्यशाली दिन शनिवार तथा शुक्रवार है। परन्तु आपको रविवार, गुरुवार, मंगलवार एवं सोमवार के दिनों का परित्याग करना चाहिए क्योंकि ये चारों दिन आपके लिए अनुकूल नही है। बुधवार आप के लिए मध्य फलदायक है।

आपके लिए अंको में अनुकूल अंक 1, 2, 4, 7 एवं 8 अंक उत्तम है। इसके अतिरिक्त अंक 3, 5, 6 एवं 9 अंक उपयुक्त नहीं है।

रंगों में आपके लिए हरा, पीला रंग, आपके लिए रूचि कर एवं व्यवस्थित रंग है। परंतु रंग सफेद लाल, नारंगी आपके लिए अनुकूल एवं शुभ है।

Ms.

आपका जन्म हस्त नक्षत्र के प्रथम चरण में कन्या लग्न के उदयकाल में हुआ था। साथ ही उस समय मेदिनीय क्षितिज पर मेष राशि का नवमांश एवं मकर राशि का द्रेष्काणा भी उदित था। जिसके प्रभाव से यह स्पष्ट हो रहा है कि आप द्विस्वाभात्मक गुणों युक्त हैं। आप धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन कर धर्म मार्ग में प्रवीण हो गई हैं तथा यह सन्देहास्पद विषय है कि आप इस मार्ग के सहारे अपने लक्ष्य को सम्पादित कर सकेंगी।

आप कुप्रवृति से दूसरों को सताकर धन का संचय करेंगी। ऐसा प्रतीत होता है कि आप धन की सुनिश्चितता के लिए किसी भी हद तक जा सकती हैं। आप किसी को भी आकर्षित कर अर्थात प्रलोभन देकर विश्वास दे सकती हैं। आप निष्ठुर उद्दमी एवं परिश्रमी अध्यवसायी प्रवृति की हैं। आप किसी को भी आकर्षित कर अर्थात प्रलोभन देकर विश्वास दे सकती हैं और मनुष्योचित जरूरतों की पूर्ति हेतु आप कोई स्पष्ट चाल चलकर अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु पश्चाताप करोगी। आप प्रसन्नचित एवं भाग्यशाली महिला हैं। आप संसारिक सुख का आनन्द प्राप्त करेंगी। आप अच्छे हृदय से अनेक प्रकार के सामाजिक कार्य में भाग लेगीं। आप सदैव ही सभी के प्रेम सहवास की आकांक्षा रखेंगी।

आप कई वर्षों तक वैवाहिक संस्कार ग्रहण नहीं करेंगी। परन्तु जब आप एक वार अपने जीवन साथी का चयन कर लेंगी तो विवाहोपरान्त उसमें जोंक की तरह चिपक जाएँगी। अर्थात सदैव उसके तन-मन के साथ रहेंगी। यह सत्य है कि आप अपने परिवार के प्रति पूर्ण समर्पित रहेंगी। आपके पति आपके साथ एक पति की अनिवार्य भूमिका अदा करेंगे तथा सदैव ही प्रसन्नता की बिन्दु तलाश कर आपको प्रसन्न रखेंगे। आप अपने पति के माध्यम से सदैव ही अच्छी सन्तान ग्रहण करेंगी। आपको उसके सम्बन्ध में कदापि भी उदासीन एवं चिन्तनीय दशा नहीं रहेगी। वह निश्चित रूप से आपकी सन्तान को शिक्षित कर सुविधापूर्वक जीवन को व्यवस्थित कर देंगे।

आपकी सामुद्रिक विदेश की यात्रा सभी प्रकार से मधुर मंगलमय नहीं होगी। आप स्वयं के बचाव के लिए प्रभावशाली बंधन पाल रखा है जो जीवन को अवरोधक एवं द्वन्दात्मक बना दिया है। आप निश्चित रूप से स्वतः एकाग्रतापूर्वक एकमत से विचार कर किसी भी विषय को सम्पादित करने के लिए सक्षम हैं। परन्तु सम्प्रति आपकी बुद्धि अस्थिर है। आप पुनः अव्यवस्था का प्रतिकार कर लिया है तथा आपको सुव्यवस्थित समय का लाभ प्राप्त होगा। आपकी यह विशेषता है कि आप स्वच्छन्द रहती हैं। आप अपने मस्तिष्क को विषय वस्तु की ओर प्रवृत कर आप पुनः उत्साह पूर्वक कार्यारम्भ करने के लिए तैयार हो जाऐं।

यदि आप अपनी स्वास्थ्य रक्षा चाहती हैं तथा युवावस्था का लाभ प्राप्त करना चाहती हैं। अपनी युवावस्था अर्थात मध्यम आयु का आनन्द एवं लाभ प्राप्त करें। आप अपनी जीवन पद्धति की ह्रासमुखी अवधारणा को बदल सकती हैं। अन्यथा आप ज्यो-ज्यों आयु पथ पर प्रौढ़ता प्राप्त करती जाएंगी। आपको मध्यपान का अनुभव प्राप्त होगा और आपको रुग्नकारी प्रभाव से प्रभावित कर देगा। वैसे आप किसी विषम रोग से आक्रान्त तो नहीं होगीं। परन्तु आपको सिरोवेदना, पीठ के दर्द, ट्यूमर एवं रक्तचाप वृद्धावस्था में कष्टकर न हो। अतः सतर्कता बरतनी चाहिए। सम्प्रति आप दीर्घ जीवन व्यतीत करने के प्रति आश्वस्त रहें। आपको संभावित रोगादि के प्रति सुरक्षात्मक अभिरूचि रखना चाहिए ताकि आपका जीवन रोग मुक्त एवं सुरक्षित रहे।

आपके लिए साप्ताहिक वारों में भाग्यशाली दिन बुधवार तथा शुक्रवार है। परन्तु आपको रविवार, गुरूवार, मंगलवार एवं सोमवार के दिनों का परित्याग करना चाहिए क्योंकि ये चारों दिन आपके लिए अनुकूल नही है। शनिवार आप के लिए मध्य फलदायक है।

आपके लिए वास्तव में अंक 2, 3, 5, 6 एवं 7 अंक अनुकूल हैं तथा अंक 1 एवं 8 अंक आपके लिए त्यागनीय है।

आपके लिए अनुकूल एवं भाग्यशाली रंग पीला, सूआपंखी, हरा रंग है। आपके लिए रंग लाल, बल्लू एवं काला रंग प्रतिकूल है।

Sahil Sabnis

आप अनुराधा नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपकी जन्मराशि वृश्चिक तथा राशि स्वामी मंगल होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण विप्र, गण देव, नाड़ी मध्य, योनि मृग तथा वर्ग सर्प होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "नु" या "नू" अक्षर से होगा।

आप एक पराक्रमी पुरूष होंगे तथा परिश्रमपूर्वक अपने उद्यम संबंधी कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे। आपका कार्यक्षेत्र विस्तृत रहेगा। अतः समय समय पर आप देश विदेश की यात्राएं भी सम्पन्न करेंगे। आप अपने बन्धुजनों तथा समीपस्थ सम्बन्धियों के प्रति अत्यन्त ही स्नेह एवं सहयोगी होंगे तथा इन लोगों की प्रत्येक कार्य के सफलता के लिए सदैव यत्नशील रहेंगे। इस प्रकार उनके हितकार्यों को करने पर आपको आत्मिक संतुष्टि प्राप्त होगी तथा हृदय भी हमेशा प्रसन्नता से युक्त रहेगा।

पुरूषार्थी प्रवासी च बन्धुकार्ये सदोद्यतः।
अनुराधोद्भवो लोके जायते हृष्टमानसः।।
जातक दीपिका

आप अपने सम्भाषण में सदैव मधुर एवं प्रिय वाणी का प्रयोग करेंगे। अतः अन्य लोग आपसे प्रसन्न तथा संतुष्ट रहेंगे। आप एक धनवान व्यक्ति होंगे तथा धन का आपको कभी भी अभाव नहीं रहेगा। आप समस्त भौतिक सुखसंसाधनों से सुसम्पन्न रहेंगे तथा आनन्दपूर्वक इन सुखों का अपने जीवन में उपभोग करेंगे। आप अपने समाज में ख्याति प्राप्त या प्रसिद्ध व्यक्ति होंगे तथा दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि व्याप्त रहेगी। आप समाज के सभी लोगों के लिए पूज्य तथा सम्माननीय व्यक्ति होंगे। इसके अतिरिक्त नाना प्रकार के धनैश्वर्य से सुशोभित रहकर आप एक समर्थवान पुरूष होंगे।

मैत्रे सुप्रियवाग्धनी सुखरतः पूज्यो यशस्वी विभुः।।
जातकपरिजातः

आप एक धनाढ्य व्यक्ति होंगे तथा आपका अधिकांश समय घर से बाहर देश विदेश में निवास करके व्यतीत करेंगे। कभी कभी आप अपनी कार्य व्यस्तता या अन्य लौकिक हेतु से भूख से भी व्याकुल रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप भ्रमण प्रिय होंगे तथा पिकनिक आदि कार्यक्षेत्रों में अपना काफी समय व्यतीत करेंगे।

आढ्यो विदेशवासी क्षुधालुरटनोऽनुराधासु।।
बृहज्जातकम्

आपका शरीर तथा मुखमंडल हमेशा कान्ति से सुशोभित रहेगा। आपकी प्रवृति उत्सव प्रिय रहेगी। अतः समय समय पर पार्टी आदि कार्यक्रमों का आप आयोजन करते रहेंगे।

शत्रुओं का दमन करने में आप हमेशा सक्षम रहेंगे तथा वे आपसे अत्यधिक भयभीत से रहेंगे। साथ ही नाना प्रकार की कलाओं के भी आप ज्ञाता होंगे तथा अपने जीवन काल में विविध एवं विस्तृत धनैश्वर्य का सुखपूर्वक उपभोग करेंगे।

सत्कान्तिकीर्तिश्च सदोत्सवः स्याज्जेतारिपूणां च कला प्रवीणः।
स्यात्संभवे यस्य किलानुराधा समृद्धिशाला विविधा च तस्यः।।
जातकाभरणम्

Ms.

आप कृतिका नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्म राशि वृष तथा राशि स्वामी शुक्र है। आपका गण राक्षस, योनि मेष, नाड़ी अन्त्य, वर्ण वैश्य तथा वर्ग गरूड़ होगा। तृतीय चरण में उत्पन्न होने के कारण आपका जन्म नाम का प्रथम अक्षर "उ" या "ऊ" से आरम्भ होगा यथा- उमा, ऊषा आदि।

कृतिका नक्षत्र में जन्म लेने के कारण आप धन संग्रह में भी रूचि रखेंगी आप कार्य करने में अधिक रूचि नहीं लेंगी तथा आलस्य में पड़ी रहेंगी। नींद आपको अधिक आयेगी परिणाम स्वरूप कई बार आपको भूख से भी पीड़ित होना पड़ेगा। अतः आपको यत्नपूर्वक आलस्य का त्याग करना चाहिए तथा अपने कर्तव्यों का पालन करने में सक्रिय रहना चाहिए।

कृपणः पापकर्माश्च क्षुधालुर्नित्य पीड़ितः।
अकर्म कुरूते नित्यं कृतिका संभवेन्नरः।।
मानसागरी

भोजन करने की मात्रा आपकी अधिक होगी तथा सहनशीलता का आपके अन्दर हमेशा अभाव रहेगा। किसी की भी बात सहन करने की आप में शक्ति नहीं होगी। साथ ही आप तेज से भी युक्त रहेंगी तथा अपने क्षेत्र में विख्यात रहेंगी।

बहुभुक् परदारतस्तेजस्वी कृतिकासु विख्यातः।।
बृहज्जातकम्

आप विद्या से आजीविका अर्जन करेंगी तथा यही विद्या आपका धन होगी। आप तेजस्वी होने के साथ साथ उच्चाधिकार प्राप्त कोई अधिकारी भी हो सकती हैं।

तेजस्वी बहुलोद्भव प्रभुसमोडमूर्खश्च विद्याधनी।
जातक परिजातः

जीवन में सत्य का पालन आपके द्वारा अल्पमात्रा में ही किया जाएगा। निरूददेश्य इधर उधर भ्रमण करना भी आपकी दिनचर्या का प्रमुख भाग होगा। कभी कभी आप कठोर शब्दों का भी प्रयोग करेंगी जिससे लोग आपसे प्रसन्न नहीं होंगे। आप किसी के द्वारा किए गये उपकार को कम ही मानेंगी तथा उसे उस कार्य का अल्प श्रेय ही देंगी। यदा कदा आपके पास धन का अभाव भी बना रहेगा। कर्तव्य पालन करने में भी आप उपेक्षा का भाव रखेंगी अर्थात् जो

आपके कर्तव्य हैं आप उन्हें पूरा नहीं करेंगी फलतः पारिवारिक चिन्ता बढ़ेगी।

क्षुधाधिकः सत्यधनैर्विहीना वृथाटनोत्पन्नमतिकृतघ्नः।
कठोरवाग्गहितकर्म कृत्स्याचेत्कृतिका जन्मनि यस्य जन्तो।।
जातकाभरणम्

Sahil Sabnis

वृश्चिक राशि में उत्पन्न होने के कारण आपका सीना विशाल तथा आँखें बड़ी बड़ी होंगी। साथ ही शरीर में तनिक श्यामलता दृष्टिगोचर होगी। आपके हाथ या पैर में मत्स्यादि का चिन्ह भी होगा तथा हाथ की रेखाएं पक्षी एवं वज्र के समान आकृति वाली होगी। आपको अपने श्रेष्ठ जनों का सहयोग अल्प मात्रा में प्राप्त होगा तथा इनसे संबंध भी अल्प ही रहेंगे। बचपन में आप काफी बीमार भी रहेंगे। बुद्धि से आप अत्यन्त चतुर तथा तीव्र होंगे अतः राज्य या सरकार में किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को प्राप्त करने में सफलता प्राप्त करेंगे। आपके समस्त कार्य क्रूरतापूर्ण तथा कठोरता से सम्पन्न होंगे। अतः आप सेना, पुलिस या सर्जरी आदि विभागों के अधिकारी बनेंगे। कभी कभी आप अपनी दुष्टता का भी परिचय देंगे इससे कई लोग आपके द्वारा दुःख प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त आप गुप्त रूप से कठोरकर्म करेंगे या प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से उसमें सम्मिलित रहेंगे।

पृथुलनयनवक्षा वृहज्जङ्घोरुजानुः।
जनकगुरुवियुक्तः शैशवे व्याधितश्च।।
नरपति कुलपूज्यः पिंगलः क्रूरचेष्टो।
झषकुलिशखगाङ्कश्च छन्नपापोळलिजातः।।
बृहज्जातकम्

आपका उदरभाग तथा मस्तक भी आकार में विस्तृत रहेगा। आपके मन में अन्य जनों की वस्तुओं के प्रति हमेशा लोलुपता का भाव विद्यमान रहेगा। आपके शरीर में लावण्यता या कोमलता का समावेश रहेगा। आप ईश्वर एवं धर्म के प्रति अल्प मात्रा में ही आस्था प्रकट करेंगे। आपकी दाढी तथा नाखूनों में चोटादि के भी चिन्ह विद्यमान रहेंगे। धन धान्य एवं ऐश्वर्य से सुसम्पन्न रहकर जीवन में आप सुखपूर्वक इसका उपभोग करेंगे। विभिन्न प्रकार के कार्यों को करने में आप दक्ष होंगे तथा नित्य कुछ न कुछ कार्य करते रहेगे। बन्धु वर्ग से सहयोग आप को नाम मात्र का ही मिलेगा। आप एक पराक्रमी पुरूष होंगे तथा समस्त सामाजिक जन आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे एवं हृदय से आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आपका स्वभाव भी उग्रता से युक्त रहेगा एवं समाज में अन्य जनों में भी आपकी अनुरक्ति रहेगी। इसके साथ ही सरकार के द्वारा आप धन हानि को भी प्राप्त करेंगे।

लुब्धो वृतोरुजङ्घः कठिनतरर्तनुर्नास्तिकः क्रूरचेष्टः।
चौरो बालो रुगार्तो हतचिबुकनखश्चारुनेत्रः समृद्धः।।
कर्मोद्युक्तः प्रदक्षः परयुवतिरतो बन्धुहीनः प्रमत्तः।
चण्डराजो हृतस्वः पृथुजठरशिरा कीटभे शीतरश्मौ।।
सारावली

आप जीवन में विपुल धन के स्वामी बनेंगे तथा कुटुम्बी जनों के अतिरिक्त अन्य कई जनों को भी आपके द्वारा सुख की प्राप्ति होगी। स्त्रियों के विषय में आप सौभाग्यवान पुरूष

होंगे तथा इनसे पूर्ण आदर, सम्मान, सहयोग तथा लाभ अर्जित करेंगे। साथ ही सरकारी सेवा में भी आपकी नियुक्ति हो सकेगी। दूसरे के धन को प्राप्त करने की इच्छा आपके मन में रहेगी तथा इसके लिए आप हमेशा प्रयत्नशील रहेंगे। आप अत्यन्त ही दृढ़मति के व्यक्ति रहेंगे तथा जिस किसी कार्य के विषय में एक बार सोच लेंगे उसे हमेशा पूर्ण करके ही रहेंगे। साथ ही आप साहसी शूरवीर तथा निर्भय पुरूष भी होंगे।

बहुधनजनभोगी स्त्रीसु सौभाग्ययुक्तः।
पिथुनयति मनस्वी राजसेवानुरक्तः।।
अभिलषति परार्थं नित्यमुद्योगयुक्तो।
दृढ़मतिरतिशूरो वृश्चिको यस्य राशिः।।
जातकदीपिका

जीवन में यदा कदा आप जुआ आदि खेल को भी खेलने की इच्छा करेंगे परन्तु इस सब में आपको अधिक मात्रा में आर्थिक हानि ही होगी। इसके अतिरिक्त उग्रस्वभाव होने के कारण आपकी प्रवृति विवाद युक्त होगी तथा अन्य जनों से आपका विवाद चलता रहेगा।

शशधरे हि सरीसृपगे नरो नृपदुरोदरजातधनक्षयः।
कलिरूचिर्विबलः खलमानसः कृशमनाः शमनापहतो भवेत।।
जातकाभरणम्

आप बचपन से ही इधर उधर भ्रमण करने के प्रिय रहेंगे। आप में अभिमान की भावना भी विद्यमान रहेगी तथा समय समय पर अन्य जनों के समक्ष इसका प्रदर्शन करते रहेंगे। अपने स्वजनों के प्रति आपके मन में स्नेह तथा सहानुभूति रहेगी। साथ ही अपने साहस तथा पराक्रम से धनार्जन करने में पूर्ण रूपेण सक्षम रहेंगे।

बालप्रवासी क्रूरात्मा शूरः पिंगल लोचनः।
परदाररतो मानी निष्ठुरः स्वजने भवेत।।
साहसप्राप्तलक्ष्मीको जनन्यामपि दुष्ट धीः।
धूर्तश्चौरकलारम्भी वृश्चिके जायते नरः।।
मानसागरी

आपके लिए आश्विन मास, प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी तिथियां, रेवती नक्षत्र, व्यतिपात योग, गरकरण, शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा वृष राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदाता रहेंगे। अतः आप 15 सितम्बर से 14 अक्टूबर के मध्य 1,6,11 तिथियों, रेवती नक्षत्र व्यतिपातयोग तथा गरकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण एवं शुभ कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी। साथ ही शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा वृष राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में त्याज्य ही रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के प्रति भी सावधान रहना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या प्रोन्नति में बाधा आदि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता नहीं मिल

रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव शिव का पूजन करना चाहिए तथा नित्य प्रातः शिवालय जाकर विल्वपत्र अर्पण करने चाहिए एवं सोमवार तथा वृहस्पतिवार के उपवास भी करने चाहिए। साथ ही सोना, मूंगा, रक्त वस्त्र, रक्त पुष्प, रक्त चन्दन, गेंहू, तांबा आदि पदार्थो का किसी सुपात्र को श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए तथा मंगल के तांत्रीय मंत्र के किसी योग्य विद्वान के द्वारा कम से कम 7000 जप करवाने चाहिए। इससे आपको मन की शान्ति मिलेगी तथा अन्य अनिष्ट फल भी कम होंगे।

ऊँ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।
मंत्र- ऊं हुँ श्रीं भौमाय नमः।

Ms.

आपका जन्म वृष राशि में हुआ है। अतः आपके गाल स्थूल तथा गौरवर्ण होगा। चेहरे पर लाली भी विद्यमान रहेगी। आपकी आखें सुन्दर मोटी तथा बडी होंगी। स्वभाव से ही आलस्य का समावेश भी आपके अन्दर रहेगा। कुलीन लोगों के प्रति आपकी श्रद्धा तथा मन में सेवा भाव रहेगा। गुरू तथा ब्राहमणों को भी आप सम्मानजनक दृष्टि से देखेंगी तथा उनकी आज्ञा पालन हेतु तत्पर रहेंगी। आपकी प्रकृति वात तथा कफ से युक्त रहेगी। आपका जीवन सामान्य रूप से सुखपूर्वक व्यतीत होगा। सारे कार्य को आप अपनी बुद्धि से सम्पन्न करेंगी तथा दानशीलता का भाव भी आपके अर्न्तमन में विद्यमान रहेगा। आपके बाल काले तथा घुंघराले होंगे।

पृथुकगलकशोणः स्थूलनेत्रः प्रमादी।
कुलजनपरिसेवी प्रायशः सौख्य मेधी।।
द्विजगुरूजनभक्तः श्लेष्मवातस्वभावः।।
सितकुटिलचाग्रो दानशीलो वृषेजः।।
जातकदीपिका

जीवन में समस्त सुखों का आप उपभोग करेंगी। शुद्धता तथा सफाई का आप विशेष ध्यान रखेंगी तथा कार्यों को दक्षता पूर्वक सम्पन्न करेंगी। आपके पास धनार्जन प्रचुर मात्रा में होगा अतः आपकी प्रवृति विलासी होगी। सर्वभौतिक सुख साधनों पर दिल खोलकर व्यय करेंगी। आपका चेहरा तेज से युक्त होगा तथा आप अच्छे मित्रों की मित्र होंगी जो दीर्घकाल तक आपके मित्र बने रहेंगे।

भोगीदाताशुचिर्दक्षो महासत्वो महामतिः।
धनी विलासी तेजस्वी सुमित्रश्च वृषे भवेत।।
मानसागरी

आपका चेहरा तथा जानुभाग दीर्घाकार होगा। जीवन के प्रथम दो भाग आप सामान्य कष्ट तथा परिश्रम से व्यतीत करेंगी परन्तु अन्तिम भाग सुखपूर्वक व्यतीत होंगे। पुरूषवर्ग में आपकी विशेष रूचि रहेगी तथा समय समय पर त्याग की भावना का प्रदर्शन भी करेंगी। आपके अन्दर जो सबसे अच्छा गुण होगा वह क्षमाशीलता का होगा। आप किसी को भी

उसकी छोटी या बड़ी गलती के लिए उदारतापूर्वक क्षमा करेंगी। प्रारम्भिक अवस्था में आपको कष्टों से जूझना पड़ेगा तथा परिश्रम भी अधिक करना पडेगा। आपकी पीठ, चेहरे या बगल में तिल या चोट का निशान हो सकता है।

पृथूरूवक्त्रः कृषिकर्मकृत्स्यात्।
मध्यान्ते सौख्यः प्रमदाप्रियश्च।।
त्यागी क्षमी क्लेशसहश्च गोमान।
पृष्ठास्यपार्श्वेङ्कयुतो वृषोत्थः।।
फलदीपिका

आपकी कन्या संतति पुत्र संतति से अधिक होगी। आपका आचरण उत्तम रहेगा तथा धन एवं ऐश्वर्य का उपभोग करते हुए अच्छी कीर्ति प्राप्त करेंगी।

दाताकान्त यशोधनोरूचरणः कन्या प्रजो गोपतौ।
जातकपरिजातः

आपका वक्षस्थल विशाल तथा विस्तृत रहेगा साथ ही स्वाभाविक रूप से काम भावना की भी प्रवलता रहेगी। आप दूध का दूध और पानी का पानी करने में समर्थ होंगी अर्थात न्याय प्रिय एवं विवेक को जानने वाली होंगी।

व्यूढारस्कोडतदाता धनकुटिलकचः कामुकः कीर्तिशाली
कान्तः कन्या प्रजावान वृषसमनयनो हंसलीला प्रचारः
मध्यान्ते भोग भागी पृथूकटिचरणस्कन्धे जान्वस्यजङ्घः
साकः पार्श्वास्यपृष्ठे ककुदशुभगति क्षान्तियुक्तौ गवीन्दौ।।
सारावली

शनैः शनैः चलना आपको बहुत पसन्द होगा तथा समस्त कार्यों को चतुरता से सम्पन्न करेंगी। आप परोपकारी होंगी तथा यत्न पूर्वक अन्य जनों की भलाई करने का प्रयास करेंगी जिसमें आपको सफलता भी मिलेगी। आप अपने अच्छे कर्मों तथा पुण्य से सुख प्राप्त करके जीवन व्यतीत करेंगी।

स्थिरगति सुमति कमनीयतां कुशलता हि नृणामुपभोगताम्।
वृषगतो हिमगुर्भृशमादिशेत सुकृतिः कृतितश्च सुखानि च।।
जातकभरणम्

आपका स्वरूप सुन्दर एवं दर्शनीय होगा। आपकी विशाल मुखाकृति सुशोभित होगी तथा सविलास गमन प्रिय होंगी। कष्टों को सहने में आप समर्थ रहेंगी। साथ ही आप एक अधिकार सम्पन्न तथा समृद्धशाली महिला होंगी। आपके अन्दर जठराग्नि की अधिकता रहेगी। पुरूष वर्ग में आप प्रिय होंगी तथा युवा एवं वृद्धावस्था में सुख प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त आप अच्छे स्वभाव से युक्त रहेंगी तथा विष्णु एवं शंकर भगवान की आराधना करने वाली होंगी ।

कान्तः खेलगतिः पृथूरूवदनः पृष्ठास्यपार्श्वाङ्कितः।

त्यागी क्लेश सहः प्रभु ककुदवान कन्याप्रजः श्लेष्मलः।।
पूर्वैबन्धुद्यूनात्मजैर्विरहितः सौभाग्ययुक्तः क्षमी।
दीपाग्नि प्रमदाप्रियः स्थिर सुहृन्मध्यान्त सौख्यो गवि।।
बृहज्जातकम्

आपके लिए मार्गशीर्ष मास, पंचमी, दशमी, पूर्णसी, अमावस्या तिथियां, हस्त नक्षत्र, सुकर्मा योग, शकुनि करण, शनिवार, चतुर्थ प्रहर अशुभ फलदायी हैं। अतः 15 नवम्बर से 14 अक्टूबर के मध्य हस्त नक्षत्र, सुकर्मा योग, शकुनिकरण तथा पंचमी, दशमी, पौर्णमासी तथा अमावस्या के दिन कोई भी शुभकार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, लेन-देन आदि कार्य सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि का योग बनेगा। साथ शनिवार, चतुर्थ प्रहर एवं धनु राशिस्थ चन्द्रमा को शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इस समय पर शारीरिक सुरक्षा का भी पूर्णरूपेण ध्यान रखें।

यदि समय आपके प्रतिकूल चल रहा हो । मानसिक एवं शारीरिक व्याकुलता हो रही हो, व्यापार, नौकरी या प्रोन्नति में किसी भी प्रकार का व्यवधान उत्पन्न हो रहा हो ऐसे समय पर आपको सन्तोषी माता की पूजा करनी चाहिये तथा व्रत रखने चाहिये । ऐसा करने से आपकी व्याकुलता कम होगी तथा लाभ योग बनेंगे । साथ ही श्वेत वस्त्र, चावल, शहद, कर्पूर, श्वेतपुष्प आदि पदार्थों का भी दान करें साथ ही शुक्र के तांत्रीय मंत्र के 20 हजार जप करवाने चाहिए। ऐसा करने से अशुभ फलों में कमी तथा शुभ फलों में वृद्धि होगी। आप अपने इष्ट के रूप में भगवान शंकर या भगवान विष्णु की आराधना भी कर सकती हैं।

ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र- ऊँ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।

पाया विचार

Sahil Sabnis

आप का जन्म रजत पाद में हुआ है। अतः धन सम्पति से आप सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे तथा जीवन में आपके पास इसका अभाव नहीं रहेगा। साथ ही समस्त भौतिक सुखसंसाधनों को आप प्राप्त करेंगे एवं सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा दानशीलता की प्रवृति भी आपके मन में नित्य विद्यमान रहेगी। साथ ही सहनशीलता के भाव से भी आप युक्त रहेंगे। आप अपने सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में प्रायः सफलता ही अर्जित करेंगे। आप की शारीरिक कान्ति दर्शनीय रहेगी तथा मुखाकृति सुन्दर एवं आकर्षक होगी। समाज में आप एक आदरणीय एवं श्रद्धेय पुरूष समझें जाएंगे। आप विस्तृत परिवार के भी स्वामी होंगे। अपने सम्भाषण में आप नित्य प्रिय एवं मधुर वाणी का उपयोग करेंगे तथा सभी प्रकार के सांसारिक सुखों का प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे। विद्याध्ययन में आप रूचिशील रहेंगे तथा एक विद्वान के रूप में भी आप ख्याति प्राप्त करेंगे। इसके साथ ही आप अल्प मात्रा में बोलना पसन्द करेंगे।

Ms.

रजत पाद में उत्पन्न होने के कारण आप जीवन में सपरिवार धन सम्पति से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगी। पुराणादि शास्त्रों के श्रवण करने के लिए भी आप नित्य तत्पर एवं उत्सुक रहेंगी। आपके सभी कार्य पुण्य के लिए समर्पित रहेंगे तथा तीर्थयात्रा करने के लिए भी सदैव यत्नशील एवं उद्यत रहेंगी। आप समस्त भौतिक सुखसंसाधनों एवं ऐश्वर्य से सम्पन्न रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इसका उपभोग भी करेंगी। साहित्य या काव्यशास्त्रादि के प्रति भी आपका आकर्षण रहेगा एवं समयानुसार आप इनका अध्ययन भी करेंगी। आप बहुमूल्य रत्नों एवं धातुओं से भी सुसम्पन्न रहेंगी। आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य प्रथम प्रयत्न में ही सफल हो जाया करेंगे। बन्धुवर्ग से आपका विशेष स्नेह का भाव रहेगा एवं उनसे नित्य सहयोग एवं सहायता प्राप्त करती रहेंगी। आप एक सौभाग्यशाली महिला भी होंगी एवं धार्मिक तथा देव पितृ संबंधी कार्यों में नित्य निष्ठावान होंगी। इसके अतिरिक्त आप हमेशा सद्गुणों से सम्पन्न रहेंगी एवं गुणवान पुत्रों से प्रसन्नता प्राप्त करेंगी।

Sahil Sabnis

देवगण में पैदा होने के कारण आप अत्यन्त ही प्रिय एवं मधुरवाणी बोलने वाले होंगे। साथ ही आपकी बुद्धि अत्यन्त ही सरल होगी। आपकी मुख्य विशेषता यह रहेगी कि अपनी बातों का प्रस्तुतीकरण आप सुगमतापूर्ण ढंग से करेंगे तथा अन्य जनों के विचारों को भी सरलता से ग्रहण करेंगे। आप हमेशा अल्प मात्रा में सात्विक भोजन करना पसन्द करेंगे। अन्य लोगों के गुणों के विषय में आपको पूर्ण ज्ञान रहेगा तथा स्वयं भी श्रेष्ठ पुरूषों द्वारा प्रतिपादित उत्तम गुणों से युक्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त धन धान्य ऐश्वर्य एवं वैभव का भी आपको जीवन में अभाव नहीं रहेगा तथा सुखपूर्वक इसका उपभोग करने में सफल रहेंगे।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

आपका सौन्दर्य दर्शनीय होगा तथा दानशीलता की प्रवृति भी आप में विद्यमान रहेगी जिसका प्रदर्शन आप समयानुसार करते रहेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा सादगी पूर्ण ढंग से जीवन व्यतीत करना उपयुक्त समझेंगे। साथ ही आप एक विद्वान के रूप में समाज में प्रसिद्ध तथा सम्माननीय रहेंगे।

सुन्दरो दानशीलश्च कान्तिमान सरलः सदा।
अल्प भोगी महाप्रज्ञो नरो देवगणो भवेत।।
मानसागरी

Ms.

आपका जन्म राक्षस गण में हुआ है। अतः आप कभी कभी अधिक बातें करने वाली होंगी। आपके हृदय में करूणा के भाव की अल्पता रहेगी। आप छोटी छोटी बातों पर शीघ्र ही क्रोधित तथा उत्तेजित होंगी। अपने कार्य सिद्धि के लिए आप किसी भी कार्य को करने के लिए तत्पर रहेंगी। आप बलवान होंगी परन्तु प्रवृति आपकी वाद विवाद युक्त होगी। प्रत्येक से आप छोटी छौटी बातों में उलझेंगी। परिणाम स्वरूप अधिकांश लोगों से आपका शत्रुता तथा विरोध का भाव रहेगा। अतः अपने स्वभाव पर नियंत्रण रखें एवं अन्य लोगों से बुद्धिमता वार्तालाप करें जिससे परस्पर मधुर संबंध बने रहें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

आप प्रमेह तथा उन्माद रोग से भी ग्रस्त हो सकती हैं। आपका चेहरा भी देखने में अल्प आकर्षक होगा। आप कभी कभी कठोर वाणी बोलेंगी जिससे अन्य जनों को कष्ट होगा।

अतः यत्नपूर्वक वार्तालाप मधुर शब्दों को अन्य जनों के साथ उपयोग करें।

उन्मादी भीषणाकारः सर्वदाकलहप्रियः।
पुरूषोदुस्सहब्रूते प्रमेही राक्षणे गणे।।
मानसागरी

योनी फलादेश

Sahil Sabnis

मृग योनि में पैदा होने के कारण आप स्वच्छन्द प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा बिना किसी हस्तक्षेप के अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करना श्रेष्ठ समझेंगे। आपका मन शान्त होगा तथा झगड़ा आदि करने की प्रवृति आपके मन में नहीं रहेगी। साथ ही आपकी आजीविका सद्कार्यों के द्वारा सम्पन्न होगी। आप एक सत्यवादी व्यक्ति होंगे तथा धर्म के प्रति आपका पूर्ण विश्वास एवं श्रद्धाभाव रहेगा। साथ ही इसका नियमपूर्वक पालन करने में भी आप प्रयत्नशील रहेंगे। आपका स्वजनों के प्रति अत्यन्त ही स्नेहशील व्यवहार रहेगा एवं उनका यत्नपूर्वक हमेशा हितसाधन करने में रत रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप एक बहादुर व्यक्ति होंगे तथा समाज में आपका पूर्ण प्रभाव स्थापित रहेगा।

स्वच्छन्दः शान्तसद्वृतिः सत्यवान स्वजनप्रियः।
धार्मिको रणशूरश्च यो नरो मृगयोनिजः।।
मानसागरी

Ms.

आप मेष योनि में उत्पन्न हुई हैं। अतः आप उत्साह से परिपूर्ण रहेंगी। जो भी कार्य प्रारम्भ करेंगी उत्साहपूर्वक उसे सम्पन्न करेंगी यह आपका नैसर्गिक गुण होगा। आप पराक्रमी तथा वाद-विवाद करने में विशेष निपुण होंगी। आप आजीवन धन एवं ऐश्वर्य से युक्त रहेंगी तथा किसी भी वस्तु का आपको अभाव नहीं रहेगा। स्वभाव से ही आपके अन्दर परोपकार की भावना निहित होगी तथा आप इसके लिए आजीवन प्रयत्नशील रहेंगी।

महोत्साही महायोद्धा विक्रमीविभवेश्वरः।
नित्य परोपकारी च मेषयोनौ भवेन्नरः।
मानसागरी

Sahil Sabnis

ग्यारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक धनी, बलवान्, सुखी, स्वाभिमानी, तपस्वी, मितभाषी, सदाचारी, योगी, अल्पसन्तति एवं उदररोगी होता है।

सिंह राशि में रवि हो तो जातक सत्संगी पुरुषार्थी, योगाभ्यासी, वनविहारी, क्रोधी, गम्भीर, उत्साही, तेजस्वी एवं धैर्यशाली होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः आप पिता के हमेशा प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। धनैश्वर्य एवं सम्मान से वे हमेशा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके धनार्जन के साधनों की उन्नति में भी वे आपको प्रायः सहयोग तथा निर्देश प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। आप जीवन में उनको हमेशा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

Ms.

पंचमभाव में सूर्य हो तो जातक अल्पसन्तितिवान्, बुद्धिमान्, सदाचारी, रोगी, दुखी, शीघ्र क्रोधी एवं वंचक होता है।

मकर राशि में रवि हो तो जातक बहुभाषी, चंचल, झगड़ालू, दुराचारी, लोभी एवं परिश्रमी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य पंचम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा किंचित शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करते रहेंगे। धनैश्वर्य का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सिद्ध करने के लिए अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपको वे वांछित आर्थिक सहयोग भी देते रहेंगे जिससे आप को कोई भी कष्ट न हो।

आप भी उनके प्रति पूर्ण आदर का भाव रखेंगी तथा उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आप के मध्य आपसी मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनिक तनाव तथा कटुता उत्पन्न होगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप उनकी सुखसुविधा का पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा आवश्यकतानुसार उन्हें आर्थिक या अन्य रूप से अपना सहयोग प्रदान करेंगी।

Sahil Sabnis

द्वितीयभाव में चन्द्रमा हो तो जातक परदेशवासी, भोगी, सुन्दर मधुरभाषी, भाग्यवान्, सहनशील एवं शान्तिप्रिय होता है।

वृश्चिक राशि में चन्द्रमा हो तो जातक अपने माता-पिता, भाइयों आदि से अलग रहने वला, नास्तिक, लोभी, बन्धुहीन, परस्त्रीरत, झगड़ालू, स्पष्ट वक्ता, बुरे विचार रखने वाले, दुःखी, हठी, अनैतिक विचारों वाला एवं धनी होता है।

आपके जन्भ काल में चन्द्रमा द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं कोई विशेष शारीरिक रूग्णता नहीं रहेगी। वे आपको हमेशा धनार्जन एवं विद्याध्ययन संबंधी कार्यों में पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही आपकी पारिवारिक उन्नति एवं पालन करने में भी उनकी मुख्य भूमिका रहेगी यदा कदा वे आपको नैतिक शिक्षा भी देंगी तथा आपके प्रति उनके हृदय में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। इसके साथ ही जीवन में कई महत्वपूर्ण कार्यों की सिद्धि आप उनके सहयोग से ही करेंगे।

आप की भी माता के प्रति हादिक श्रद्धा रहेगी एवं उनकी आज्ञा पालन करने में आप गौरव की अनुभूति करेंगे। साथ ही जीवन में सर्वप्रकार से उनकी सेवा करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे तथा समयानुसार उनको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करते रहेंगे। अतः आपकी परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं जीवन में एक दूसरें की सहायता एवं सहयोग का आदान प्रदान करके सुखानुभूति करेंगे।

Ms.

नवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान्, विद्याप्रिय, चंचल, न्यायी, प्रवास-प्रिय, कार्यशील,धर्मात्मा. सन्तति-सम्पत्तियुक्त सुखी, साहसी एवं अल्पभ्रातृवान् होता है।

वृष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सुन्दर प्रसन्नचित्तवाला, कामी, दान करने वाला, अधिक कन्या सन्तति वाला, शान्त, कफरोगी, सुखी, कुशा बुद्धिवाला, सुगठित शरीरवाला, धनी, सन्तोषी, चंचलमन, परलिंगी के प्रति आकर्षण, खाने-पीने का शौकीन एवं लोकप्रिय होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति नवम भाव में स्थित है। अतः आपकी माता जी का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आयु भी दीर्घ रहेंगी। माता की आप अत्यन्त ही प्रिय रहेंगी तथा जीवन में उनसे पूर्ण सहयोग तथा सुख संसाधनों को प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगी तथा आपको वांछित आर्थिक तथा अन्य सहायता को देने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी उनका विशेष योगदान रहेगा।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा भाव रखेंगी एवं सम्मान पूर्वक उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। साथ ही आप आजीवन उनकी सुख सुविधा के लिए भी प्रयत्नशील रहेंगी। आप एक दूसरें से हमेशा सहमत रहेंगी एवं मतभेदों का प्रायः अभाव

ही रहेगा। अतः आपके परस्पर संबंध मधुरता से युक्त रहेंगे इस प्रकार आप एक दूसरें के लिए शुभ रहेंगी।

Sahil Sabnis

द्वितीय भाव में मंगल हो तो जातक कटुभाषी, नेत्रकर्ण रोगी, कटुतिक्त रसप्रिय, धर्मप्रेमी, चोर से भक्ति, कुटुम्ब क्लेश वाला, पशुपालक, निर्बुद्धि एवं निर्धन होता है।

वृश्चिक राशि में मंगल हो तो जातक नीति-दक्ष, अच्छी स्मरण शक्ति ईर्ष्यालु स्वभाववाला, बहुतहठी, अभिमानी, चोरों का नेता, पातकी एवं दुराचारी होता है।

आप के जन्म काल में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव विद्यमान रहेगा। धनार्जन एवं विद्यार्जन संबंधी कार्यों में वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही जीवन में अन्य महत्वपूर्ण एवं शुभ कार्यों में भी आपको उनका पूर्ण सहयोग एवं सद्भाव प्राप्त होगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा उनमें आपसी मतभेदों के कारण अनिश्चित काल के लिए कटुता या तनाव का वातावरण होगा। जीवन में आप हमेशा भाई बहिनों का सुख दुःख में ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से हमेशा उन्हें पूर्ण आर्थिक एवं अन्य रूप में सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

Ms.

तृतीयभाव में मंगल हो तो जातक कटुभाष, भ्रतृकष्टकारक, प्रदीप्त जठराग्निवाला, बलवान्, बन्धुहीन, सर्वगुणी, साहसी, धैर्यवान् प्रसिद्ध एवं शूरवीर होता है।

वृश्चिक राशि में मंगल हो तो जातक नीति-दक्ष, अच्छी स्मरण शक्ति ईर्ष्यालु स्वभाववाला, बहुतहठी, अभिमानी, चोरों का नेता, पातकी एवं दुराचारी होता है।

आपके जन्म के समय में मंगल की स्थिति तृतीय भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा शक्त, साहस एवं पराक्रम का भाव उनमें विद्यमान रहेगा। साथ ही यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी उनको अनुभूति होगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में समस्त शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्य क्षेत्र में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख के समय में भी आप उनसे पूर्ण सहायता प्राप्त करेंगी।

आप भी उनके प्रति हमेशा स्नेह का भाव रखेंगी एवं उनकी अवसरानुकूल सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इसमें तनिक कटुता या तनाव भी आयेगा लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वयं ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप उनके सुख दुःख की सहयोगी रहेंगी एवं यथाशक्ति उनको अपनी ओर से आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग देती रहेंगी।

Sahil Sabnis

ग्यारहवें भाव में बुध हो तो जातक ईमानदार, सुन्दर, पुत्रवान्, सरदार, गायनप्रिय, विद्वान्, प्रसिद्ध, धनवान्, सदाचारी, योगी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं विचारवान् होता है।

सिंह राशि में बुध हो तो जातक मिथ्याभाषी, कुकर्मी, ठग, कामुक, भ्रमणशील, अभिमानी, वक्ता, कम उम्र में विवाह, आवेशपूर्ण स्वभाव एवं सरकारी नौकर होता है।

Ms.

षष्ठभाव में बुध हो तो जातक विवेकी, कलहप्रिय, वादी, रोगी, आलसी, अभिमानी, परिश्रमी, कामी, दुर्बल एवं स्त्रीप्रिय होता है।

कुम्भ राशि में बुध हो तो जातक कुटुम्बहीन, दुःखी, अल्पधनी, झगड़ालू, प्रसिद्ध निर्बल स्वास्थ्य एवं प्रगति करने वाला होता है।

Sahil Sabnis

तृतीयभाव में गुरु हो तो जातक शास्त्रज्ञ, जितेन्द्रिय, लेखक, कामी, प्रवासी, स्त्रीप्रिय, व्यवसायी, मन्दाग्नि, वाहनयुक्त, पर्यटनशील, विदेशप्रिय, ऐश्वर्यवान बहुत भाई बहन, आस्तिक एवं योगी होता है।

धनु राशि में गुरु हो तो जातक धनी, प्रभावशाली, विद्वान्, विश्वस्त, सज्जन, दानशील संगठनकर्त्ता, अच्छा वक्ता, धर्माचार्य, दम्भी, रतिप्रेमी एवं धूर्त होता है।

Ms.

सप्तमभाव में गुरु हो तो जातक सुन्दर, धैर्यवान्, भाग्यवान्, प्रवासी, सन्तोषी, स्त्रीप्रेमी, परस्त्रीरत, ज्योतिषी, नम्र, विद्वान् वक्ता एवं प्रधान होता है।

मीन राशि में गुरु हो तो जातक लेखक, शास्त्रज्ञ, गर्वहीन, राजमान्य, शान्त, व्यवहार कुशल, दयालु, साहित्य प्रेमी, विरासत में धन सम्पत्ति प्राप्त करने वाला, साहसी एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

Sahil Sabnis

बारहवें भाव में शुक्र होतो जातक धनवान्, परस्त्रीरत, बहुभोजी, शत्रुनाशक, मितव्ययी, आलसी, पतित, धातुविकारी, स्थूल एवं न्यायशील होता है।

कन्या राशि में शुक्र हो तो जातक, सुखी, भोगी, अतिकामी, सभापण्डित, रोगी, वीर्यहीन, सट्टे द्वारा धननाशक एवं अवैध सम्बन्ध रखने वाला होता है।

Ms.

षष्ठभाव में शुक्र हो तो जातक मितव्ययी, शत्रुनाशक, स्त्रीप्रिय, स्त्रीसुखहीन, बहुमित्रवान्, वैभवहीन, दुराचारी, मूत्ररोगी, दुखी एवं गुप्तरोगी होता है।

कुम्भ राशि में शुक्र हो तो जातक शान्तिप्रिय, दूसरों को सहायता करने वाला, सच्चरित्र, सुन्दर, लोकप्रिय, चिन्ताशील एवं रोग से सन्तप्त होता है।

Sahil Sabnis

लग्न (प्रथम) में शनि मकर, कुम्भ तथा तुला का हो तो धनाढ्य, सुखी, धनु और मीन राशियों में हो तो अत्यन्त धनवान् और सम्मानित एवं अन्य राशियों का हो तो अशुभ होता है।

तुला राशि में शनि हो तो जातक राजनीति में रुचि रखने वाला, प्रसिद्धनेता, धनी, सम्मानित शक्तिशाली, दानशील, परस्त्रियों में रुचि, सुभाषी, यशस्वी, स्वाभिमानी एवं उन्नतिशील होता है।

Ms.

चतुर्थभाव में शनि हो तो जातक अपयशी, बलहीन, धूर्त, कपटी, शीघ्रकोपी, कृशदेही, उदासीन,वातपित्तयुक्त एवं भाग्यवान् होता है।

धनु राशि में शनि हो तो जातक व्यवहारज्ञ, पुत्र की कीर्ति से प्रसिद्ध सदाचारी, वृद्धावस्था में सुखी, सक्रिय, चतुर शान्तिप्रिय, दुःखी विवाहित जीवन एवं धनी होता है।

Sahil Sabnis

अष्टम भाव में राहु हो तो जातक क्रोधी, व्यर्थभाषी, मूर्ख, उदररोगी, कामी, पुष्टदेही एवं गुप्तरोगी होता है।

वृष राशि में राहु हो तो जातक सुखी, चंचल, कुरूप, आवेशपूर्ण स्वभाव एवं धनी होता है।

Ms.

सप्तम भाव में राहु हो तो चतुर, लोभी, दुराचारी, दुष्कर्मी वातरोगजनक, भ्रमणशील, व्यापार से हानिदायक एवं स्त्रीनाशक होता है।

मीन राशि में राहु हो तो जातक आस्तिक, कुलीन, शान्त, कलाप्रिय और दक्ष होता है।

ग्रह फल – केतु

Sahil Sabnis

द्वितीय भाव में केतु हो तो जातक अस्वस्था, कटुवचन बोलने वाला, मुंह के रोग, राजभीरु एवं विद्रोही होता है।

वृश्चिक राशि में केतु हो तो जातक धूर्त, वाचाल, कुष्ठरोगी, क्रोधी निर्धन एवं व्यसनी होता है।

Ms.

लग्न (प्रथम) में केतु हो तो जातक चंचल मूर्ख दुराचारी, भीरु तथा वृश्चिक राशि में हो तो सुखकारक, धनी एवं परिश्रमी होता है।

कन्या राशि में केतु हो तो जातक सदारोगी, मूर्ख, मन्दाग्निरोग एवं व्यर्थवादी होता है।

Sahil Sabnis

आपके जन्म समय में लग्न में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। सामान्यतया तुला लग्न में उत्पन्न जातक सुन्दर एवं सुडौल शरीर के व्यक्ति होते हैं तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक रहता है फलतः अन्य जन उनसे प्रभावित रहते हैं। इनकी प्रवृति हास्य युक्त होती है तथा बच्चों के प्रति इनके मन में निश्छल स्नेह का भाव विद्यमान रहता है। सुन्दर वस्तुओं एवं दृश्यों के प्रति इनका स्वभाविक आकर्षण होता है। ये अन्य जनों को अपनी ओर से कोई कष्ट नहीं देते हैं तथा सबसे समानता का व्यवहार करते हैं जिससे इनको सामाजिक मानप्रतिष्ठा तथा यश की प्राप्ति होती है। कला के प्रति इनका भावनात्मक लगाव रहता है तथा सत्कार्यों से अपनी जीविका अर्जित करते हैं। ये नीतिज्ञ होते हैं फलतः राजनीति आदि में नेतृत्व आदि की प्राप्ति भी कर सकते हैं परन्तु इनका कोई निश्चित सिद्धांत नहीं होता तथा समयानुसार ये परिवर्तन करते रहते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा तथा व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा फलतः अन्य सामाजिक लोग आपसे प्रभावित होंगे। मानसिक शांति तथा अन्य मनोरंजन के लिए आप हंसी मजाक भी करने वाले होंगे जिससे अन्य जन आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। प्राकृतिक सुन्दरता के प्रति आपका आकर्षण होगा तथा इसी परिपेक्ष्य में आप मनोहर स्थानों का भ्रमण भी करते रहेंगे। कला के प्रति आपकी तीव्र रूचि रहेगी तथा इस क्षेत्र में सक्रियता से आप सफलता भी प्राप्त कर सकते हैं। कार्यक्षेत्र में भी आपका प्रभाव रहेगा तथा अधिकारी एवं सहयोगी वर्ग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे फलतः आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे तथा जीवन में धनैश्वर्य एवं सुख संसाधनों को अर्जित करके सुखपूर्वक उनका उपभोग करेंगे।

लग्न में शनि की स्थिति के प्रभाव से आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा पराक्रम एवं परिश्रमपूर्वक आप अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगे। इससे आपको कार्यों में सफलता मिलेगी तथा धन वैभव एवं लाभ अर्जित करके आर्थिक रूप से सुदृढ़ता को प्राप्त करेंगे जिससे समाज में आप एक प्रभावी व्यक्ति के रूप में जाने जाएंगे। पिता के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा उनकी सेवा करने में तत्पर होंगे। परिवार के मान सम्मान एवं मर्यादा की वृद्धि में भी आपका प्रमुख योगदान रहेगा तथा सभी लोग आपको यथोचित आदर प्रदान करेंगे ।

आप एक विद्वान पुरूष होंगे तथा विचारक के रूप में भी आपकी छवि रहेगी। आप में दक्षता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा अपनी चतुराई से इच्छित उन्नति एवं सफलता अर्जित करने में सफल होंगे। सत्कर्मों को करने में आपकी रूचि होगी तथा कला संगीत या अन्य शास्त्रों का आपको पूर्ण ज्ञान रहेगा। संतति से आप युक्त रहेंगे तथा वे भी समाज में यश एवं प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे।

धर्म के प्रति भी आपकी श्रद्धा होगी तथा समय के अनुसार धार्मिक अनुष्ठानों तथा कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगे इससे समाज में आपको प्रतिष्ठा मिलेगी एवं मानसिक शांति की भी अनुभूति करेंगे। मित्र वर्ग में आप प्रिय एवं आदरणीय रहेंगे तथा उनसे इच्छित सम्मान एवं सहयोग मिलता रहेगा।

Ms.

आपके जन्म समय में लग्न में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। सामान्यतया कन्या लग्न में उत्पन्न जातक अध्ययनशील प्रवृति के होते हैं तथा विभिन्न विषयों के ज्ञानार्जन में रूचिशील रहते हैं। अतः समाज में एक विद्वान के रूप में इनकी प्रतिष्ठा रहती है। सदगुणों से ये युक्त रहते हैं तथा भाग्य इनका प्रबल रहता है एवं सौभाग्य से इनके सभी सांसारिक महत्व के कार्य सिद्ध होते हैं फलतः इच्छित धनैश्वर्य एवं भौतिक सुखों का उपभोग करने में समर्थ रहते हैं। ये बुद्धिमान व्यक्ति होते हैं तथा अपनी तीव्र बुद्धि के द्वारा कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान करने में समर्थ रहते हैं। अतः सरकारी कार्यो या प्रशासनिक क्षेत्रों में इनका महत्वपूर्ण योगदान रहता है। इनमें भावुकता की न्यूनता रहती है तथा सभी महत्वपूर्ण कार्य ये बुद्धिबल से सम्पन्न करते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगे। अध्ययन के प्रति आप रूचिशील रहेंगी तथा लेखन मनोविज्ञान या आलोचना के क्षेत्र में सफलता अर्जित करेंगी। आपकी बुद्धि भी तीव्र होगी तथा विषम समस्याओं को समझने तथा समाधान करने में समर्थ होंगी। अतः सरकारी या प्रशासनिक क्षेत्रों में आप कार्यरत हो सकते हैं। यदि आप नौकरी या कोई कार्य नहीं करती है तो उपरोक्त योग आपके पति पर घटित होंगे।

आप एक गुणवान महिला होंगी तथा समाज में सम्मानित एवं प्रतिष्ठित रहेंगी। स्वभाव से आप शांत एवं उदार होंगी तथा सभी कार्य बुद्धिमतापूर्ण ढंग से सम्पन्न होंगे। जीवन में धनैश्वर्य एवं सुख संसाधनों का उपयोग करते हुए सुख एवं शांति की अनुभूति करेंगी।

लग्न में केतु की स्थिति के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा मानसिक उद्विग्नता से आपको परेशानी की अनुभूति हो सकती है। आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा सुख पूर्वक समय व्यतीत करेंगी। बचपन में आपका समय संघर्षपूर्ण रहेगा परन्तु युवावस्था के बाद आप सुख एवं समृद्धि प्राप्त करने में समर्थ होंगी। संतति से आप युक्त रहेंगी तथा उनसे आपको सुख एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा। आप एक पराक्रमी महिला होंगी तथा स्वपराक्रम परिश्रम एवं योग्यता से सांसारिक कार्यो में सफलता प्राप्त करेंगी। साथ ही कार्यक्षेत्र में भी उन्नति एवं प्रतिष्ठा अर्जित करेंगी।

आप में तेजस्विता का भाव भी विद्यमान रहेगा। अतः यदा कदा आप उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगी। अन्य सामाजिक जनों के प्रति आपके मन में उदारता का भाव होगा तथा समयानुसार परोपकार सम्बन्धी कार्यो में भी इच्छा रहेगी। कार्यक्षेत्र में आप प्रभावशाली महिला होंगी तथा सभी लोग आपको यथोचित आदर प्रदान करेंगे।

धर्म के प्रति आपकी सामान्य श्रद्धा रहेगी तथा अल्प मात्रा में ही धार्मिक कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगी। मित्र वर्ग में आपकी लोकप्रियता रहेगी तथा उनसे आपको अनुकूल लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा। इसके साथ ही आप अपने पराक्रम तेजस्विता, बुद्धिमता तथा योग्यता से इच्छित सम्मान प्राप्त करेंगी सुखपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगी।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

Sahil Sabnis

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में वृश्चिक राशि उदित हुई है जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में अपने प्रयत्न एवं परिश्रम से धनार्जन करने में सफल रहेंगे। आपको पैतृक सम्पति की प्राप्ति अल्प मात्रा में ही होगी परन्तु बहुमूल्य रत्न तथा धातुओं को आप अपनी योग्यता तथा लगन से अर्जित करने में अवश्य सफलता प्राप्त करेंगे। आपकी रूचि जायदाद या भूमि संबंधी क्रय विक्रय या सम्बन्धित कार्यो में रहेगी जिससे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ होगा। आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा परिवार के सहयोग से जीवन में इच्छित उन्नति तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। लेकिन आपात्काल में स्वयं को व्यवस्थित करने में असुविधा की अनुभूति करेंगे।

पारिवारिक जनों की प्रसन्नता तथा सुविधा कार्यो में आप सतत यत्नशील रहेंगे तथा पारिवारिक शान्ति एवं सुख संसाधनों पर काफी व्यय करेंगे जिससे वे लोग सन्तुष्ट रह सकें। आपकी वाणी प्रभावशाली रहेगी तथा अन्य जनों को तर्क पूर्ण वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे तथा आपसे लोग सहमत भी रहेंगे। मिष्ठान के आप प्रिय रहेंगे तथा इसके भक्षण से आपको किंचित प्रसन्नता प्राप्त होगी लेकिन प्रौढ़ावस्था में आप नेत्र संबंधी कष्ट प्राप्त कर सकते है इसके अतिरिक्त धार्मिक परम्पराओं का आप पूर्ण पालन करेंगे तथा शुभ एवं मंगल कार्य भी समय समय पर करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सज्जन पुरूषों के प्रति आपके मन में हमेशा आदर का भाव रहेगा।

Ms.

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में तुला राशि उदित हुई है जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आपका पारिवारिक जीवन सुख शान्ति एवं समृद्धि से युक्त रहेगा तथा सभी पारिवारिक जन परस्पर मिल जुलकर रहेंगे तथा एक दूसरे को अपना पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करेंगे। आपकी वाणी अत्यंत ही मधुर एवं प्रभावशाली रहेगी तथा अन्य जनों को अपनी वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगी तथा अपने वाक्चातुर्य से कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सिद्ध करने में भी सम्पन्न रहेंगी। इसके साथ ही प्रौढ़ावस्था में आप अल्प मात्रा में नेत्र संबंधी कष्ट की भी अनुभूति कर सकती हैं।

धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा धार्मिक तथा शुभ एवं मांगलिक कार्यो को समय समय पर सम्पन्न करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त अन्य उत्सवों की भी प्रिय होंगी तथा ऐसे उत्सवों के आयोजन भी समय समय पर होते रहेंगे। जीवन में आपको पैतृक सम्पति भी अर्जित होगी। साथ ही अपने परिश्रम पराक्रम एवं सौभाग्य से भी वांछित मात्रा में धनऐश्वर्य एवं वैभव अर्जित करने में सफल रहेंगी। परिवार को सुख सुविधा तथा प्रसन्नता प्रदान करना आपका मूल उददे्श्य रहेगा। समाज में आप एक आदरणीया महिला होंगी तथा सौभाग्य से अपना जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करेंगी। साथ ही व्यापार संबंधी लाभ भी समय

समय पर होता रहेगा।

Sahil Sabnis

आपके जन्म समय तृतीय भाव में धनुराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति उत्तम रहेगी तथा किसी भी वस्तु या विषय को काफी समय तक याद रखने मे समर्थ रहेंगे। भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनका आपको वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही वे आपके प्रति कर्तव्य परायण तथा विश्वास पात्र रहेंगे। आप भी पारिवारिक शान्ति के लिए उनकी गलतियों को क्षमा करने में समर्थ रहेंगे। सत्य के प्रति आपकी पूर्ण आस्था रहेगी तथा अपने सिद्धांत के भी पक्के होंगे चाहे इससे आपको कोई परेशानी या समस्याएं ही उत्पन्न क्यों न हों। इसके अतिरिक्त आप एक स्पष्टवादी व्यक्ति होंगे तथा जिसे सही समझेंगे उसे सबके समक्ष कह देंगे चाहे उसका प्रभाव कुछ भी हो।

आप एक साहसी तथा पराक्रमी पुरूष होंगे तथा नेतृत्व के गुणों से भी युक्त रहेंगे। साथ ही किसी भी मनुष्य या वस्तु के गुणावगुणों को परखकर ही उसको बारे में अपने राय प्रदान करेंगे। आप सद्विचारों के व्यक्ति होंगे तथा धार्मिक विचारों की भी प्रधानता रहेगी। आधुनिक संचार संसाधनों से आप युक्त रहेंगे यथा दूरभाष, दूरदर्शन या वाहन आदि से युक्त रहकर सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। साथ ही संगीत एवं हस्त कला के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा यदा कदा इसमें भी अपना समय व्यतीत करेंगे। आपकी समीपस्थ या दूर देशों की यात्राएं समय समय पर होती रहेंगी तथा इनसे आपको वांछित लाभ भी प्राप्त होगा। आपकी अध्ययन के प्रति रूचि रहेगी तथा धार्मिक ग्रन्थ, साहित्य तथा वैज्ञानिक पुस्तकों का आप रूचिपूर्वक अध्ययन करेंगे इसके अतिरिक्त आप किसी संस्था के पदाधिकारी एवं दीन दुःखियों के प्रति दयालु रहेंगे जिससे समाज में सम्माननीय समझे जाएंगे।

Ms.

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में वृश्चिक राशि उदित हुई है जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति प्रबल रहेगी तथा किसी भी वस्तु को आप चिर काल तक नहीं भूलेंगे। आप एक आत्म विश्वासी, साहसी तथा पराक्रमी महिला होंगी तथा अपने इन्हीं गुणों से सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करेंगी तथा इनमें आपको इच्छित सफलता भी प्राप्त होगी। मंगल के प्रभाव से आपकी निर्णय लेने की शक्ति दृढ़ रहेगी तथा मस्तिष्क भी हमेशा सक्रिय एवं सजग रहेगा।

जीवन में भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगी तथा उनसे पूर्ण सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होगी। साथ ही आप भी उनका पूरा ध्यान रखेंगी एवं सुख दुख में उनकी सेवा तथा सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके प्रति वे हमेशा आज्ञाकारी, विश्वसनीय तथा कर्तव्य परायण रहेंगे। अतः पारिवारिक शान्ति तथा समृद्धि के लिए उनकी गलतियों को भी क्षमा कर देंगी। साथ ही जमीन जायदाद आदि से भी युक्त रहेंगी एवं इससे आपको प्रचुर मात्रा में

धन एवं लाभ अर्जित होगा। आप परेशानी, क्रोधावस्था तथा अनावश्यक वादविवाद आदि में अप्रिय स्थिति से बचने में समर्थ रहेंगी। अपनी नेतृत्व प्रतिभा तथा अन्य गुणों से समाज में आप एक गणमान्य महिला होंगी। आधुनिक संचार संबंधी महत्वपूर्ण उपकरण यथा टेलीफोन, टेलीविजन तथा वाहन आदि से आप युक्त रहेंगी तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगी । यदा कदा संगीत के प्रति भी आप रूचिशीलता का प्रदर्शन करेंगी । दूर समीप की यात्राओं से भी आपको लाभ होगा। इसके अतिरिक्त आप पराक्रमी कार्यो को सम्पन्न करेंगी तथा अन्य जनों से यदा कदा विवाद भी होगा अतः सतर्क रहें।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

Sahil Sabnis

आपके जन्मसमय में चतुर्थ भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आप समस्त सांसारिक एवं भौतिक सुखों को प्राप्त करने में समर्थ होंगे। आपको आधुनिक सुख-संसाधनों की भी प्राप्ति होगी जिसका सुखपूर्वक उपभोग करेंगे। आप एक समृद्ध एवं वैभवशाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में आदरणीय व्यक्ति माने जायेंगे।

आप एक सौभाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा चल एवं अचल सम्पत्ति से युक्त होकर उसके स्वामित्व को प्राप्त करेंगे। विवाह के बाद पत्नी के प्रभाव या सहयोग से भी आपको वांछित चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। इससे आपकी समृद्धि में वृद्धि होगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से आपको समय समय पर धन सम्पत्ति की प्राप्ति होती रहेगी। आप चल एवं अचल दोनों प्रकार की सम्पत्ति से युक्त होंगे। अतः इन पर आप इच्छित निवेश कर सकते है।

जीवन में आपको उत्तम घर की प्राप्ति होगी तथा यह विस्तृत क्षेत्र में होगा तथा आधुनिक सुख-सुविधाओं एवं उपकरणों से सुसज्जित रहेगा। आप भी व्यक्तिगत रूप से इसके आकर्षण एवं सुन्दरता बनाए रखने के लिए प्रयत्नशील होंगे। आपका घर किसी समृद्ध कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी बुद्धिमान एवं शिक्षित होंगे एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी। इसके अतिरिक्त उत्तम वाहन से भी आप युक्त होंगे तथा इनकी संख्या एक से अधिक भी हो सकती है।

आपकी माताजी सुन्दर, शिक्षित, बुद्धिमान एवं आधुनिक विचारों की महिला होंगी तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। वह एक व्यवहार कुशल महिला होंगी तथा पारिवारिक सदस्यों का मर्जी से लालन पालन करेंगी जिससे सभी लोग उनको वांछित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशेष वात्सल्य का भाव होगा तथा समय समय पर उनसे आपको वांछित आर्थिक एवं नैतिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आपकी उन्नति में भी उनका मुख्य योगदान होगा। आप भी उनके प्रति श्रद्धा एवं आज्ञाकारिता का भाव रखेंगे तथा सुख-दुःख में उन्हें अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे इससे आपसी संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी।

विद्याध्ययन में आपकी प्रारंभ से ही रूचि होगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से आप छोटी कक्षाओं से ही अच्छे अंक लेकर परीक्षाएं उतीर्ण करेंगे। स्नातक परीक्षा भी आप संतोष जनक रूप से उतीर्ण करेंगे। इससे आपके मन में उत्साह के भाव में वृद्धि होगी तथा भविष्य में भी उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होने के लिए स्वयं को तैयार करेंगे। स्वजनों एवं संबंधियों से भी आप वांछित आदर, स्नेह एवं प्रोत्साहन प्रदान करेंगे।

Ms.

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में धनुराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है तथा शनि भी चतुर्थ भाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आपको वांछित सुखों की प्राप्ति तो अवश्य होगी परंतु उसमें आपको अधिक परिश्रम करना पड़ेगा तथा सुख प्राप्ति में विलम्ब भी होगा परंतु इससे आपको निराश नहीं होना चाहिए। क्योंकि आप एक परिश्रमी तथा बुद्धिमान महिला हैं तथा अपने इन गुणों से आप न्यूनाधिक रूप से भौतिक एवं आधुनिक सुखों की प्राप्ति करके उनका उपभोग करने में समर्थ हो सकती हैं।

जीवन में आप चल एवं अचल सम्पत्ति से भी युक्त होंगी तथा उनसे आपकी भौतिक समृद्धि में वृद्धि होगी। आप किसी वृद्ध महिला से चल एवं अचल सम्पत्ति की अधिकारी भी हो सकती हैं। लेकिन ये सभी चीजें आपको काफी परिश्रम एवं विलम्ब से प्राप्त होगी। इसके अतिरिक्त विवादित सम्पत्ति से आपको हमेशा दूर ही रहना चाहिए तथा इससे कोई संबंध नहीं रखना चाहिए क्योंकि इससे आपको अनावश्यक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आपको चल की अपेक्षा अचल सम्पत्ति का ही संग्रह करना चाहिए।

आप प्रारंभ में किसी मध्यम गृह में निवास करेंगी परंतु मध्यावस्था के बाद आपको उत्तम एवं आधुनिक रूप से सुसज्जित घर की प्राप्ति होगी। यह किसी अच्छी कालोनी में होगा तथा वहां आपका प्रभाव बना रहेगा परंतु पड़ोसियों से संबंध औपचारिक ही रहेंगे। इसके अतिरिक्त वाहन सुख भी आपको प्राप्त होगा तथा सुखपूर्वक उपभोग करेंगी लेकिन अपने वाहन की प्राप्ति किंचित विलम्ब से हो सकती हैं।

आपकी माता जी तेजस्वी, शिक्षित एवं बुद्धिमान महिला होंगी उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। वे व्यावहारिक महिला होंगी तथा अपने कार्य कलापों से सभी पारिवारिक सदस्यों को प्रभावित करेंगी परंतु यदा कदा उनकी तेजस्वी प्रवृति से किसी को अल्प कालिक परेशानी हो सकती है। आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य एवं स्नेह का भाव विद्यमान होगा तथा समयानुसार उनसे आपको विशिष्ट सहयोग की प्राप्ति होगी तथा आपकी उन्नति में उनका काफी योगदान होगा तथापि आपसी मतभेदों के कारण यदा कदा संबंधों में तनाव का भाव उत्पन्न हो सकता है। अतः ऐसी स्थितियों की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए तथा परस्पर सामंजस्य बनाए रखना चाहिए।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आप की रूचि होगी परंतु अत्यधिक परिश्रम एवं बुद्धिमता से ही आप स्नातक परीक्षा उतीर्ण करेंगी लेकिन छोटी कक्षाओं में आपकी प्रगति संतोष जनक रहेगी। अतः आपको स्नातक परीक्षा की अपेक्षा किसी तकनीकी शिक्षा का पाठ्यक्रम करना चाहिए। इससे आपको अल्प परिश्रम से ही सफलता मिलेगी जिससे आपके अत्मविश्वास में वृद्धि होगी तथा उज्ज्वल भविष्य बनाने में समर्थ होंगी।

चतुर्थ भाव में शनि की स्थिति से मध्यावस्था के बाद आप रक्त चाप एवं हृदय संबंधी परेशानियों का सामना कर सकती है। अतः ऐसी स्थितियों से बचने के लिए आपको उचित खान-पान की ध्यान रखना चाहिए। इससे आप सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक जीवन यापन

करेंगी।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

Sahil Sabnis

आपके जन्म समय में पंचमभाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा आपके सभी कार्य-कलापों में उत्कृष्ट बुद्धिमता की छाप होगी। इससे सभी लोग आपसे प्रभावित होंगे तथा आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आप में सही समय में तत्काल सही निर्णय लेने की शक्ति भी विद्यमान होगी जिससे समान्यत्या कार्यो में आपको सिद्धि प्राप्त होगी वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्म में आपकी पूर्ण रूचि होगी तथा उनके ज्ञानार्जन से सामाजिक प्रभाव में वृद्धि करेंगे। संगीत कला एवं कविता तथा पाश्चात्य साहित्य के प्रति आपकी ज्ञानार्जन की इच्छा होगी तथा स्वपरिश्रम से इस क्षेत्र का न्यूनाधिक ज्ञान अर्जित करने में समर्थ होंगे।

पंचमभावा में शनि की राशि के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में आपकी विशेष रूचि होगी तथा मनोरंजन शान्ति एवं आत्म सन्तुष्टि के लिए आप प्रेम-प्रसंग स्थापित करेंगे। आपके प्रेम में भौतिक तथा भावात्मक दोंनो प्रकार का आकर्षण विद्यमान होगा। अतः इस क्षेत्र में आपको मर्यादा तथा नैतिकता का अवश्य ध्यान रखना चाहिए जिससे अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना न करना पड़े।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा कन्या संतति अधिक होगी। आपकी संतति बुद्धिमान योग्य एवं पराक्रमी होगी तथा इन्हीं गुणों से जीवन में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना होगी तथा उनकी आज्ञा का पालन भी करेंगे। शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को वे माता-पिता की सलाह से सम्पन्न करेंगे। इससे आपस में सद्भाव एवं विश्वास का भाव बना रहेगा। पिता की अपेक्षा माता के प्रति बच्चों का विशेष अपनत्व का भाव होगा एवं अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान वे माता के माध्यम से ही सम्पन्न करेंगे लेकिन आदर का भाव दोनों के प्रति समान होगा। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में माता-पिता की तन-मन-धन से सेवा करेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। अतः इस संदर्भ में आप भाग्यशाली व्यक्ति होंगे।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी संतति योग्य सिद्ध होगी तथा प्रारंभ से ही वे अध्ययन के क्षेत्र में विशेष उन्नति एवं सफलताएं अर्जित करेंगे। आप भी उनकी शिक्षा का पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा उसमें आवश्यक व्यय करके आधुनिक परिवेश में उन्हें शिक्षा दिलाएंगे। वे भी स्वभाव से मृदु, सुन्दर, सक्रिय एवं व्यवहार कुशल होंगे तथा अन्य जनों को अपने कार्य कलापों तथा बुद्धिमता से प्रभावित एवं प्रसन्न रखेंगे जिससे वे वांछित स्नेह तथा सम्मान प्रदान करेंगे। इससे आपकी सामाजिक मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा संतति पर आप गौरवान्वित होंगे।

Ms.

आपके जन्म समय में पंचमभाव में मकरराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। तथा सूर्य भी पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान महिला होंगी तथा अपने समस्त सांसारिक एवं अन्य कार्य कलापों को बुद्धिमता पूर्वक सम्पन्न करेंगी लेकिन शीघ्र निर्णय लेने की शक्ति की आप में न्यूनता होगी तथा कई बार गम्भीर एवं कठिन समस्याओं का समाधान करने में आपको असुविधा एवं परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। सूर्य की शनि की राशि में स्थिति के प्रभाव से वैदिक साहित्य धर्म एवं दर्शन में आपकी रूचि कम ही होगी तथापि आधुनिक वैज्ञानिक विषयों में अधिक रूचि होगी तथा परिश्रम पूर्वक इसका ज्ञान अर्जित करने में समर्थ होंगी जिससे एक विदुषी के रूप में समाज में आपकी छवि व्याप्त होगी। आप इतिहास या पुरातत्व के क्षेत्र में भी कोई शोध या विशिष्ट कार्य सम्पन्न कर सकती हैं।

पंचमभाव में सूर्य की स्थिति के प्रभाव से प्रेम प्रसंगों में आपकी रूचि होगी तथा इसमें आप मर्यादा नैतिकता एवं आदर्शवादिता के भाव का अनुकरण कम ही करेंगी। इसमें भावनात्मक आकर्षण भी रहेगा लेकिन आपको प्रेम के क्षेत्र में नैतिकता का अवश्य पालन करना चाहिए अन्यथा इसमें अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना करना पड़ सकता है जो आपके मान-सम्मान को प्रभावित कर सकता है। अतः ऐसी स्थितियों की यत्न पूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

शत्रुराशिस्थ सूर्य की पंचमभाव में स्थिति के प्रभाव से आपको सन्तति प्राप्ति में विलम्ब एवं व्यवधानों का सामना करना पड़ सकता है। लेकिन वांछित उपाय आदि करने से आपको सन्तति की प्राप्ति हो सकती है। आपकी सन्तति तेजस्वी पराक्रमी एवं चतुर होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में उन्नति एवं सफलताऐं अर्जित करेंगी। माता-पिता के प्रति आंतरिक रूप से उनका आदर एवं सम्मान का भाव रहेगा परन्तु प्रत्यक्ष रूप से यदा-कदा वे उपेक्षा भी कर सकते है। वे स्वतन्त्र रूप से कार्य करने के इच्छुक होंगे तथा उसमें माता-पिता या अन्य की सलाह या सहयोग कम ही लेंगे। आपको भी उनके ऊपर किसी भी प्रकार का दवाब नहीं डालना चाहिए। इससे आपसी सम्बन्धों में किंचित तनाव हो सकता है। इसके अतिरिक्त बच्चों से आपको विशेष अपेक्षा नहीं करनी चाहिए तथा वृद्धावस्था के लिए अपने लिए वांछित धन संचित करके रखना चाहिए।

अध्ययन के क्षेत्र में बच्चों की उन्नति सामान्य एवं सन्तोष प्रद होगी तथा परिश्रम से वे वांछित सफलताएं अर्जित करेंगे। आप भी अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं रखेंगी तथा उन्हें आधुनिक रूप से शिक्षा की सुविधाएं प्रदान करेंगी। वे तेजस्वी प्रकृति की भी होंगी जिससे यदा-कदा अन्य सामाजिक जनों से आपके विवाद आदि भी होंगे जिससे आपको अनावश्यक परेशानियों का सामना करना पड़ेगा लेकिन अपने सद्व्यवहार से आप स्थिति को सम्भालने में समर्थ होंगी।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

Sahil Sabnis

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है अतः इसके प्रभाव से आप को जीवन में किसी उच्चाधिकार प्राप्त व्यक्ति से विरोध का सामना करना पड़ेगा साथ ही आपके शत्रु भी सामाजिक मान सम्मान में न्यूनता करने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहेंगे। जिससे समाज में आपके प्रभाव में अल्पता आएगी। आपके सेवक आज्ञाकारी तथा विश्वास पात्र रहेंगे तथा ईमानदारी से आपकी सेवा में हमेशा तत्पर रहेंगे लेकिन यदि आप उनको उचित पारिश्रमिक प्रदान नहीं करेंगे तो वे घर में किसी प्रकार की चोरी आदि भी कर सकते है अतः ऐसी समस्याओं का निराकरण पहले ही कर लेना चाहिए।

आपकी प्रवृत्ति अधिक से अधिक धन संग्रह करने की रहेगी साथ ही कई प्रकार से पूंजीनिवेश भी करेंगे परन्तु इसमें हानि की अवस्था में आपको ऋण आदि लेना पड़ सकता है लेकिन आपको कर्ज देने वाले विशेष सहयोग नहीं देंगे तथा विलम्ब की अवस्था में आपके सम्मान को प्रभावित करेंगे। अतः धन व्यय या पूंजीनिवेश आदि के कार्यो में आपको अत्यधिक बुद्धिमता एवं सतर्कता का परिचय देना चाहिए। इसके साथ ही अवसरानुकूल बन्धुवर्ग या संबन्धी भी आर्थिक मामलों में आपको हानि प्रदान कर सकते हैं। अतः ऐसे समय में स्थिति को पूर्ण समझकर ही कार्य करने चाहिए।

जीवन में सम्बन्धियों या अन्य जनों से मुकद्दमे बाजी का भी संकेत मिलता है। इसका संबंध आर्थिक, जमीन जायदाद या कुछ फौजदारी मामलों से हो सकता है। साथ ही यदा कदा दाम्पत्य जीवन में भी मधुरता के भाव में न्यूनता आ सकती है। मामा मामियों से आपके संबंध सामान्य ही रहेंगे तथा परस्पर विशेष सहयोग के भाव में न्यूनता रहेगी। शारीरिक स्वस्थता बनाए रखने के लिए उचित खान पान का प्रयोग करें। जब कभी आपको अत्यधिक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा तब आप गुप्त कार्यो के द्वारा शान्ति एवं सफलता अर्जित करने की सोचेंगे इसमें या तो पूजा संबन्धी कार्य हो सकता है अन्यथा आप अपने कठोर कार्यो से प्रतिशोध की भावना से पूर्ण करेंगे जिससे आपको न्यूनाधिक रूप से लाभ एवं उपलब्धियां अर्जित हो सकती है।

Ms.

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आपका स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा आयु भी दीर्घ होगी। आप एक दयालु प्रवृत्ति की महिला होंगी परन्तु यदा वार्तालाप में कठोर शब्दों का प्रयोग कर सकती है इससे कई लोग आपसे विरोध की भावना रखेंगे। साथ ही लोग आपके वैभव एवं खुशाहली से ईर्ष्या के कारण भी आपसे शत्रुता का भाव रखेंगे। यद्यपि आप एक सम्मानीया महिला होंगी तथापि आपका विरोधी पक्ष भी प्रबल रहेगा। आप अपने पारिवारिक सदस्यों पर अत्यधिक व्यय करेंगी। अतः इसी परिपेक्ष्य में आपको ऋण आदि भी लेना पड़ सकता है। इसके

भुगतान में विलम्ब के कारण ऋणदाता द्वारा आपके सम्मान में हानि की संभावना हो सकती है लेकिन अपनी प्रतिभा तथा अधिकार के बल पर आप इन समस्याओं का सामना एवं समाधान करने में समर्थ रहेंगी।

आपका सेवक वर्ग आज्ञाकारी रहेगा तथा पूर्ण ईमानदारी से आपकी सेवा करने में तत्पर रहेंगे। अपने कार्य से वे आपको सन्तुष्ट रखेंगे लेकिन यदा कदा इनसे मान हानि की भी संभावना रहेगी अतः इनसे व्यक्तिगत कलह तथा कीमती वस्तुओं को हमेशा दूर रखना चाहिए। मुकद्दमे आदि कार्यो के प्रति आप लापरवाह रहेंगी परन्तु आपको ऐसे मामलों का सावधानी एवं सतर्कता पूर्वक अवलोकन करना चाहिए तथा अपने व्यापारिक तथा अन्य हिसाब को सही रखना चाहिए। यदि आप इस प्रकार से नियमानुसार कार्य सम्पन्न करती रहें तो आपको किसी भी क्षेत्र में कोई विशेष परेशानी नहीं होगी। साथ ही फौजदारी मुकद्दमे में आपको सफलता प्राप्त हो सकती है।

मामा मामियों से आपके संबंध विशेष अच्छे नहीं रहेंगे। प्रत्यक्ष रूप से तो आपके प्रति वे सदभावना का प्रदर्शन करेंगे परन्तु अप्रत्यक्ष रूप से उनकी आपके सहयोग आदि में कोई भी रूचि नहीं रहेगी। अतः संबंधों में मधुरता रखने के लिए बुद्धिमता का प्रयोग करना चाहिए। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में आप गुर्दे तथा उदर संबन्धी परेशानी की अनुभूति कर सकती है। अतः युवावस्था में खान पान संबंधी परहेज अवश्य रखें।

Sahil Sabnis

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है सामान्यतया मेष राशि की सप्तम स्थिति से जातक का सहयोगी तेजस्वी उत्साही पराक्रमी एवं धनाढ्य होता है। शुक्र के प्रभाव से वह आधुनिक विचार धाराओं से युक्त सुन्दर एवं कला प्रेमी होता है एवं स्वभाव में भी विनम्रता एवं सुशीलता रहती है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी विनम्र स्वभाव की महिला होंगी आधुनिकता के भावों की उनमें प्रबलता होगी तथा भौतिक सुख संसाधनों एवं उपकरणों की प्रति विशेष रूचि होगी। अपने संभाषण में वह मधुर शब्दों का उपयोग करेंगी। शुक्र के प्रभाव से उनके कर्तव्य परायणता भी होगी एवं परिवार तथा समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगी।

आपकी पत्नी सुंदर एवं आकर्षक वर्ण की दर्शनीय महिला होंगी तथा उनका कद भी मध्यम रहेगा उनका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा तथा शरीर के अंग प्रत्यंगों की पुष्टता के कारण सौन्दर्य में आकर्षण की वृद्धि होगी तथा उनके व्यक्तित्व में भी निखार आएगा साथ ही सौन्दर्य में वृद्धि के लिए वह आधुनिक सौन्दर्य प्रसाधनों का मुक्त रूप से उपयोग करेंगी एवं सुंदर तथा आकर्षक परिधानों से सुसज्जित होंगी संगीत एवं कला के प्रति उनके मन में प्रबल आकर्षण रहेगा।

आपका विवाह किसी समीपी महिला संबंधी के सहयोग से सम्पन्न होगा। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा आपस में प्रबल आकर्षण तथा प्रेम की भावना रहेगी। सांसारिक महत्व के कार्यो को परस्पर सहयोग एवं सहमति से सम्पन्न करेंगे इससे समानता तथा विश्वसनीयता के भाव में वृद्धि होगी। आप दोनों शिक्षित व्यक्ति होंगे तथा जीवन में सिद्धांतों में भी समानता रहेगी फलतः आपसी संबंधों में मधुरता के कारण जीवन प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

आपका ससुराल किसी समृद्ध परिवार में होगा तथा सामाजिक रूप से भी उनकी प्रतिष्ठा बनी रहेगी। सास ससुर से आपके अच्छे संबंध रहेंगे तथा उनसे पूर्ण स्नेह की प्राप्ति होगी। आप भी उन्हें यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त उनसे नैतिक तथा आर्थिक सहयोग भी मिलता रहेगा।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का पूर्ण श्रद्धा एवं सेवा का भाव रहेगा एवं सुख दुख में उनका पूर्ण ध्यान रखेंगी। देवर एवं ननदों को भी अपने सद्व्यवहार एवं मधुर वाणी से प्रसन्न रखेंगी तथा उनसे वांछित सम्मान मिलेगा जिससे परिवार में शांति बनी रहेगी।

व्यापार या महत्वपूर्ण कार्य में साझेदारी के लिए स्थिति शुभ रहेगी। यदि स्त्री या स्त्रीवर्ग से साझेदारी की जाये तो आपको विशिष्ट उपलब्धियां मिलेंगी तथा आपस में

विश्वसनीयता का भाव भी बना रहेगा।

Ms.

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है तथा राहु भी सप्तम भाव को प्रभावित कर रहा है सामान्यतया मीन राशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी सुशील वात कफ प्रवृति आस्तिक एवं धनाढ्य होता है परन्तु राहु जैसे पाप ग्रह के प्रभाव से उसमें उग्रता, पराक्रम एवं साहस का भाव भी विद्यमान होता है एवं भौतिकता के प्रति मन में विशेष आकर्षण रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपके पति सुशील स्वभाव के व्यक्ति होंगे परन्तु उनमें उग्रता का भाव भी विद्यमान होगा। वे साहसी होंगे तथा स्वपराक्रम एवं परिश्रम से सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे। भौतिकता के प्रति उनके मन में आकर्षण रहेगा तथा उनकी प्राप्ति में सर्वदा तत्पर होंगे लेकिन राहु के प्रभाव से कर्तव्य परायणता के भाव की उनमें न्यूनता रहेगी फलतः परिवार एवं समाज के प्रति अपने कर्तव्य का ईमानदारी से कम ही पालन करेंगे।

आपके पति का वर्ण श्यामवर्ण तथा कद ऊंचा होगा। शारीरिक रूप से उनमें पतलापन रहेगा परन्तु शरीर में पुष्टता होंगी जिससे उनके सौन्दर्य में वृद्धि होगी तथा व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। भौतिकता के प्रति उनके मन में आकर्षण रहेगा एवं पाश्चात्य सभ्यता तथा संस्कृति का अनुपालन करेंगे।

सप्तम भाव में राहु के प्रभाव से आपके विवाह में विलम्ब होगा तथा विवाह पूर्व की वार्ताओं में भी व्यवधान आएंगे। आपका विवाह विज्ञापन के माध्यम से सम्पन्न होगा एवं राहु के प्रभाव से आप स्वेच्छा से प्रेम या अंतर्जातीय विवाह भी कर सकती हैं। विवाह के बाद आपका वैवाहिक जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा एवं आपस में प्रेम तथा समानता का भाव होगा। परन्तु पति का तेजस्वी स्वभाव यदा कदा आपके लिए परेशानी का कारण बनेगा। अतः संयम एवं बुद्धिमता पूर्वक व्यवहार करें तभी संबंधों में मधुरता हो सकती है।

आपका विवाह किसी साधारण परिवार में होगा तथा आर्थिक स्थिति भी उनकी मध्यम होगी। सास ससुर से संबंधों में तनाव रहेगा जिससे एक दूसरे को यथोचित सम्मान एवं सहयोग नहीं देंगे।

आपके पति का राहु के प्रभाव से सास ससुर के प्रति विशेष सेवा भाव नहीं होगा तथा सुख दुख में उन्हें कोई सहयोग नहीं देंगे। साले एवं सालियां भी उनके उग्रस्वभाव एवं कठोर वाणी से असुविधा की अनुभूति करेंगी तथा उनको यथोचित मान सम्मान प्रदान नहीं करेंगे।

व्यापार में साझेदारी के लिए स्थिति अच्छी नहीं होगी। अतः साझेदारी की आपको यत्नपूर्वक उपेक्षा ही करनी चाहिए।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

Sahil Sabnis

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप में आध्यात्मिक शक्ति विद्यमान रहेगी। साथ ही ज्यौतिष एवं तंत्र मंत्र आदि में आपकी श्रद्धा रहेगी तथा परिश्रम पूर्वक इनका ज्ञान अर्जित करने में भी समर्थ रहेंगे। आपके अन्दर सक्रियता के भाव की सदैव प्रबलता रहेगी तथा प्रतिभा से भी युक्त रहेंगे अतः आप कोई भी सृजनात्मक कार्य दूसरों की अपेक्षा आसानी से कर लेंगे। ज्यौतिष आदि के क्षेत्र में आप काफी उन्नति एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे तथा इसमें आपको ख्याति भी प्राप्त होगी। आपको मित्र या बन्धु वर्ग के द्वारा जायदाद संबन्धी लाभ का योग बनता है। साथ ही पैतृक सम्पत्ति भी न्यूनाधिक रूप से आपको अवश्य प्राप्त होगी। जायदाद एवं चल अचल सम्पत्ति के स्वामित्व के द्वारा समाज से आपको इच्छित आदर एवं सम्मान की प्राप्ति होगी। इस प्रकार आप एक वैभवशाली पुरूष के रूप में जाने जाएंगे ।

विवाह आदि के समय आपको आवश्यक मात्रा में धन या उपहार आदि की प्राप्ति होगी तथा अपेक्षानुसार आपके ससुराल पक्ष के लोग आपको ये सब भेंट करेंगे। साथ ही आप आवास को सुदंर सजावट से युक्त रखेंगे तथा समय पर पार्टियों का भी आयोजन करते रहेंगे। बीमा आदि से भी समय समय पर लाभ होगा अतः बीमा आपको अवश्य कराना चाहिए। आपके घर में चोरी की कोई बड़ी घटना नहीं होगी परन्तु सामान्यतया इन घटनाओं से कोई परेशानी नहीं होगी। आपकी सतर्कता की प्रवृति से जीवन में दुर्घटनाएं नहीं होगी तथापि आपको तीव्र गति का वाहन आदि नहीं चलाना चाहिए। आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा सुख पूर्वक अपना सांसारिक जीवन व्यतीत करेंगे ।

Ms.

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आपकी आध्यत्म ज्यौतिष या तंत्र मंत्र के प्रति विशेष रूचि नहीं रहेगी। इसका मुख्य कारण यह होगा कि आप अपने कार्य क्षेत्र में पूर्ण व्यस्त रहेंगी तथा परिश्रम एवं पराक्रम से अपने कार्यो को सम्पन्न करेंगी तथा भाग्य की अपेक्षा कर्म पर ही अधिक विश्वास करेंगी। इस प्रकार व्यस्तता तथा तत्परता के कारण आपके पास समय का अभाव रहेगा। यदि आपके पास समय बचे तो आप अन्यत्र उसका सदुपयोग करना पसन्द करेंगी लेकिन आध्यात्म संबन्धी प्रवचनों का आप यदा कदा श्रवण कर सकती हैं। जीवन में आपको पैतृक सम्पत्ति प्राप्त होगी तथा विस्तृत जमीन जायदाद की स्वामिनी बनेंगी। यदि आप इसका विक्रय भी करेंगी तो इससे आपको वांछित कीमत मिलेगी। इसकी कीमतों में निरन्तर वृद्धि के कारण इसे इच्छित कीमत पर बेचकर वांछित धन अर्जित करने में समर्थ रहेंगी।

आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा ससुराल में किसी प्रकार की कमी नहीं होगी तथा सर्वप्रकार के सुख संसाधनों से वे युक्त रहेंगे। बीमा आदि करने से भी

आपको इच्छित लाभ होगा। अतः समय समय पर आप अपना तथा महत्वपूर्ण वस्तुओं का मकान या अन्य का बीमा करवाती रहें। आपकी कुंडली में घर में चोरी आदि की समस्याएं अल्प रहेंगी तथापि सुरक्षा वश आपको बहुमूल्य वस्तुओं को सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए लेकिन दुर्घटना आदि के प्रति आपको पूर्ण रूप से सचेत रहना चाहिए अन्यथा न्यूनाधिक रूप से ऐसी घटना जीवन में घट सकती है लेकिन उससे कोई विशेष हानि नहीं होगी। आपकी आयु अच्छी रहेगी तथा सामान्यतया अपना सांसारिक जीवन सुख पूर्वक ही व्यतीत करेंगी।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

Sahil Sabnis

आपके जन्म समय में नवम भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप एक धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा पारिवारिक नियमों का पालन करते रहेंगे। जीवन में आप भौतिक सुख की प्राप्ति के लिए यत्नशील रहेंगे। आपकी ईश्वर की सत्ता में पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा भाग्य बल से जीवन में धनऐश्वर्य अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। अवसरानुकूल तीर्थ स्थानों की यात्रा भी करेंगे तथा आप एक धर्मनिष्ठ पुरूष के रूप में जाने जाएगें।

विभिन्न धर्मो के ऊपर लिखे गए ग्रंथों का आप रूचिपूर्वक अध्ययन करेंगे। साथ ही ध्यान योग, तंत्र तथा अध्यात्म आदि के प्रति भी आपका विश्वास रहेगा तथा इनसे संबंधित विषयों का भी समय समय पर अध्ययन करके ज्ञानार्जन करते रहेंगे। यदि आप अपनी दृढ़ संकल्पता में वृद्धि कर सके तो इससे आपकी अर्न्तप्रज्ञा शक्ति में वृद्धि होगी तथा पूर्वाभास एवं भविष्य वाणी करने में समर्थ हो सकेंगे।

आपकी दैनिक पूजा जीवन में आपको ऐश्वर्य प्रदान करने में शक्ति प्रदान करेंगी परन्तु यदा कदा मानसिक असुन्तल के कारण आपको व्यवधानों का भी सामना करना पड़ेगा। साथ ही पूजा कार्य में भी समय समय पर व्यवधान आएंगे। व्यावसायिक रूप से की गई लम्बी यात्राओं से आपको लाभ यश तथा समाज में मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। इससे आप में स्थायित्व आएगा तथा धन वैभव की भी वृद्धि होगी। आप एक प्रसिद्ध बुद्धिमान एवं विद्वान पुरूष होंगे तथा अपनी योजनाएं बिना किसी की सलाह लिए सम्पन्न करेंगे। साथ ही अपने प्रथम पौत्र से अत्यधिक सुख एवं आनंद प्राप्त करेंगे तथा जीवन में अन्य शुभ कार्य भी आप करते रहेंगे एवं सुख ऐश्वर्य से युक्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप धर्मात्मा सौभाग्यशाली अतिथि सत्कार करने वाले तथा दीनों पर कृपा करने वाले व्यक्ति होंगे तथा परोपकार संबधी कार्यो को पूर्ण करने में सफल रहेंगे।

Ms.

आपके जन्म समय में नवम भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप धार्मिक प्रवृति की महिला होंगी तथा यह गुण आपको पैतृक एवं पारिवारिक संस्कारों से प्राप्त होगा। धार्मिक कार्य कलापों को आप श्रद्धा पूर्वक सम्पन्न करेंगी तथा दैनिक पूजा या पाठ आदि में भी तत्पर रहेंगी। यद्यपि युवावस्था में दैनिक पूजा या ध्यान करने में असमर्थ सी रहेंगी परन्तु ईश्वर के प्रति आपकी पूर्ण आस्था विद्यमान रहेगी। साथ ही आध्यात्मिक तथा ध्यान योग के प्रति भी रूचिशील रहेंगी तथा उपरोक्त विषयों के ग्रंथों का रूचि पूर्वक अध्ययन करेंगी। आपकी अन्तर्प्रज्ञा शक्ति भी प्रबल रहेगी तथा ज्यौतिष आदि शास्त्रों के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा तथा इनका न्यूनाधिक ज्ञानार्जन में भी रूचिशील रहेंगी इसके अतिरिक्त आपके पूर्वाभास तथा भविष्य वाणियां भी सत्य सिद्ध होंगी।

उच्च शिक्षा प्राप्त करने में आप समर्थ रहेंगी तथा इसके द्वारा समाज में इच्छित मान सम्मान तथा प्रसिद्धि प्राप्त होगी। साथ ही तीर्थ स्थानों की भी आप यात्रा करेंगी जिससे आपको ज्ञान तथा लाभ अर्जित होगा। वैदिक साहित्य में भी आपकी रुचि रहेगी तथा वृद्धावस्था में अपना अधिकांश समय भगवत भजन में व्यतीत करेंगी आप अपने परिश्रम एवं सौभाग्य से वैभवशाली जीवन व्यतीत करने में भी समर्थ रहेंगी।

पौत्रों के द्वारा आपको इच्छित सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होगी। साथ ही अपने पूर्व जन्म के पुण्यों के द्वारा इस जीवन में सुख एवं वैभव अर्जित करेंगी। इसके अतिरिक्त आप दीनों की सहायता करने वाली, दानी, सर्व अलंकरों से युक्त तथा अतिथि सेवा में तत्पर रहकर धार्मिक प्रवृति का अनुपालन करती हुई अपने जीवन को आनन्द पूर्वक व्यतीत करेंगी।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

Sahil Sabnis

आपके जन्म समय में दशम भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्र है। कर्क राशि जलतत्व प्रधान है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा समय समय पर आप इसमें परिवर्तन करने के इच्छुक होंगे एवं ऐसे तात्कालिक परिवर्तनों से आप को लाभ एवं उन्नति की प्राप्ति होगी। साथ ही आप मानसिक रूप से भी सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

आजीविका की दृष्टि से आपके लिए जलविभाग, वस्त्र उत्पादन फैक्टरी, स्टेनो ग्राफर, कैमिकल्स, कार्यालय सहायक, सचिव, जलसेना, जहाजरानी विभाग अनुकूल रहेंगे। इन विभागों में कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता मिलेगी तथा मानसिक रूप से भी आप सतुष्टि की अनुभूति करेंगे।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए जलोत्पन्न पदार्थो यथा शंख, मोती, प्रवाल, मछली का व्यापार, मिट्टी के खिलौने, ईट, वालू आदि के कार्य, वास्तुकला, आलंकारिक वस्तुओं का व्यापार, द्रव्य पदार्थो यथा दूध, दही, घी आदि के कार्य से लाभ होगा। साथ ही रेशमी एवं मूल्यवान वस्त्रों के व्यापार या आयात निर्यात से भी इच्छित उन्नति एवं लाभ की प्राप्ति होगी। अतः यदि आप व्यापार के इच्छुक हो तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही व्यापार आरंभ करें। इससे आपकी उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे तथा लाभ स्रोतों में भी वृद्धि होगी।

जीवन में आपको वांछित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा किसी सम्मानित एवं उच्चाधिकार प्राप्त पद को अर्जित करने में समर्थ होंगे। समाज में आप एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। साथ ही दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि भी व्याप्त होगी। इसके अतिरिक्त आप किसी सामाजिक धार्मिक सांस्कृतिक या शैक्षिणक संस्था के पदाधिकारी भी हो सकते है जिससे आपके प्रभाव एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

आपके पिता बुद्धिमान, शिक्षित तथा मृदुस्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा उनकी प्रवृति भी शान्ति प्रिय होगी। साथ ही उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा एवं सभी लोग उनसे प्रभावित तथा प्रसन्न होंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा वात्सल्य का भाव होगा तथा आपकी उच्च शिक्षा का वे समुचित व्यवस्था करेंगे। आपकी कार्यक्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में उनका विशेष योगदान होगा तथा उनके प्रभाव से आपको इसमें यथोचित सम्मान एवं आदर की प्राप्ति होगी। साथ ही आप भी अपने उत्तम कार्य कलापों से पिता के सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि करेंगे। इसके अतिरिक्त आपके आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी एवं वैचारिक तथा सैद्धान्तिक रूप से समानता होगी। साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यो को एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे।

Ms.

आपके जन्म समय में दशम भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। मिथुन राशि वायु तत्व प्रधान है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा श्रमसाध्य के भाव की इसमें न्यूनता होगी। साथ ही आप किसी स्वतंत्र कार्य करने की इच्छुक होंगी तथा इसमें सामयिक परिवर्तन भी करेंगी जिससे वांछित लाभ के प्रबल योग बनेंगे।

आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र शिक्षक या व्याख्याता, धर्मोपदेशक प्रोफेसर, वकील, न्यायधीश, बैंक अधिकारी, शेयर ब्रोकर, सरकारी विभाग में सचिव, सलाहकार तथा प्रशासानिक क्षेत्र उत्तम एवं अनुकूल रहेंगे। इन क्षेत्रों में कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों से सुरक्षित रहेंगे। अतः यदि आप आजीविका क्षेत्र में वांछित सफलता तथा प्रसिद्धि प्राप्त करना चाहते है तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही अपनी आजीविका का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक क्षेत्र में आपके लिए सुवर्ण आदि धातु व्यापार, शेयर क्रय विक्रय का कार्य, वित्तीय संस्था द्वारा या ब्याज द्वारा आप वांछित लाभ एवं धन अर्जित करने में समर्थ होंगी। इसके साथ ही कम्पनी के स्वामित्व, वकील का स्वतंत्र व्यवसाय तथा किसी संस्था के स्वामित्व से भी आपको इच्छित लाभ एवं धन की प्राप्ति होगी। अतः यदि आप व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति एवं सफलता बिना किसी समस्याओं एवं व्यवधानों के प्राप्त करना चाहती हैं तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही व्यापार का प्रारंभ करना चाहिए।

जीवन में आपको इच्छित मान प्रतिष्ठा एवं सम्मान की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को अर्जित करने में भी सफल होंगी। समाज में आप एक प्रभावशाली महिला होंगी तथा सभी लोग आपको वांछित आदर प्रदान करेंगे। साथ ही समाज में आपकी प्रसिद्धि भी दूर दूर तक व्याप्त होगी। इसके अतिरिक्त आप किसी सामाजिक या शैक्षणिक संस्था में किसी सम्मानित पदाधिकारी के रूप में भी कार्य कर सकती हैं। इससे आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा मानसिक सन्तुष्टि मिलेगी।

आपके पिता जी शिक्षित विद्वान एवं प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सामाजिक जनों के मध्य उनका पूर्ण आदर रहेगा एवं लोगों को वे अपना सहयोग प्रदान करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके प्रति उनका पूर्ण वात्सल्य का भाव होगा तथा शिक्षा का उच्चस्तर पर समुचित प्रबंध करेंगे। साथ ही कार्यक्षेत्र में उन्नति तथा सफलता में उनका प्रमुख योगदान होगा तथा इससे आपके प्रभाव में वृद्धि होगी। आप भी अपने बुद्धिमतापूर्ण उत्तम कार्य कलापों से पिता के मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि करेंगी। आपके आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे साथ ही सैद्धान्तिक तथा वैचारिक समानता भी विद्यमान होगी।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

Sahil Sabnis

आपके जन्म समय में एकादश भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। इसके प्रभाव से आप भाग्यशाली व्यक्ति होंगे और आर्थिक दृष्टि से आपका धनार्जन उत्तम रहेगा। आप एक परम महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा मन में कई इच्छाएं एवं उमंगे विद्य मान रहेगी। साथ ही सौभाग्य के बल पर इनको पूर्ण करने में भी समर्थ रहेंगे। आप सरकार, औषधिविज्ञान तथा पिता के द्वारा जीवन में विशेष रूप से लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे तथा इन्ही के द्वारा आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी। इस प्रकार लाभ की दृष्टि से हमेशा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। साथ ही बड़े भाइयों से आपको जीवन में पूर्ण लाभ सुख सहयोग एवं स्नेह की प्राप्ति होगी तथा वे हमेशा आपको अपना सहयोग प्रदान करने में तत्पर रहेंगे।

मित्रों के प्रति आपके मन में पूर्ण विश्वास रहेगा तथा उनके मध्य आपको मान सम्मान एवं आदर की प्राप्ति होगी। साथ ही वे सभी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे। आप एक सामाजिक प्राणी होंगे तथा समूह में मनोरंजन या अन्य कार्य करना आपके लिए आनन्द दायक रहेगा साथ ही सामाजिक जनों की सेवा तथा भलाई करने के कार्यो में भी तत्पर रहेंगे एवं जीवन में विशिष्ट मान सम्मान एवं ख्याति भी प्राप्त कर सकते है। आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथापि यदा कदा गर्मी या पित आदि से उत्पन्न दोषों से किंचित अस्वस्थता की अनुभूति कर सकते है। लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा तथा आप समस्त सासांरिक सुखों का उपभोग करते हुए अपने समय को व्यतीत करेंगे।

Ms.

आपके जन्म समय में एकादश भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आप अपने परिश्रम एवं पराक्रम के द्वारा प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में समर्थ रहेंगी तथा अन्य क्षेत्रों में भी सौभाग्यशाली रहेंगी। माता के द्वारा आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित मात्रा में धन लाभ प्राप्त करेंगी या वे किसी उद्यम आदि में आपको किसी प्रकार का सहयोग प्रदान कर सकती है। साथ ही आप जल से उत्पन्न पदार्थो के द्वारा यथा रत्न या वस्त्र आदि के व्यापार अथवा कार्य से धनार्जन करेंगी। यदि आप कार्यरत नहीं है तो उपरोक्त आय स्रोतों से आपके पति लाभ अर्जित करेंगे। इस प्रकार स्वपरिश्रम एवं सौभाग्य से अपनी आकाक्षांओं तथा इच्छाओं को पूर्ण करने में समर्थ होंगी।

आपकी कुंडली के अनुसार ज्येष्ठ भाइयों की अपेक्षा बहिनों से आपको इच्छित सहयोग लाभ एवं स्नेह की प्राप्ति होगी साथ ही माताजी से भी आप वांछित स्नेह एवं सुख की प्राप्ति होगी। आपकी मित्रता का क्षेत्र विस्तृत रहेगा तथा मित्र मंडली में आदरणीया रहेंगी। आपके सभी मित्र गुणवान शिक्षित तथा बुद्धिमान होंगे। अवस्था के साथ साथ सभी सामाजिक जनों एवं मित्रों के प्रति आपके मन स्नेह एवं अपनत्व की भावना उत्पन्न होगी तथा उन सबकी सेवा एवं सहायता के लिए तत्पर रहेंगी। परिवार के प्रति आपके मन में पूर्ण आकर्षण रहेगा तथा

अपने अधिकाशं समय को पारिवारिक जनों के मध्य ही व्यतीत करेंगी। साथ ही अपने क्षेत्र एवं समाज में आपकी प्रसिद्धि रहेगी। जीवन में आपको कोई विशिष्ट सामाजिक सम्मान भी प्राप्त होगा। इस प्रकार आपका सामान्य जीवन सपरिवार सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

Sahil Sabnis

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न एवं समृद्ध रहेंगे। साथ ही जीवन में प्रचुर मात्रा में अनेक साधनों से धन अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। लेकिन आपका रहन सहन, खान पान उच्च स्तर का रहेगा फलतः बचत अल्प मात्रा में ही होगी तथा व्ययाधिक्य रहेगा। आप भौतिक सुख संसाधनों एवं उपकरणों पर व्यय करेंगे साथ ही वस्त्रादि भी सुदंर एवं कीमती होंगे तथा कीमती वस्त्र पहनकर समाज में अपनी धन सम्पन्नता को प्रदर्शित करेंगे।

आपका पारिवारिक जीवन सुख एवं शान्तिमय रहेगा तथा आवास स्थल भी सुदंर एवं सुसज्जित रहेगा एवं इसकी साज सज्जा पर आप काफी व्यय करेंगे। वास्तव में आप कलात्मक रूप से रहना पसन्द करते है तथा इसके लिए अत्यधिक धन की आवश्यकता रहती है। सुदंर एवं विलासमय वस्तुओं के प्रति आपकी तीव्र रूचि रहेगी तथा इनको प्राप्त करने के लिए आप कितना भी व्यय क्यों न हो करने में तत्पर रहेंगे। साथ ही परिवार एवं मित्रों के साथ महंगे होटलों में खाना या नाश्ता करना भी आपका शौक रहेगा। आपकी सफलता को देखकर आपके शत्रु आपके लिए रूकावटें उत्पन्न करेंगे। अतः कभी कभी मानसिक रूप से तनावग्रस्त भी रहेंगे।

यात्रा करने के लिए आप रूचिशील रहेंगे। साथ ही आप की देश के साथ साथ विदेश संबंधी यात्राएं भी होंगी इनसे आपको उचित लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा यद्यपि इनमें व्यय भी अधिक होगा परन्तु कुछ समय के उपरांत लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे। आप भ्रमण या कार्यवश दोनों प्रकार की यात्राएं सम्पन्न करेंगे। इसके साथ ही विदेश में भी आप काफी समय तक प्रवास कर सकते है।

Ms.

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आपकी कार्य क्षेत्र की उन्नति में सुदृढ़ता रहेगी तथा भूमि से उत्पन्न उत्पादों के द्वारा आपको वांछित लाभ होगा। आप शीघ्रातिशीघ्र धनवान होने की कामना करेंगी। अतः इस उददेश्य की पूर्ति के लिए आप अथक परिश्रम करेंगी। आर्थिक क्षेत्र में आप अत्यंत ही सतर्कता का परिचय देंगी तथा पैसा कहां से आकर कहां जा रहा है इसका आपको पूर्ण ध्यान रहेगा। साथ ही अत्यधिक सोच विचारकर आप व्यय करेंगी इस प्रवृति से आप पूंजी निवेश में अधिक धन लगाएंगी जिससे अनुकूल बचत भी बनी रहेगी। आप मध्यमवस्था तक समाज के समक्ष अपने आपको एक धनवान महिला के रूप में स्थापित करने में समर्थ रहेंगी।

आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी एवं बैंक में आपका स्थान सम्मानीय रहेगा। आपके पास सामान्यतया कोई व्यसन नहीं होंगे तथा शौक भी विशेष नहीं रहेगा। अतः आपका

व्यय उचित एवं अनुकूल मात्रा में होगा जिससे आर्थिक बचत बनी रहेगी। परिवार के प्रति आप अपनी पूर्ण जिम्मेवारी निभाएंगी तथा उनकी सुख सुविधाओं के लिए समय समय पर आवश्यक व्यय करती रहेगी साथ ही बच्चों के रहन सहन, खान पान तथा अन्य स्तर में भी वृद्धि करने में तत्पर रहेंगी।

आपको यात्रा करना रूचिकर लगेगा वैसे आपकी प्रवृति भ्रमण प्रिय रहेगी आपकी यात्राएं व्यवसाय या कार्य क्षेत्र से संबंधित रहेगी। साथ ही यदा कदा भ्रमण या दर्शनीय स्थानों की सैर के लिए भी यात्रा करेंगी। इसके अतिरिक्त जीवन में एक बार आपकी अवश्य ही विदेश यात्रा होगी जिसके प्रभाव से आपके मान सम्मान में वृद्धि होगी तथा सामान्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

दशा विश्लेषण

Sahil Sabnis

महादशा :- शुक्र
(11/10/2013 - 11/10/2033)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 11/10/2013 को आरम्भ और 11/10/2033 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र द्वादश भाव में स्थित है। यह एक शुभ ग्रह है जो दो राशियों वृष और तुला का स्वामी है। इसकी मूल त्रिकोण राशि तुला है। यह कन्या राशि में निम्न का तथा मीन राशि में उच्च का हो जाता है। यह कला, संगीत, ड्रामा, भावनात्मक आनन्द, स्वाद, फैशन, डिजाइनिंग तथा सुखमय, जीवन का द्योतक है। द्वादश भाव में स्थित होकर यह आपकी जन्मकुण्डली के षष्ठ भाव पर कारकत्व का प्रभाव डाल रहा है। भाव जिसमें यह स्थित है हानि, फिजूलखर्ची, कड़ी मजदूरी, अनुदान, पारिवार में फूट, धोखा, दुर्भाग्य, कैद, हत्या, कपट, पैर, बायीं आँख, शयन सुख, ऋण और विदेश प्रवास का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शुक्र द्वादश भाव में स्थित है जो आपके अच्छे स्वास्थ्य को सुनिश्चित करता है तथा कोई बड़ी स्वास्थ्य समस्या आपको नहीं होगी। आपको सभी प्रकार का आराम और आनन्द प्राप्त होगा।

अर्थ संपत्ति :

महादशा स्वामी शुक्र द्वादश भाव में स्थित है तथा इस भाव के कारकत्व की प्रबलित कर रहा है। इस दशा काल में आप उपार्जन तथा चल-अचल संपत्ति अर्जित करने की कोशिश करेंगे। आप अपने जन्म स्थल से दूर जा सकते हैं।

व्यवसाय :

अपने व्यावसायिक जीवन में आप एक जगह से दूसरी जगह जाते रहेंगे और एक बैरागी जीवन व्यतीत करेंगे और अन्ततः मोक्ष प्राप्त करेंगे। आपकी व्यावसायिक स्थिति सुदृढ़ होगी और धार्मिक या ऐसी किसी अन्य संस्था के लिए काम करेंगे जहाँ आपकी आध्यात्मिक मानसिकता प्रबलित होगी।

परिवारक जीवन :

आप भावुक तथा विपरीत लिंग के लोगों की ओर आकृष्ट होगें। आपका पारिवारिक जीवन आनन्दमय होगा। आपके जीवन-साथी आपका सहयोग करेंगे और आप घर-परिवार के मैत्रीपूर्ण वातावरण का आनन्द उठाएंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

यह अवधि उत्तम शिक्षा के लिए अनुकूल होगी। आप साहित्यक गतिविधियां जारी रखेंगे।

Ms.

महादशा :- गुरु
(30/06/2025 - 30/06/2041)

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा 30/06/2025 को आरम्भ तथा 30/06/2041 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 16 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में गुरु सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव जीवन साथी, व्यवसाय, कोर्ट-कचहरी के मामले, विदेश संबंध तथा विदेशों में अर्जित प्रतिष्ठा का द्योतक है। गुरु स्वभाव से एक शुभ ग्रह है जिसकी सप्तम भाव में स्थिति तथा एकादश, प्रथम और तृतीय भाव पर दृष्टि है। इन भावों पर यह शुभ प्रभाव डाल रहा है। सोलह वर्षों की इस दशा में आपको बहुत ही आनन्द तथा शान्ति की प्राप्ति होगी और आप उन्नति करेंगे।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी गुरु की सप्तम भाव, जो एक केंद्र है, में स्थिति तथा स्वास्थ्य एवं व्यक्तित्व के द्योतक प्रथम भाव पर इसकी दृष्टि के फलस्वरूप आपको किसी भयानक विपत्ति से छुटकारा मिलेगा तथा इस दशा काल में कोई बड़ी स्वास्थ्य समस्या आपको परेशान नहीं कर पाएगी और आपका जीवन सामान्य रहेगा।

अर्थ सम्पत्ति :

गुरु, जो स्वभावत एक शुभ ग्रह है तथा जो दशम भाव (कर्म भाव) के स्वामी के अतिरिक्त सप्तम भाव का स्वामी होकर सप्तम भाव में स्थित है एवं सप्तम भाव से जिसकी दृष्टि एकादश भाव (आय भाव) पर है, आपको इस दशा काल में चल एवं अचल संपत्ति में बढ़ोतरी करने का सुअवसर प्रदान करेगा तथा आरामदेह और शौकीन वस्तुओं को खरीदने में आपकी अक्षमता को कम करेगा।

व्यवसाय :

सप्तम अर्थात् जीवनसाथी के भाव तथा दशम अर्थात् कर्म भाव के स्वामी गुरु की सप्तम भाव में स्थिति के कारण आपका व्यवसाय उत्तम होगा। आप व्यवसाय में लाभ प्राप्त करेंगे। आपको विदेश यात्रा का अवसर मिलेगा। आप वाक्पटु होंगे और आपको लक्ष्य की प्राप्ति होगी।

पारिवारिक जीवन :

गुरु के सप्तम अर्थात् जीवनसाथी के भाव में स्थित होने के कारण आपके जीवन साथी आपके सहयोगी होंगे और व्यवसाय में आपकी सहायता करेंगे। आपके जीवन साथी का व्यक्तित्त्व आकर्षक होगा। आपके बच्चे आज्ञाकारी होंगे और आपका पारिवारिक जीवन उन्नतिशील होगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

गुरु का आपके व्यक्तित्व पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा और आप संत की तरह धार्मिक

होंगे तथा शिक्षित व्यक्ति की तरह ज्ञान की खोज में अपनी पसंन्द के कारण अध्ययन से जुड़े रहेंगे।

दशा विश्लेषण

Sahil Sabnis

महादशा :- सूर्य
(11/10/2033 - 11/10/2039)

सूर्य की महादशा 11/10/2033 को आरंभ और 11/10/2039 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 6 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य एकादश भाव में अवस्थित है। सूर्य सम्पत्ति, स्वास्थ्य, प्रभाव तथा प्रतिष्ठा का प्रतिनिधित्व करता है जबकि एकादश भाव सभी प्रकार के लाभ, मनोकामनाओं की पूर्ति, शिक्षा तथा भौतिक सुखों का सूचक है। अतः इस दशा-काल में आपको धन, प्रभावशाली मित्रों, पद तथा अधिकार की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप में रोगों की प्रतिरोध शक्ति होगी। स्वास्थ्य उत्तम रखने के लिए आपको सात्विक और सन्तुलित भोजन करना चाहिए। आप सरदर्द और हृदयगति की पीड़ा से ग्रसित हो सकते हैं। आपको अतिशयता का परित्याग करना चाहिए और जीवन के प्रति आपकी सोच सकारात्मक होनी चाहिए ताकि इस दशा में आपका स्वास्थ्य उत्तम रह सके।

अर्थ :

आप भाग्यशाली होंगे और आपको पर्याप्त आर्थिक संसाधन प्राप्त होंगे। आपको सट्टे तथा निवेश से लाभ मिलेगा। पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति भी हो सकती है। आपको पिता से लाभ की प्राप्ति हो सकती है। आप अधिक प्रयास किये बगैर आर्थिक लाभ प्राप्त करेंगे। दशा ज्यों-ज्यों प्रगति करेगी त्यों-ज्यों आपकी आर्थिक स्थिति सुधरती जाएगी। किन्तु, आपको फिजूलखर्ची के प्रति सावधान रहना चाहिए क्योंकि आप स्वभाव से उदार हैं।

व्यवसाय :

आपको आपके सभी कार्यों में सफलता और लाभ मिलेंगे। आपको अधिक परिश्रम किये बगैर सफलता मिलेगी। आप सरकारी सेवा में अच्छा करेंगे। आप बड़ी संस्थाओं, निगमों और संस्थानों में प्रबंधक के पद के लिये सर्वाधिक योग्य है। संगठन से सम्बद्ध कोई भी कार्य आपके अनुकूल होगा। रत्नों का व्यवसाय अथवा सम्पत्ति की परिरक्षा का कार्य लाभदायक होगा। नौकरी पेशा लोगों के कार्य-स्थान में वातावरण सौहार्द्रपूर्ण रहेगा, उन्हें अधीनस्थ कर्मचारियों से सहयोग तथा उच्चधिकारियों के अनुग्रह की प्राप्ति होगी। व्यवसायियों को स्व-प्रयास से धन तथा लाभ की प्राप्ति होगी। रत्न-आभूषण, धातु तथा बिजली के सामानों आदि के व्यापारियों के लिये यह दशा लाभदायक होगी।

परिवार :

आपका बच्चों से गहरा लगाव है। आपको उनसे अत्यधिक सुख मिलेगा। इस दशा-काल में आप उनके ऊपर बड़ी सीमा तक निर्भर करेंगे। आपके जीवन साथी के साथ

आपके सम्बन्ध बहुत मधुर होंगे। आपके जीवन साथी को सभी प्रकार के लाभ प्राप्त होंगे और उनका भाग्योदय होगा। आपकी माता को किसी अप्रत्याशित धन की प्राप्ति और धर्मशास्त्रों में उनकी रूचि हो सकती है। आपके पिता स्वयं धनोपार्जन करेंगे, प्रसन्न रहेंगे और छोटी यात्राओं पर जाएंगे। आपके भाई-बहनों के लिये यह समय समृद्धिशाली रहेगा और आपके साथ उनके संबंध मधुर रहेंगे।

शिक्षा :

आपका अध्ययन उत्तम होगा और आप भौतिकी, ललित कला आदि में श्रेष्ठता प्राप्त करेंगे। प्रशासकीय पाठ्यक्रमों और राजनीतिक इतिहास में आपकी रूचि होगी।

Ms.

महादशा :- शनि
(30/06/2041 - 29/06/2060)

शनि की महादशा की अवधि 19 वर्ष है। आपकी जन्कुण्डली में यह 30/06/2041 को आरम्भ और 29/06/2060 को समाप्त होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि चौथै भाव में स्थित है। यह एक अशुभ ग्रह है। यह विलम्ब और बाधक ग्रह के रूप में जाना जाता है, किन्तु अन्ततः फल देता है। यह फल की प्राप्ति के लिए जातक को कठिन परिश्रम के हेतु प्रेरित कर उसके धर्य की परीक्षा लेता है। आपकी जन्मकुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि छठे, दसवें और प्रथम भाव पर है। चतुर्थ भाव, जिसमें यह स्थित है, जन्म स्थान, मनोरंजन, रोमान्स, धार्मिक प्रवृत्ति तथा आध्यात्मिक कार्य का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

चतुर्थ भाव में स्थित महादशा स्वामी शनि अपने भाव अर्थात् 'सुखस्थान' को शक्ति प्रदान कर रहा है। इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और कोई बीमारी नहीं होगी।

धन-सम्पत्ति :

मातृ भूमि, मकान और माता के द्योतक चतुर्थ भाव में स्थित शनि के कारण आपको घर का सारा सुख मिलेगा। इस दशा के दौरान आप अपना नया मकान तथा नयी गाड़ी खरीद सकते हैं।

व्यवसाय :

व्यावसायिक स्तर पर आपकी स्थिति अत्यंत सुदृढ़ होगी क्योंकि चौथे भाव में स्थित बली और योगकारक शनि की कार्य-व्यवसाय के दसवें भाव पर दृष्टि है। आप एक सरकारी सलाहकार अथवा मंत्री या उपदेशक हो सकते हैं। आप धनी, प्रतिष्ठित, सुखी और ऐन्द्रिय सुखों के प्रति आकर्षित होंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन सुखी होगा और आप उसका आनन्द लेंगे। आपको हर प्रकार से आनन्द मिलेगा। आपके बच्चे कम किन्तु आज्ञाकारी होंगे। धार्मिक प्रवृत्ति के होने के बावजूद आप इस दशा के दौरान पारिवारिक जीवन का आनन्द लेंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

शिक्षा, ज्ञान तथा साहित्यिक वृत्ति के विकास के लिए अत्यन्त अनुकूल है।

Sahil Sabnis

महादशा :- चन्द्र
(11/10/2039 - 11/10/2049)

चन्द्र की महादशा की अवधि दस वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह दशा 11/10/2039 को आरम्भ और 11/10/2049 को समाप्त होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में चन्द्र द्वितीय भाव में अवस्थित है और द्वितीय भाव सम्पत्ति, लाभ, शक्ति और संसाधन, मूल्यवान वस्तुओं की प्राप्ति, बॉण्ड, शेयर, दायीं आँख, कल्पनाशक्ति, जीभ, दाँत तथा पारिवारिक सदस्यों का सूचक है। वर्षो की यह अवधि आपके लिए सुख और सम्पत्ति की दृष्टि से उत्तम होगी।

स्वास्थ्य :

चन्द्र कर्क में अवस्थित है जो उसका अपना भाव है। इसलिए इस अवधि में आपके स्वास्थ्य से सम्बन्धित कोई अनपेक्षित प्रतिकूल घटना नहीं घटेगी और न ही कोई समस्या अथवा दुर्घटना होगी। आप स्वयं को शक्तिशाली अनुभव करेंगे और अपने कार्यो को सुंदर ढंग से पूरा करने में समर्थ होंगे।

अर्थ और सम्पत्ति :

चन्द्र द्वितीय भाव में अवस्थित है जो धन और आर्थिक मामलों का भाव है। चन्द्र की इस स्थिति के कारण आपकी सम्पत्ति और बैंक बैलेंस में वृद्धि होगी। दस वर्षो की इस अवधि में आप बहुत अधिक धनोपार्जन करेंगे और और अपने बैंक बैलेंस में वृद्धि करेंगे। इस दशा में धनोपार्जन और चल-अचल सम्पत्तियों में वृद्धि की संभावनाएं हैं जिससे आगे भी बहुमुखी वृद्धि होगी। स्त्री वर्ग से धन की प्राप्ति होगी। आपकी आर्थिक स्थिति परिवर्तनशील होगी।

व्यवसाय :

चन्द्र दशा की अवधि में आप अपनी स्थिति और कार्य से संतुष्ट होंगे।

अगर आप सेवा में हैं तो आपकी उच्च पद पर पदोन्नति होगी और यदि व्यवसाय में हैं तो व्यवसाय के विस्तार व नये कार्य मिलने के संकेत हैं। नये रचनात्मक विचार आप के मस्तिष्क में उभरेंगे जिसकी आपके सहकर्मी और उच्चाधिकारी सराहना करेंगे और ऐसे कार्य जीवन में आगे बढ़ने में सहायक होंगे। वास्तव में चन्द्र आपके व्यवसाय में आपकी स्थिति सुदृढ़ करेगा।

पारिवारिक जीवन :

चंद्र के मस्तिष्क और माता का कारक होने के कारण आपको सुख, प्रतिष्ठा और उत्तम पारिवारिक जीवन की प्राप्ति होगी। खासकर आपकी माता आपके दैनिक जीवन में

अत्यधिक सहायक होंगी। पिता भी आपकी सहायता करेंगे। बच्चे आज्ञाकारी होंगे और परिवार में वातावरण सामान्यतया सौहार्द्रपूर्ण रहेगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

आपको शिक्षा की प्रेरणा मिलेगी और पुराणों अथवा ज्योतिष शास्त्र के अध्ययन में आपकी रुचि बढ़ेगी।

Ms.

महादशा :- बुध
(29/06/2060 - 30/06/2077)

बुध की महादशा 29/06/2060 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 30/06/2077 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध छठे भाव में स्थित है। बुध की दृष्टि बारहवें भाव पर हैं। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि की दशा चल रही थी। प्रथम तथा द्वितीय भाव स्वामी शनि के फलस्वरूप आपको यश, ख्याति, कार्यों में सफलता, उत्तम स्वास्थ्य तथा सम्पत्ति की प्राप्ति हुई होगी। बुध की वर्तमान दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, विरोधियों पर विजय तथा नौकरी में लाभ मिलेगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप सक्रिय, अशावादी और स्फूर्तिवान होंगे। फिर भी मौसम में परिवर्तन के कारण संक्रामक बीमारी, त्वचारोग, स्नायविक समस्या तथा उदर रोग आदि मामूली बीमारियाँ हो सकती हैं। उचित उपाय के द्वारा इनमें से बहुतों पर नियंत्रण किया जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। आपको सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी किन्तु कभी-कभी बाधाएं भी आ सकती हैं। किन्तु, आप इन्हें दूर कर लेंगे और आपका उपार्जन उत्तम होगा। कुछ व्यय भी हो सकता है। आपकी नौकरी से अच्छा उपार्जन होगा। सट्टे से उत्तम लाभ होगा। कुल मिलाकर आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। जीविका के लिए लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण, कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग और मस्तिष्क से सम्बन्धित सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। रत्न, पुस्तक, लेखन-सामग्री, कम्प्यूटर तथा हस्तनिर्मित वस्तु का व्यापार लाभदायक होगा। नौकरीपेशा लोगों की कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल होगी, उन्हें सफलता मिलेगी और पदोन्नति तथा आय में वृद्धि होगी। अधीनस्थ कर्मचारी सहायता करेंगे। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को भी आय तथा लाभ होगा, व्यवसाय में विस्तार होगा, विदेश से लाभ होगा तथा कार्य में वृद्धि होगी। अर्थ-व्यवसाय में उन्नति के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा जमीन-जायदाद :

इस दशा में आपको आराम मिलेगा। आपको सम्पत्ति तथा वाहन-सुख की प्राप्ति होगी। आप जमीन-जायदाद की खरीद बिक्री करेंगे। कोई कानूनी विवाद यदि हो भी तो आपको

सफलता मिलेगी। गुरु की अन्तर्दशा में आपकी यात्रा होगी। विदेश यात्रा लाभदायक सिद्ध होगी।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा लाभदायक होगी। आप बहुत अच्छा करेंगे तथा परीक्षाओं और प्रतियोगिताओं में सफल होंगे। लेखा, वाणिज्य, साहित्य, कम्प्यूटर विज्ञान रचनात्मक पत्रकारिता, शिक्षा तथा शैक्षिक सेवाओं में आपकी रुचि होगी। आप प्रतिभावान, कूटनीतिक और बहुमुखी होंगे तथा विभिन्न विषयों में आपकी रुचि होगी। आपका मस्तिष्क बौद्धिक तथा विश्लेषणात्मक है और आप सभी बौद्धिक कार्यों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपको अपने बच्चों से सुख तथा लाभ मिलेगा। आपके जीवन साथी का अच्छे कार्यों में व्यय होगा, उन्हें जीविकोपार्जन के अवसर प्राप्त होंगे और विरोधियों पर विजय मिलेगी। आपके जीवनसाथी के साथ संबंध मधुर रहेंगे। आपकी माता की छोटी यात्रा होगी और सम्बन्धियों से सहायता मिलेगी जबकि आपके पिता को सम्पत्ति, यश और ख्याति मिलेगी तथा उनकी आध्यात्मिक कार्यों में रुचि होगी। आपके छोटे भाई-बहनों की शिक्षा उत्तम होगी, माता के साथ उनका सम्बन्ध मधुर होगा और उनके अनेक मित्र होंगे जबकि बड़े भाई-बहनों का स्वास्थ्य उत्तम होगा, उनके कार्यों में परिवर्तन और अचानक लाभ होगा। उनके साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। इस दशा के दौरान आपको ननिहाल से लाभ, सफलता, उत्तम सम्मान तथा शासन से लाभ मिलेगा।

अन्तर्दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के दौरान कार्य-क्षेत्र में स्थिति आपके अनुकूल रहेगी, आपकी पदोन्नति होगी और लाभ मिलेगा। केतु कठिनाई उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में आपको सफलता, यश और ख्याति मिलेगी। सूर्य की अन्तर्दशा के फलस्वरूप कुछ परिवर्तन हो सकता है। चन्द्र दशा में आपका विवाह और साझेदारों से लाभ हो सकता है। मंगल की अन्तर्दशा के दौरान जमीन-जायदाद, सम्पत्ति तथा लाभ मिल सकता है। इसके बाद राहु की दशा में कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान आपकी यात्रा हो सकती है और रिश्तेदारों से सहायता मिल सकती है जबकि शनि की अन्तर्दशा में सफलता, यश और ख्याति मिलेगी और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

Sahil Sabnis

एस्ट्रोग्राफ – 2026

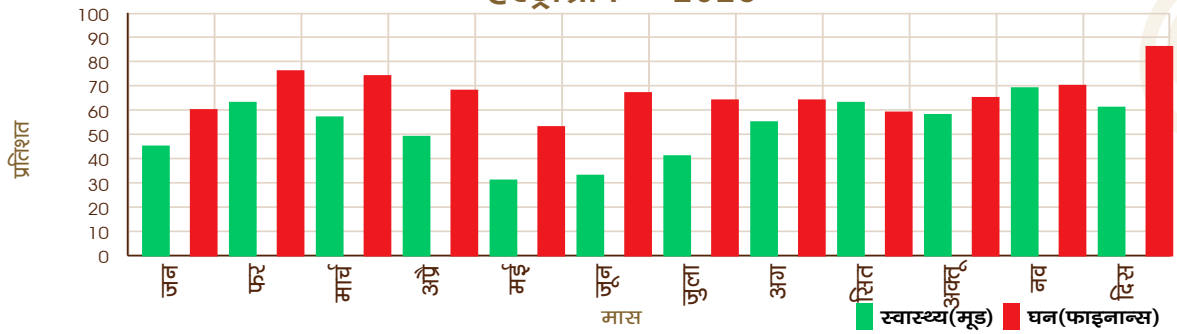

Ms.

एस्ट्रोग्राफ – 2026

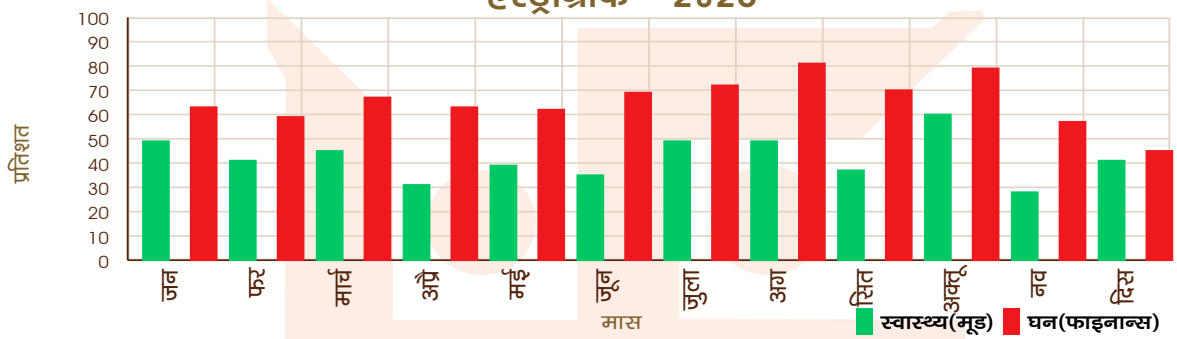

Sahil Sabnis

एस्ट्रोग्राफ – 2027

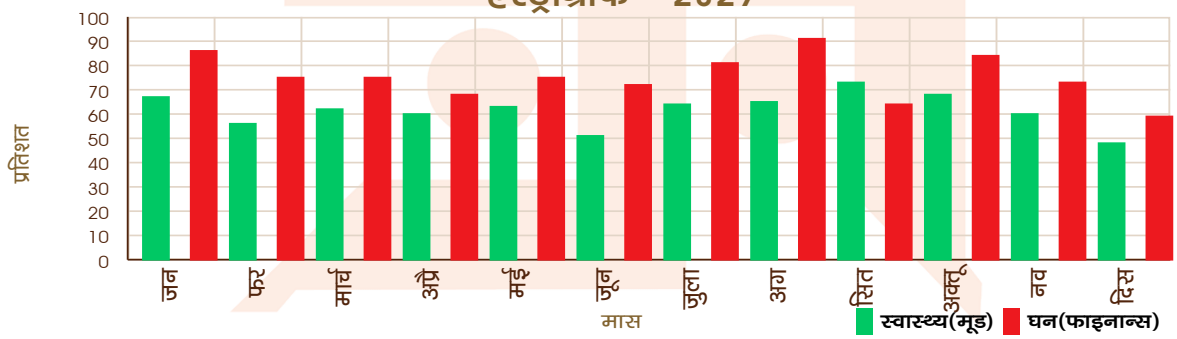

Ms.

एस्ट्रोग्राफ – 2027

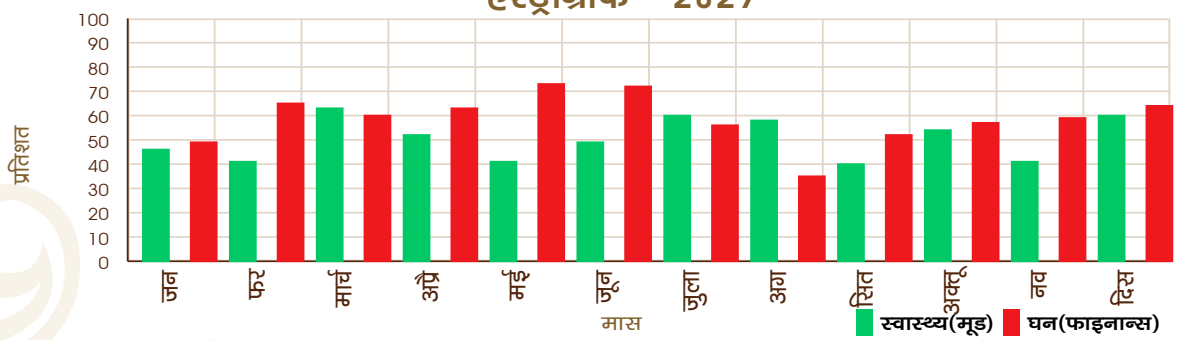

Sahil Sabnis

एस्ट्रोग्राफ – 2028

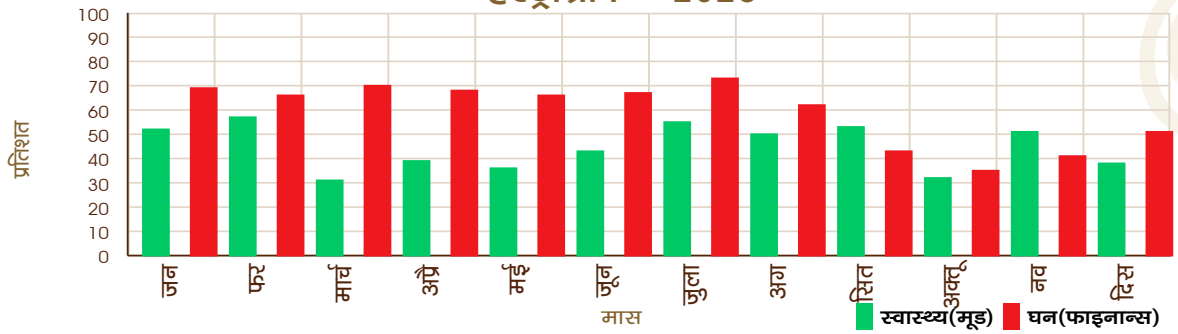

Ms.

एस्ट्रोग्राफ – 2028

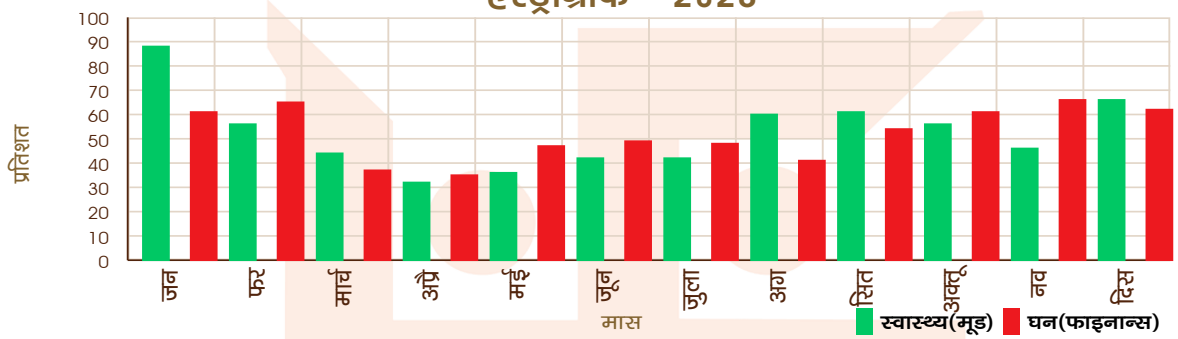

Sahil Sabnis

एस्ट्रोग्राफ – 2029

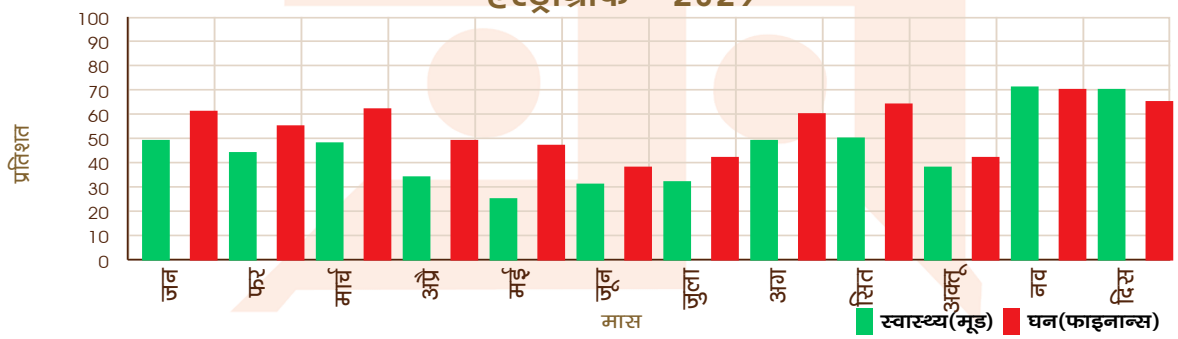

Ms.

एस्ट्रोग्राफ – 2029

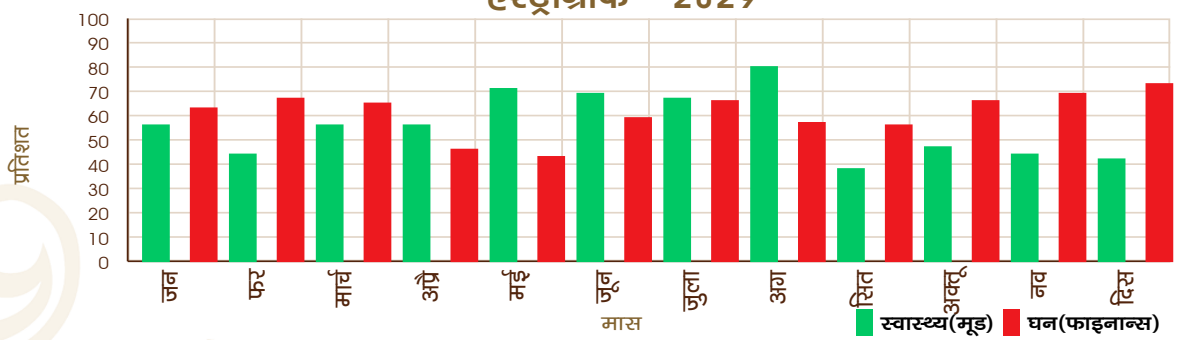

Sahil Sabnis

एस्ट्रोग्राफ – 2030

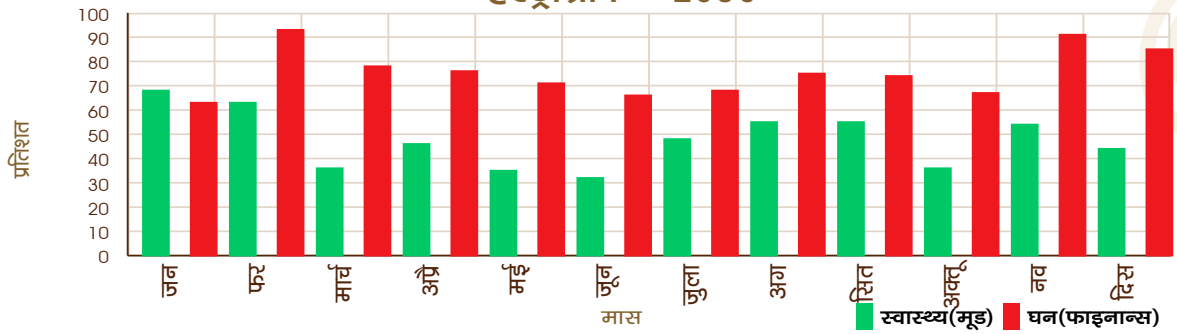

Ms.

एस्ट्रोग्राफ – 2030

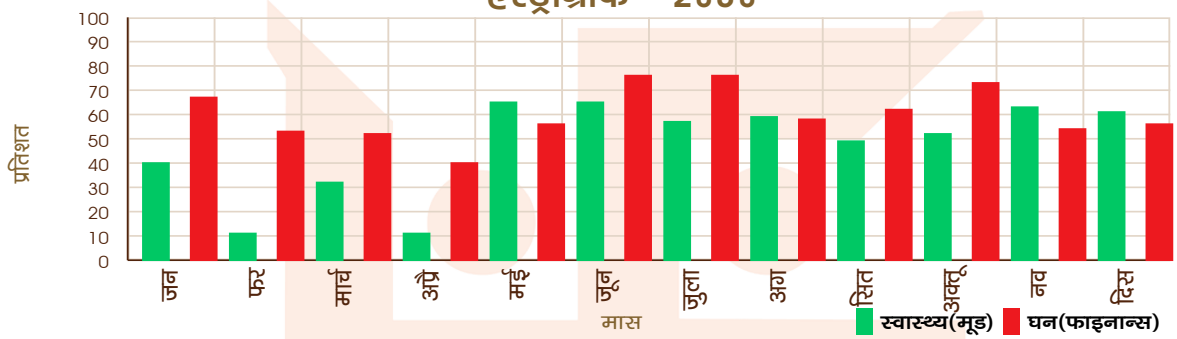

Sahil Sabnis

एस्ट्रोग्राफ – 2031

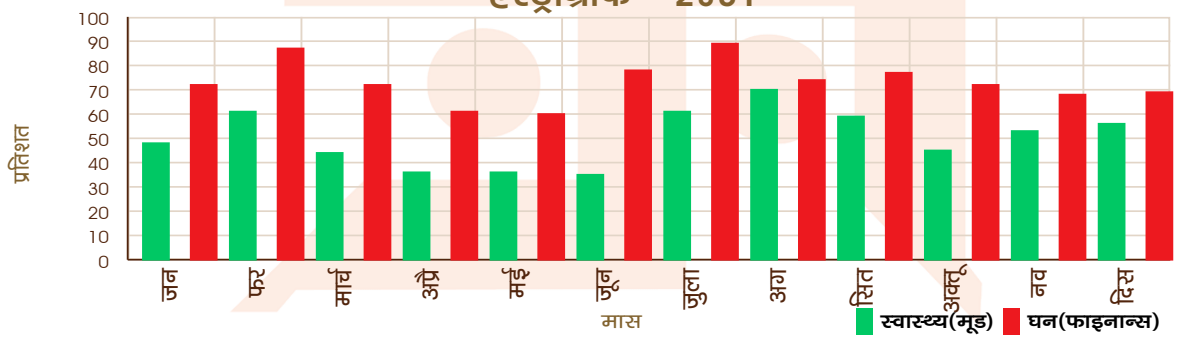

Ms.

एस्ट्रोग्राफ – 2031

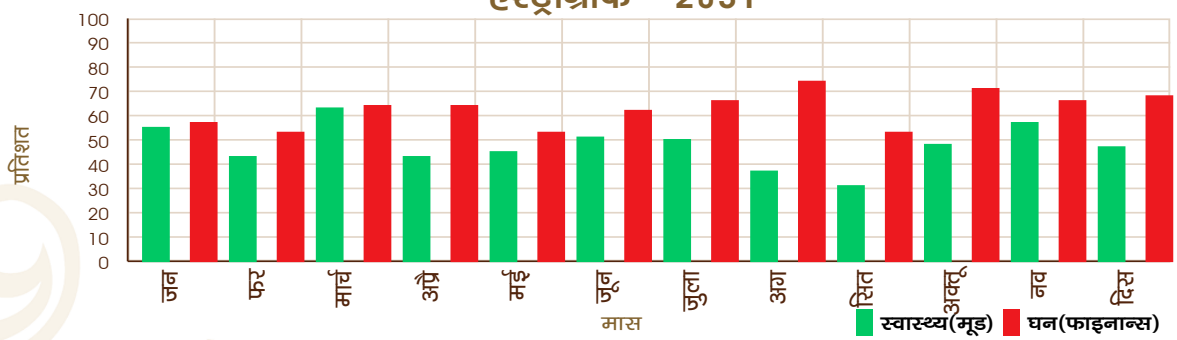

Sahil Sabnis

एस्ट्रोग्राफ – 2032

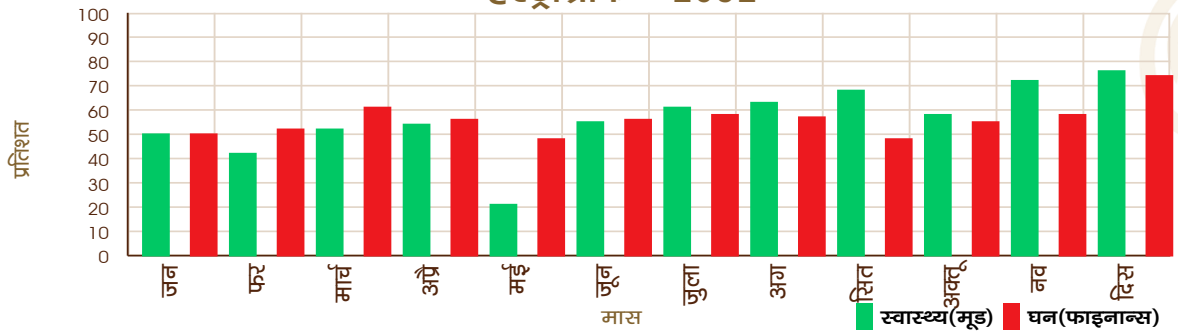

Ms.

एस्ट्रोग्राफ – 2032

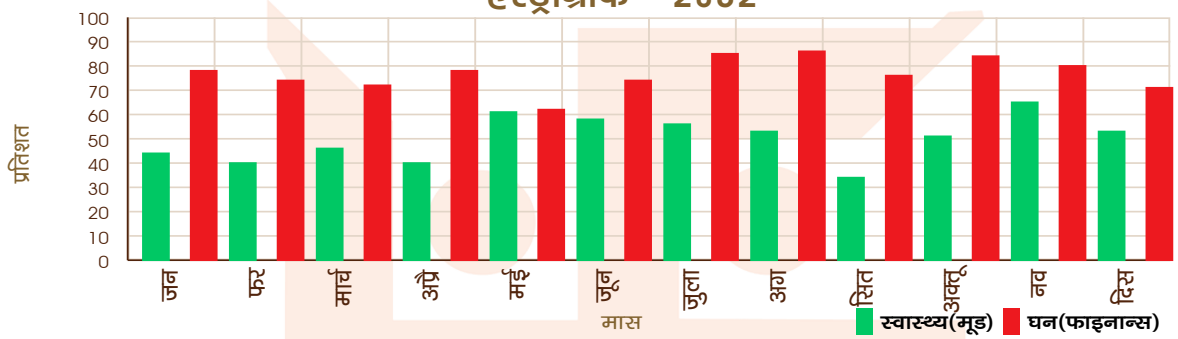

Sahil Sabnis

एस्ट्रोग्राफ – 2033

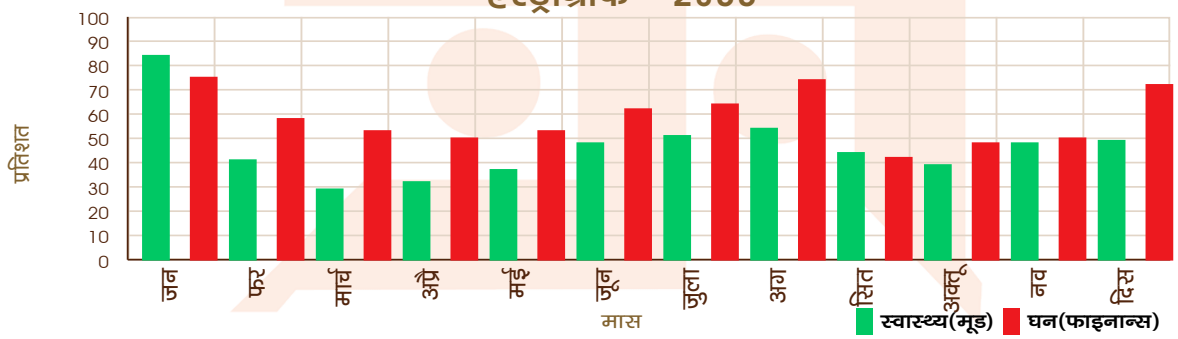

Ms.

एस्ट्रोग्राफ – 2033

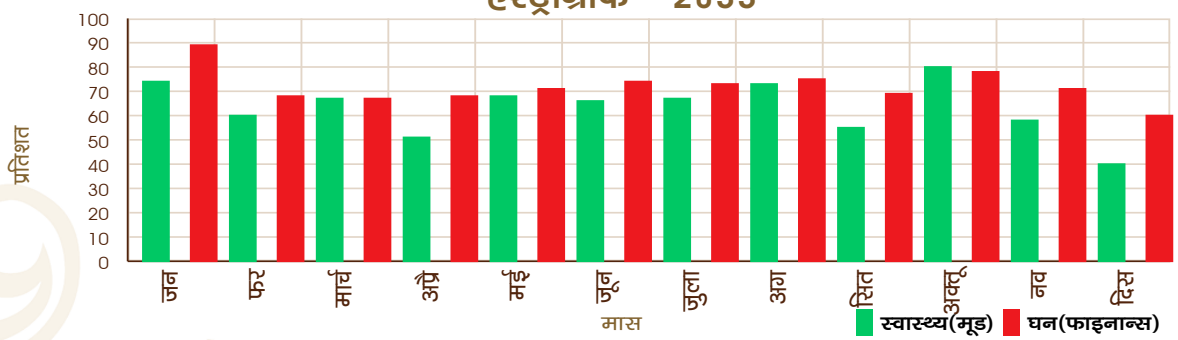

Sahil Sabnis

एस्ट्रोग्राफ – 2034

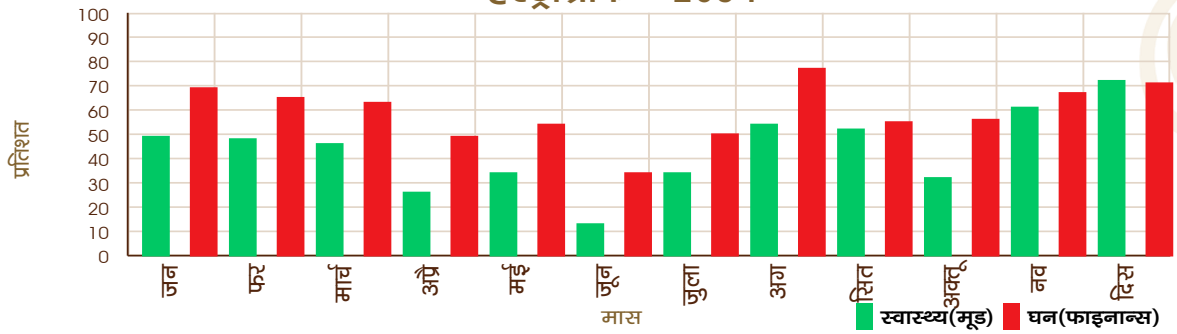

Ms.

एस्ट्रोग्राफ – 2034

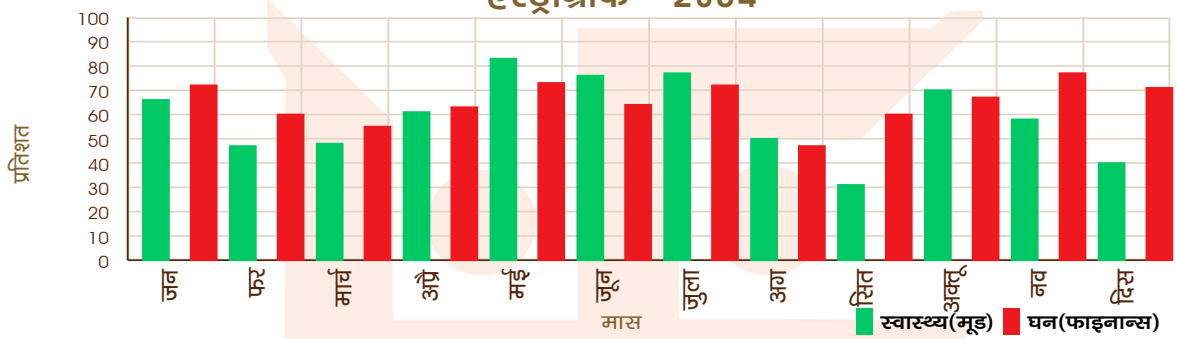

Sahil Sabnis

एस्ट्रोग्राफ – 2035

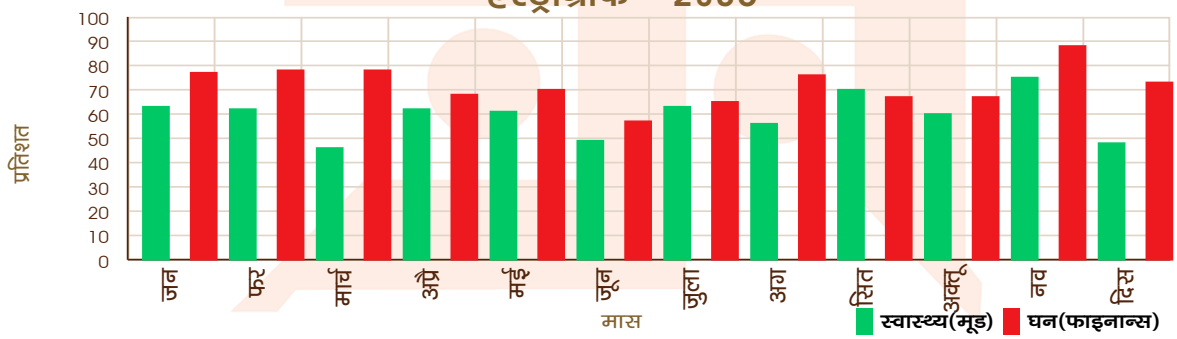

Ms.

एस्ट्रोग्राफ – 2035

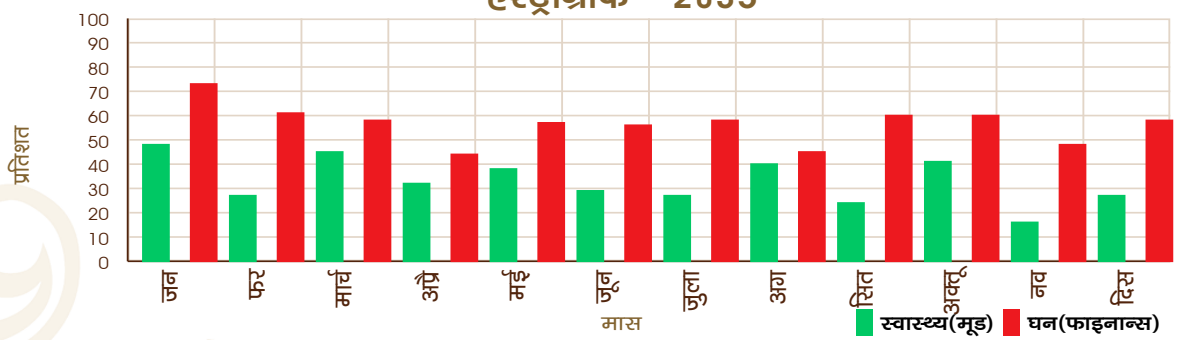

Sahil Sabnis

एस्ट्रोग्राफ – 2036

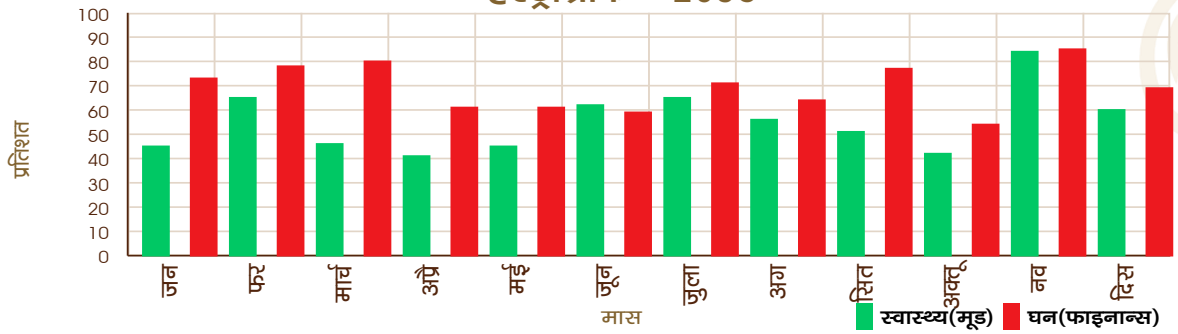

Ms.

एस्ट्रोग्राफ – 2036

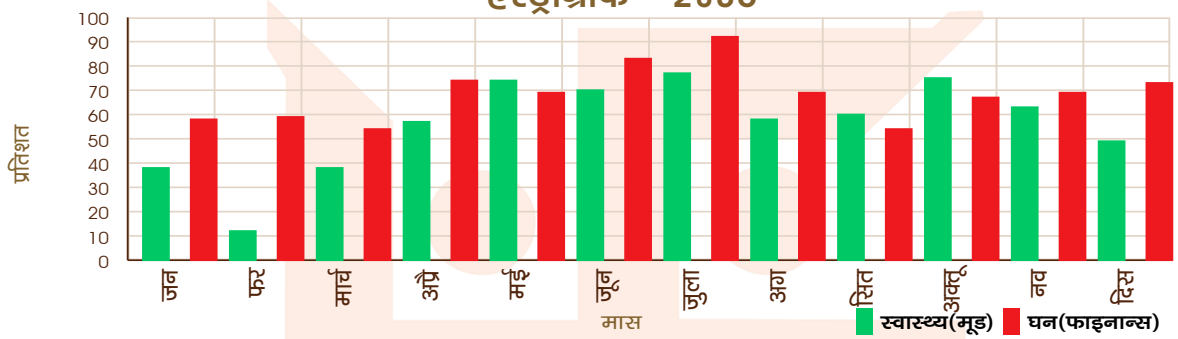

Sahil Sabnis

एस्ट्रोग्राफ – 2037

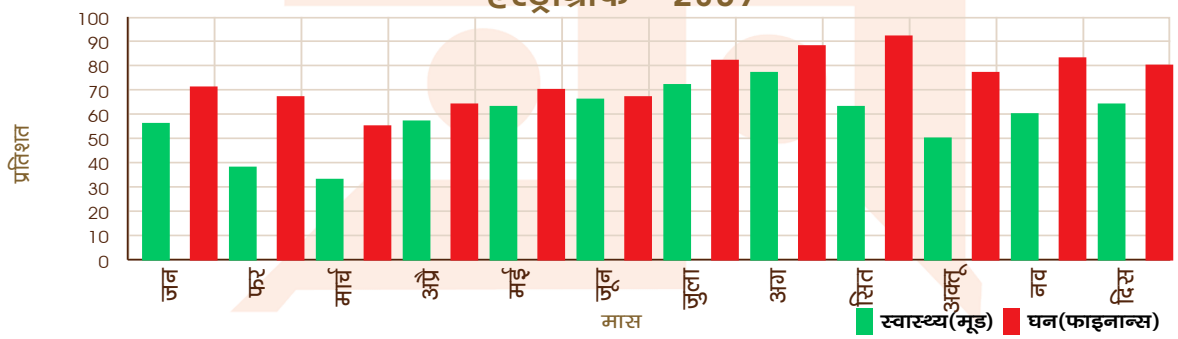

Ms.

एस्ट्रोग्राफ – 2037